मेरी भक्ति-गुरु की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

शाबर मन्त्र-संग्रह

भाग-१०

मेरी भक्ति-गुरु की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
इलाहाबाद-२११००६

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

शाबर मन्त्र-संग्रह

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

(दसवाँ भाग)

आदि-सम्पादक
'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल
सम्पादक
ऋतशील शर्मा

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

दूरभाष (०५३२)२५०२७८३
मोबाइल : ९४५०२२२७६७

सर्वाधिकार सुरक्षित

चौथा संस्सकरण
गुप्त नवरात्र, सं० २०६९ वि०
(२० जून, २०१२)

मूल्य : ७५-००

मुद्रक :
परा-वाणी प्रेस
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

अनुक्रम

दो शब्द ... २

१ उन्नति हेतु शाबर मन्त्र-यन्त्र ... १०

❀ श्री गोपाललाल बिस्सा, बीकानेर (राजस्थान)

२ दुर्लभ शाबर यन्त्र-मन्त्र ... ११

❀ श्री भूपेन्द्रदत्त शर्मा, नदी मार्ग, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)

[१ मोहिनी टीका, २ एक विचित्र प्रयोग, ३ शत्रु को पीड़ित करने का यन्त्र, ४ भूत - प्रेत - नाशक यन्त्र, ५ चक्र-व्यूह-यन्त्र]

३ शाबर-मन्त्र ... १५

❀ डा० वसन्त पाण्डुरङ्ग पराञ्जपे, पुणे (महा-राष्ट्र)

[१ नजर का मन्त्र, २ वृश्चिक-दंश का मन्त्र, ३ सूजन निवारक मन्त्र, ४ आधा सीसी निवारक मन्त्र]

४ जिज्ञासा : समाधान ... १७

५ 'शाबर'-शब्द का अर्थ ... ३०

६ श्रीहनुमान के शाबर मन्त्र ... ३१

❀ श्री बलराम बली, मानकनगर, लखनऊ (उ. प्र.)

[१ शिर पीड़ा दूर करने के लिए, २ आधा सीसी दूर करने के लिए, ३ नेत्र- रोग - शमन के लिए, ४ कर्ण-मूल की पीड़ा दूर करने के लिए, ५ बिच्छू का विष उतारने के लिए, ६ अण्ड - वृद्धि दूर करने के लिए, ७ भूत - प्रेत - बाधा दूर करने के लिए, ८ चूहे दूर करने के लिए, ९ सुअर और चूहा दूर करने के लिए, १० शरीर-रक्षा के लिए, ११ अर्श-रोग निवारण के लिए, १२ पीलिया-रोग निवारण के लिए, १३ दाँत का कीड़ा झारने के लिए, १५ नेत्र-रोग-शमन के लिए, १५ अग्नि-बन्ध करने का मन्त्र, १६ प्रेत - बाधा - निवारण लिए, १७ विष-निवारण, १८ शत्रु-सङ्कट-निवारण]

७ भूल-सुधार एवं शब्दार्थ (शाबर भाग ६) ३७

❀ श्री आर. के. कुमार, कोरबा (म. प्र.)

८ अनुभूत मन्त्र-प्रयोग ... ३८

❀ श्री जयपाल सिंह, कचहरी मार्ग, बुलन्दशहर (उ. प्र.)

[१ हनुमान जी के 'वीर' की साधना, २ वशीकरण-प्रयोग, ३ रक्षा-प्रयोग, ४ मोहिनी-प्रयोग, ५ सर्व-कार्य-सिद्धि जञ्जीरा-मन्त्र]

९ प्रचलित शाबर मन्त्र ... ४४

❀ 'कुल-वाणी-रत्न' पं. रामशङ्कर उपाध्याय, बक्सर (बिहार)

[१ आसन - बन्धन, २ लाठी या शस्त्र - बन्धन, ३ टोना-निवारण, ४ भूत - टोना या आकस्मिक रोगोत्पात - निवारक मन्त्र, ५ रोक-शोक, जादू-टोना-निवारक मन्त्र, ६ कहीं से कोई वस्तु मँगाने का मन्त्र, कुछ टोटके]

१० सिद्ध जञ्जीरा मन्त्र ... ४७

❀ श्री प्रदीपकुमार नन्दगोपाल व्यास, डीडवाना (राज.)

[१ भूत-प्रेत-बाधा-नाशक मन्त्र, २ गड़ा धन प्राप्त करने का मन्त्र, ३ डाकिनी, सीमारी, भूत-प्रेत-बाधा-निवारक हनुमान मन्त्र, ४ पेट-पीड़ा-नाशक मन्त्र]

११ चार शाबर मन्त्र ... ५१

❀ श्री रामकृष्ण शर्मा, वीरसिंहपुर, सतना (म. प्र.)

[१ सर्व - व्याधि - विनाशन मन्त्र, २ महा-काली बाँध मन्त्र, ३ हनुमान बाँध मन्त्र, ४ हनुमान जी का शत्रु-नाशक मन्त्र]

१२ प्रेत-जागृति अथवा श्मशान-जागृति ... ५३

❀ श्री अनिल गोविन्द बोकील, हडपसर, पुणे (महा-राष्ट्र)

[१-२ प्रेत-जागृति व श्मशान-जागृति, ३ श्मशान-धक्का-निवारण मन्त्र, ४ प्रेत गिराने का मन्त्र]

१३ पशु-सम्बन्धी शाबर व टोटका ... ५७

१४ कुछ नाथ-पन्थी अस्त्र-विधान ... ५६

[१ श्रीसुदर्शन - चक्र - मन्त्र, २ श्रीमहा-पाशुपतास्त्र, ३ ब्रह्मास्त्र, ४ यमास्त्र, ५ आग्नेयास्त्र]

१५ नाथ-पन्थीय शक्ति-साधना ... ६१

१६ शङ्ख-पुष्पी अनुभूत शाबर मन्त्र ... ६४

❀ श्री श्रवणकुमार सोनी, अलीगढ़, जि. टोंक (राज.)

१७ सिद्ध कामाख्या मन्त्र-प्रयोग ... ६५

❀ श्री महावीर पोद्दार, दुमका (बिहार)

[१ उच्चाटन, २-४ आकर्षण, ५ शत्रु-हन्ता-प्रयोग, ६ शान्ति-प्रकरण]

१८ पाठकों के पत्र व अनुरोध ... ७०

१९ अनुभूत सिद्ध शाबर मन्त्र ... ७१

❀ श्री रामकृष्ण कुमार, कोरबा (म. प्र.)

[१ शाबर भैरव - साधना, २ मोहम्मद पीर की साधना, ३ कटोरी चलाना, ४ दाँतों की पीड़ा, ५ नेत्र - पीड़ा दूर करने का मन्त्र, ६ दाढ़-पीड़ा का निवारक मन्त्र, ७ आकर्षण, वशीकरण के प्रबल सूर्य-मन्त्र, ८ कर्ण-पिशाचिनी-साधना]

२० छत्तीसगढ़ के अनुभूत शाबर मन्त्र ... ७७

[१ नजर, पीड़ा, बुखार झारने का मन्त्र, २ टोना झारने का मन्त्र, ३ मूठ लौटाने का मन्त्र, ४ मसान भगाने का मन्त्र, ५ भूत-प्रेत भगाने का मन्त्र, ६ टोना बाँधने का मन्त्र, ७ बान झारने का मन्त्र, ८ खाट-पलँग बाँधने का मन्त्र, ९ चोट, मोच, दर्द दूर करने का मन्त्र, १० बिच्छू जहर झारने का मन्त्र, ११ दाँत - दर्द दूर करने का मन्त्र, १२ बजरङ्ग वशीकरण शाबर मन्त्र]

२१ स्वतः सिद्ध शाबर-प्रयोग ... ८३
[१ भूत-प्रेत-निवारण, २ शत्रु-दमन - प्रयोग - यन्त्र, ३ वशीकरण-मन्त्र-यन्त्र, ४ शिर-दर्द अधः कपारी झारने का मन्त्र]
२२ शाबर-मन्त्र-साधना में गुरु-तत्त्व ... ८६
[१ नव-नाथ-स्मरण, २ नव-नाथ-स्तुति, ३ नव-नाथ शाबर-मन्त्र]
२३ जिज्ञासा और समाधान ... ८८
२४ एक दुर्लभ पाण्डु-लिपि ... ९२
❀ श्री भूपेन्द्रदत्त शर्मा, नदी मार्ग, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)
[१ आकर्षण - मन्त्र, २ फुलै - रोग - नाशक मन्त्र, ३ बुध भैरो मन्त्र, ४ मोहिनी सिन्दूर मन्त्र, ५ आकर्षण-मन्त्र, ६ रोग-नाशक मन्त्र]
२५ छत्तीसगढ़ के अन्य शाबर मन्त्र ... ९५
[१ जञ्जीरा-नाम-मन्त्र, २ चेचक (माता) के बोल, ३ माता के बोल (परवाना देना), ४ चरन पखारने के बोल, ५ माता आरती के बोल, ६ जल मतरने का मन्त्र, ७ मसान भगाने का मन्त्र, ८ नजर-टोना बाँधना, ९ अभिचार-कर्म लौटाने का मन्त्र, १० जादू - टोना उतारने का मन्त्र, ११ देह बाँधने का मन्त्र, १२ गर्भावली मन्त्र, १३ गर्भ-रक्षा-मन्त्र, १४ सुख-प्रसव-मन्त्र, १५ आसन बाँधने का मन्त्र, १६ वशीकरण का शैतानी मन्त्र, १७ धूल का वशीकरण, १८ कार्य-सिद्धि हेतु गणेश शाबर मन्त्र, १९ हाजरात 'मेरु'-मन्त्र-सिद्धि, २० भूत - मसान भगाने का हनुमान-जँजीरा]
२६ मुस्लिम सिद्ध शाबर मन्त्र ... १०६
[१ पेट-दर्द या बाय-गोले का मन्त्र, २ नजर, पेट-दर्द, सिर-दर्द मिटाने का मन्त्र, ३ भय, ४ यात्रा-भय दूर करने का मन्त्र, ५ वशीकरण मन्त्र]

२७ अनुभूत शाबर-मन्त्र ... १०८
※ डा० ओमप्रकाश भारद्वाज, कर्मपुरा, नई दिल्ली
[१ मन्त्र में अक्षर या पंक्ति छूटने का दोष-निवारण, २ बाय का मन्त्र, ३ टूटे अङ्ग पर तेल का मन्त्र, ४ धन - प्राप्ति का मन्त्र, ५ देह - रक्षा का मन्त्र, ६ कामना-सिद्धि का मन्त्र, ७ ज्वाला माई का मन्त्र, ८ परी हाजिर करने का मन्त्र, ९ बवासीर का मन्त्र, १० धरन ठिकाने पर लाने का मन्त्र, ११ शत्रु को परास्त करने का मन्त्र, १२ वशीकरण हेतु कामदेव-मन्त्र, १३ सर्व-कार्य-साधक मन्त्र, १४ अशुभ-नाशक यक्षिणी - मन्त्र, १५ गद्दी का मन्त्र, १६ वशीकरण मन्त्र—पान का, १७ मन - वचन की गति रोकने का मन्त्र, ११ मूठ लौटाने का मन्त्र, १९ देह बाँधने का मन्त्र, २० देह खोलने का मन्त्र, २१ हूक का मन्त्र, २२ गोरख प्रातः-स्मरण]
२८ पाँच शाबर-मन्त्र ... ११५
※ पं० प्रमोद भारद्वाज, धामपुर, बिजनौर (उ. प्र.)
[१ जिन्न बाबा से सर्व-कामना-पूर्ति, २ सर्व-कार्य-साधक मोहम्मद मौलाना, ३ हाजिरात का मन्त्र, ४ स्वप्न-सिद्धि, ५ मसान-सिद्धि का मन्त्र]
२९ सिद्ध शाबर मन्त्र ... ११९
※ पं० श्रीकान्त त्रिपाठी, मवैया, लखनऊ (उ. प्र.)
[१ हनुमान सुरक्षा - मन्त्र, २ काली का सुरक्षा-मन्त्र, ३ ज्वर उतारने-रोकने का मुस्लिम मन्त्र, ४ शत्रु-पीड़क शाबर मन्त्र, ५ आकर्षण हेतु हनुमद्-मन्त्र-यन्त्र, ६ भागे हुए व्यक्ति को बुलाने का टोटका]
३० शाबर मन्त्रों को सिद्ध कैसे करें ? ... १२१
※ डा० एच० एम० तिवारी, दतिया (म. प्र.)

३१ शाबर-प्रयोग ... १२२
❀ पं० राजेन्द्रकुमार अवस्थी, हिरणमगरी, उदयपुर (राज.)
[१ देह-रोग, २ रक्षा - मन्त्र; ३ राज - वशीकरण, ४ सर्वोपरि मन्त्र, ५ मोहन तिलक, ६ तिलक से पूर्व मोहन मन्त्र, ७ चले और थके नहीं, ८ शत्रु के घर में झगड़ा, ९ वशीकरण, १० पुतली का मन्त्र, ११ भूतादिक - दोष मिटाने का उतारा, १२ कड़ा-भूत-प्रेत का दोष मिटाने हेतु, १३ मूठी-निवारण-मन्त्र, १४ नजर दूर करने का मन्त्र]

३२ शाबर-मन्त्र-सर्वस्व ... १२७
❀ आचार्य अरुणकुमार मिश्र, मलसा, गाजीपुर (उ. प्र.)
[१ पीड़ित व्यक्ति की बाधा को जानने का मन्त्र, २-४ गृह-बन्धन-मन्त्र, ५ सकल रोग - दोष एवं 'बाण-मन्त्र' के दुष्प्रभाव को दूर करने का मन्त्र, ६ दोष पहिचानने का मन्त्र, ७ भूत-प्रेतादि झारने के लिए कांस बाँधने का मन्त्र, ८ भूत-प्रेतादि को बाँधकर थाली में रखने का मन्त्र, ९ भूत-प्रेत से ग्रस्त व्यक्ति से मन-चाहा कहलाने का मन्त्र, १० बीमार स्त्री को भूत - प्रेतादि या परी से छुड़ाने का मन्त्र, ११ बँधे हुए भूत को छुड़ाने का मन्त्र, १२ भूत बाँधने का मन्त्र, १३ श्मशान-साधना, १४ वर्तमान - भूत - भविष्य का कथन, १५ कान, सिर एवं अध-कपारी झाड़ने का मन्त्र, १६ अग्नि से जलने पर झारने का मन्त्र, १७ जाँघ से पैर तक की पीड़ा दूर करने का मन्त्र]

३३ दुर्लभ प्रयोग-संग्रह ... १३६
❀ श्री राजेन्द्रकुमार अवस्थी, हिरण्यमगरी, उदयपुर (राज)
[१ दुर्जन मनुष्य को वश में करना, २ कार्य में सफलता हेतु, ३ धन - प्राप्ति, ४ ऋण - मुक्ति, ५ वशीकरण, ६ शत्रु भगाने हेतु प्रयोग, ७ शत्रु को भ्रम में भ्रमण कराने का प्रयोग, ८ कवित्व-

शक्ति-प्राप्ति, ६ रक्षा-मन्त्र, १० मोहन, ११ वशीकरण, १२ बवासीर, १३ आकर्षण, १४ नेत्र-दर्द दूर करने का मन्त्र, १५ वशीकरण, १६ सफलता, लाभ, धन, पुत्र, अन्न - प्राप्ति, १७ सुख-सुविधा-प्राप्ति, १८ भोजन मँगवाने का मन्त्र, १९ मृत-वत्सा के पुत्र जीवित रखने का मन्त्र, २० सर्व ऐश्वर्य हेतु, २१ सुख प्रसव हेतु, २२ अधिक रज-स्राव हेतु, २३ हिचकी बन्द करने हेतु, २४ स्वप्न में उत्तर - प्राप्ति, २५ श्वास - रोग का निवारण, २६ देह-रक्षा, २७ शत्रु-स्तम्भन, २८ रक्त-गुञ्जा-कल्प, २९ चौकी मुहम्मद वीर की, ३० वशीकरण-मन्त्र, ३१ रक्षा-मन्त्र, ३२ मन्त्र-जञ्जीरा, ३३ पुत्तलिका मन्त्र, ३४ मोहिनी-मन्त्र, ३५ वशीकरण]

३४ असाध्य रोग-निवारक प्रयोग ... १४८

❀ श्री अनिल गोविन्द बोकील, हडपसर, पुणे (महा-राष्ट्र)

३५ परीक्षित शाबर-मन्त्र ... १५०

❀ श्री लाल सिंह, केदारपुर, गोपीगञ्ज, भदोही (उ. प्र.)

[१ शाबर-मेरु-मन्त्र, २ तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र जागृत करने का मन्त्र, ३ शरीर-बन्धन-मन्त्र, ४ प्रेत भगाने का मन्त्र, ५ प्रेत उतारने का मन्त्र, ६ गृह-बन्धन-मन्त्र, ७ बान वापस करने का मन्त्र, ८ प्रेत पलटने का काली कामाक्षा मन्त्र, ९ रक्षा-रेखा मन्त्र, १० वशीकरण मन्त्र, ११ विद्वेषण मन्त्र, १२ रक्त-बन्धन-मन्त्र, १३ दिशा-बन्धन मन्त्र, १४ बिच्छू का मन्त्र]

३६ भूत-बाधा-नाशक मन्त्र ... १५७

❀ श्री सन्तोषकुमार घुटके, नासिक (महा-राष्ट्र)

३७ कल्याणकारी शाबर मन्त्र ... १६०

❀ श्री गोपालाल बिस्सा, देशनोक, बीकानेर (राज०)

[१ इच्छित कार्य में सफलता-दायक शाबर-मन्त्र, २ अर्थ-लाभादि हेतु शाबर-मन्त्र]

• •

उन्नति हेतु शाबर मन्त्र-यन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री गोपाललाल बिस्सा

एस. बी. बी. जे. बैङ्क, देशनोक, बीकानेर (राजस्थान)

भवँर वीर ! तू चेला मेरा, खोल दुकान, कहा कर मेरा। उठे जो डण्डी, बिके जो माल, भँवर वीर ! सोखे नहीं जाय।

विधि : उक्त 'मन्त्र' बहुत प्रचलित है। इसके साथ 'यन्त्र' का भी निर्माण किया जाता है, जो नीचे अङ्कित है। इसे लाल स्याही अथवा लाल चन्दन से लिखना है। बीच में सम्बन्धित व्यक्ति का नाम लिखे। तिल्ली के तेल में बत्ती बनाकर 'दीपक' जलाए। १०८ बार मन्त्र जपने तक यह 'दीपक' जलता रहे। इस प्रयोग से व्यापार, खेती अथवा किसी भी कार्य में उन्नति होती है। रविवार के दिन काले उड़द के दानों पर सिन्दूर लगाकर उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित करे। फिर उन्हें दूकान में बिखेर दे, तो बिक्री में वृद्धि होती है।

(यन्त्र कृपया आवरण-पृष्ठ पर देखें)

दुर्लभ शाबर यन्त्र-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री भूपेन्द्रदत्त शर्मा
१४५ नया बाँस, नदी मार्ग, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)–२५१००२

१. मोहनी टीका

ॐ तिर-तिपुला-चण्डिका, तीनों बार नहाय। अमृत टीका मैं करूँ, बारिध घूमैं कपार। ठक मोहों और ठाकुर मोहों, मोहों यह संसार। फलाने के चित्त, फलाने के चित्त में वश हो जाए। दोहाय नरसिंघ के।

विधि : उक्त मन्त्र 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ १११ पर श्री धर्मवीर शास्त्री जी द्वारा लघु रूप में प्रस्तुत है, कुछ शब्द-भेद भी है। पूज्य श्री गुरुदेव से प्राप्त डायरी व 'सर्व-रक्षा-मन्त्रौषधि-सार-संग्रह' (दुर्लभ ग्रन्थ) में इसे सिद्ध करने की विधि नहीं दी है, किन्तु प्रयोग के विषय में लिखा है कि पहले स्नान करे। तब गोरोचन पर १०८ बार मन्त्र पढ़कर टीका करे। साध्य व्यक्ति टीके को देखेगा, तो वश में हो जाएगा। 'अमृत' थूक से सम्बन्धित है, गोरोचन से नहीं। मन्त्र की सिद्धि एवं प्रयोग भाग ७, पृष्ठ १११ के अनुसार करे।

२. एक विचित्र प्रयोग

कृत्या-अभिचार—शत्रु के तन्त्र-प्रयोगों से यदि दुःखी हो, तो 'यन्त्र संख्या १' को पृथ्वी या आक के पत्ते पर, हल्दी, हरताल, नमक और

(यन्त्र-१)

धतूरे के रस से, शनि या मङ्गल के दिन, इन्हीं की होरा में रचे। शत्रु की प्राण-प्रतिष्ठा 'यन्त्र' में करे (होरा का ज्ञान व प्राण-प्रतिष्ठा स्वयं कर सके, तो ठीक है अन्यथा किन्हीं तन्त्रज्ञ या पण्डित से ज्ञात कर ले)। नव-दुर्गा का स्मरण कर 'लं' (पृथ्वी-बीज) का उच्चारण कर अङ्क ६ पर ६, अङ्क ८ पर ८ जूते मारे। इसी प्रकार अङ्क २ तक जूते मारे। अङ्क १ पर पैर की दोनों एड़ियाँ जोड़कर खड़ा हो जाए। 'यन्त्र' को कुचल दे, मिटा दे। मन-ही-मन नव - दुर्गा का स्मरण कर शत्रु के कृत्य को वापस लौटाने की प्रार्थना करे। मदार (आक) के पत्ते पर यह प्रयोग करने से शत्रु के कृत्यों का स्तम्भन होता है एवं पृथ्वी पर यह प्रयोग करने से शत्रु के कृत्यों के स्तम्भन के साथ ही शत्रु पीड़ित भी होता है।

३. शत्रु को पीड़ित करने का यन्त्र

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ८, पृष्ठ ६१ पर 'श्रीबगला महा-विद्या शत्रु-विध्वंसन प्रयोग' दिया है। मेरे हस्त-लिखित ग्रन्थ-संग्रह में उसी से मिलता-जुलता प्रयोग इस प्रकार है—

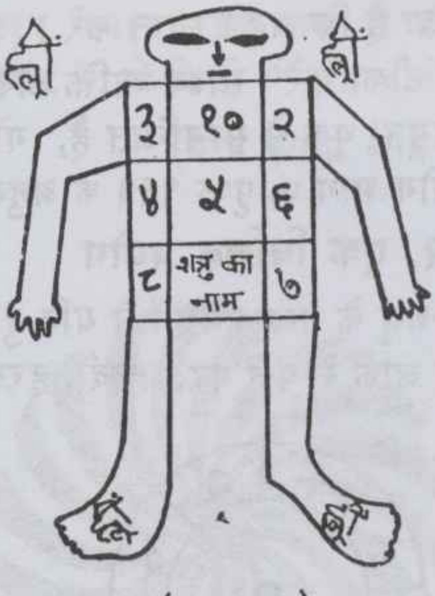

(यन्त्र-२)

'यन्त्र संख्या २' आठ कोष्ठकों में मानवाकृति का पञ्च-दशी यन्त्र है। इसका क्रम चित्र में स्पष्ट है, किन्तु 'यन्त्र' में विलोम से संख्या लिखे। जैसे अङ्क १० (१० के बाद अङ्क ६ नहीं है), फिर ८, ७, ६, ५, ४, ३, २ लिखे।

श्रीबगला-मुखी के बीज 'ह्लीं' (सांख्यायन तन्त्र के अनुसार 'ह्लीं' में रेफ लगाने से निष्कीलन होता है) को यथा-स्थान लिखे। उक्त 'यन्त्र' के निर्माण की विधि यह है कि शनिवार की रात्रि में श्मशान जाकर जलती हुई चिता में उच्छिष्ट-भैरव की पूजा कर गुड़ की बलि दे। फिर मद्य से चिता में किसी कोयले के अङ्गारे को बुझाकर कोयला ग्रहण करे। इस कोयले को हल्दी, हरताल, नमक के साथ पीस कर नीम का रस बनाए (नीम की पत्तियों का रस अलग निकाल कर हल्दी, हरताल, नमक में मिला ले)। उक्त मानवाकृति के 'पञ्च-दशी यन्त्र' को एक पत्थर पर रच कर यन्त्र में शत्रु की प्राण-प्रतिष्ठा करे। तब श्रीबगला-मुखी के बीज-मन्त्र (ह्लीं) का मानसिक रूप से जप करते हुए पत्थर पर निर्मित 'यन्त्र' को श्मशान-भूमि में ही उल्टा गाड़ दे। इस क्रिया से शत्रु के सभी कार्यों का स्तम्भन होगा। ध्यान रहे कि 'यन्त्र'-निर्माण करते समय भी 'मन्त्र - बीज' का जप करना आवश्यक है।

शत्रु-नाशक-प्रयोग करना हो, तो श्मशान के ठीकरे पर उक्त यन्त्र बनाए। प्राण-प्रतिष्ठा कर चिता की अग्नि में रखे। यन्त्र के गर्म हो जाने पर, उड़द की बलि एवं मद्य को, उस ठीकरे में उच्छिष्ट - भैरव को दे, तो शत्रु का नाश होगा।

४. भूत-प्रेत-नाशक यन्त्र

विधि : 'यन्त्र' सं. ३ (कृपया देखें आवरण-पृष्ठ] की प्रयोग-विधि यह है कि प्रेत-पीड़ा होने पर प्रेत - पीड़ित व्यक्ति को स्नान कराकर शुद्ध स्थान पर, शुद्ध आसन पर बैठाए। उस व्यक्ति के सामने ही अखण्ड 'भोज - पत्र' पर केसर की स्याही और अनार की लेखनी से उक्त यन्त्रों को बनाए। इष्ट-मन्त्र का जप मन-ही-मन करता रहे। उक्त दोनों यन्त्रों को रुई में लपेट कर प्रेत-पीड़ित के ऊपर सात बार उतारे। तदनन्तर सरसों के तेल के दो दीपकों में इन यन्त्रों को रख-कर पीड़ित व्यक्ति के सामने ही पूरी तरह से जलाए। इस क्रिया से पीड़ित व्यक्ति प्रेत-बाधा से मुक्त हो जाएगा।

५. चक्र-व्यूह यन्त्र

'यन्त्र सं. ४' (कृपया देखें आवरण-पृष्ठ) जो व्यक्ति घर से रूठ कर भाग गया हो या घर छोड़कर रहता हो, तो उसके पहने हुए

वस्त्र में उक्त 'यन्त्र' को लाल स्याही से लिखे, यथा - स्थान मन्त्र भी लिखे और 'देवदत्त' के स्थान पर भागे हुए व्यक्ति का नाम लिखे। ग्यारह या इक्कीस दिनों तक पहने हुए वस्त्र पर बने हुए इस यन्त्र को 'चक्की' या 'चरखे' में बाँध कर 'एक सौ आठ' बार उल्टा घुमाए। मन्त्र भी 'एक सौ आठ' बार साथ-साथ जपे। इस प्रयोग से निश्चित ही भागा हुआ व्यक्ति अपने घर वापस आ जाता है। प्रयोग करने से पहले 'भोज-पत्र' पर उक्त 'यन्त्र' को अष्ट-गन्ध से, अनार की लेखनी द्वारा लिखकर, 'यन्त्र' में ही भैरव जी का यथोपचार - सहित पूजन कर मन्त्र को 'ग्यारह हजार' जप से सिद्ध कर ले। कार्य हो जाने के पश्चात् 'यन्त्र' को नदी में बहा दे और इच्छित संख्या में श्वानों (कुत्तों) को भर-पेट सामग्री खाने को दे। मन्त्र निम्न प्रकार है—

ॐ काला भैरव कपिला केश, कानो कुण्डल भगवत वेश। जो मन धरो, तो लङ्का जाय। लङ्का जाय रावण को मारो, तिसने काज ईश्वर का समारौं। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच।

'चक्र-व्यूह यन्त्र' के अन्य प्रयोग

(१) प्रसूता स्त्री के लिए भी 'चक्र - व्यूह यन्त्र' का प्रयोग लाभकारी है। काँसे की थाली में, अनार की लेखनी एवं गोमय (गोबर) से 'चक्र-व्यूह यन्त्र' को बनाए (यन्त्र में न तो मन्त्र लिखे और न स्त्री का नाम)। प्रसूता को यह 'यन्त्र' दिखाने से प्रसव की पीड़ा कम होकर बच्चे का जन्म शीघ्रता से होता है। इसका प्रयोग होता भी तभी है, जब स्त्री की प्रसव-पीड़ा अधिक हो। प्रयोग से असहनीय पीड़ा सहन होकर, सरलता से बच्चे का जन्म हो जाता है।

(२) 'गोमय' व अनार की लेखनी से काँसे की थाली में उक्त 'यन्त्र' बनाकर, प्रसूता स्त्री को दिखाए। बाद में थाली में थोड़ा-सा गङ्गा - जल डालकर 'यन्त्र' का घोल बना ले। इस घोल को प्रसूता स्त्री को पीने के लिए दे, तो प्रसव - पीड़ा कम होती है और शीघ्रता से बच्चे का जन्म हो जाता है।

शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : डा० बसन्त पाण्डुरङ्ग पराञ्जपे
उमाशङ्कर बँगला, गङ्गा सोसायटी, सहकारनगर, क्र० २
पर्वती, पुणे (महा-राष्ट्र)–४११००६

१. नजर का मन्त्र

वन गुरु इद्यास करु। सात समुद्र सुखे जाती। चाक बाँधूँ, चाकोली बाँधूँ, दृष्ट बाँधूँ। नाम बाँधूँ तर बाल बिरामनाची आनिङ्गा॥

विधि : पहले मन्त्र को 'सूर्य-ग्रहण' या 'चन्द्र - ग्रहण' में सिद्ध करे। फिर प्रयोग हेतु उक्त मन्त्र के यन्त्र-५ को (देखिए, आवरण-पृष्ठ) पीपल के पत्ते पर किसी कलम से लिखे। 'बालपेन' से भी लिख सकते हैं। 'देवदत्त' के स्थान पर नजर लगे हुए बालक का या स्त्री-पुरुष का नाम लिखे। यन्त्र को हाथ में लेकर उक्त मन्त्र ११ बार जपे। अगर-बत्ती का धुवाँ करे। 'यन्त्र' को काले डोरे से बाँधकर रोगी को दे। रोगी मङ्गलवार या शुक्रवार को पूर्वाभिमुख होकर ताबीज को गले में धारण करे।

२. वृश्चिक-दंश का मन्त्र

उलिसा गाव, बाँधन वाडी। तिथे चिर-कापाला-पुरी। कापाला-पुरी चे विञ्चू किती। बारा पिले सोळा काती। विञ्चू चावला नारायणा उतर। विष्णु काना उतरे नास तर लवडे मारी। उतरे नास तर झाट मारी। पुरा मन्त्र. ईश्वरी वाचा, छुः॥

विधि : पहले 'सूर्य-ग्रहण' या 'चन्द्र - ग्रहण' में उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। फिर आवश्यकता पड़ने पर सँभालू (निर्गुण्डी) की शाखा से ऊपर से नीचे की ओर झाड़े।

३. जङ्घा में सूजन (बळ) निवारक मन्त्र

अरे बला, वकाचे मुका । रामाचे नव्हे, लक्ष्मणाचे बेटया । सान्या धोंडिसान्या वळ । पाण्यासारा वाळा । पुरा मन्त्र, ईश्वरी वाचा, छुः ।।

विधि : पहले 'ग्रहण' में मन्त्र सिद्ध करे। फिर आवश्यकतानुसार रोगी के रोग-ग्रस्त स्थान पर उक्त मन्त्र पढ़ते हुए भस्म रगड़े। ऐसा नित्य २७ बार करे। जब तक रोगी ठीक न हो, तब तक करे।

४. आधा सीसी निवारक मन्त्र

काला भैरव कलक ले । गोरा भैरव हासे । वीर हनुमान हाक मारतो, अर्ध-शीशी नासे ।

विधि : मन्त्र बोलते हुए कपाल पर सात बार भस्म लगाए।

५. उसण (लचक) या मांस-पेशी-पीड़ा का मन्त्र

देह की चन बाँधूँ, देह की कन बाँधूँ। देह की वाव बाँधूँ, सरकन सरक । आपली शक्ति, गुरुची भक्ति । पुरा मन्त्र, ईश्वरी वाचा, छुः ।।

विधि : पहले 'ग्रहण' में मन्त्र सिद्ध करे। फिर आवश्यकतानुसार भस्म लगाकर ऊपर से नीचे की ओर झाड़े।

विशेष : उक्त मन्त्रों में 'शक्ति' और 'भक्ति' के क्रम में भिन्नता है। प्रायः 'गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति'—ऐसा ही क्रम देखने में आता है। यहाँ क्रम उलटा है। 'आपली शक्ति' अर्थात् अपनी तपश्चर्या और 'गुरु ची भक्ति' अर्थात् गुरु के प्रति पूर्ण निष्ठा। इन अर्थों को ध्यान में रखे। मन्त्र की सिद्धि ग्रहण-काल में करनी चाहिए।

जिज्ञासा : समाधान

(१) समाधान-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री प्रकाशनाथ

'शिव-गोरख-दरबार', बिचरली गुजरान मोहल्ला,
ब्यावर (राजस्थान)–३०५६०१

प्रश्न १ : 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' में ५६ कलुवों, ५१ भैरों, ६४ योगिनियों और लाँगुरा आदि का उल्लेख है। ये कौन हैं ?

उत्तर : '५६ कलुवे' प्रेत - योनि से सम्बन्धित हैं। 'राजस्थान' में यदि कोई बच्चा सात मास में ही जन्म लेकर कुछ ही दिनों में मङ्गलवार या शनिवार को मर जाता है, तो उसकी प्रेतात्मा को 'कलुवा' या 'कलवा' कहते हैं। 'शाबर'-मन्त्रों द्वारा बलि प्रदान कर उसे प्रसन्न करते हैं। प्रसन्न होने पर मृत बच्चे की 'प्रेतात्मा' साधक के अनेक कार्य करने के लिए मन्त्र-जप करते ही उपस्थित हो जाती है। ये 'कलुवे' भूत, वर्तमान बता देने, वस्तु को गायब या प्रकट कर देने, दुधारू पशुओं का दूध अदृश्य रूप से पी जाने – जैसे अनेक हित-कारी एवं अहितकारी चमत्कार - पूर्ण कार्य करते हैं। 'कलुवे' ५६ प्रकार के होते हैं। सम्भवतः इसी कारण शाबर मन्त्रों में उनका उल्लेख हुआ है।

'५१ भैरों' : 'भैरों'-शब्द 'भैरव' का अपभ्रंश है। प्रसिद्ध है कि प्रजापति दक्ष के यज्ञ में योगाग्नि द्वारा प्रज्वलित सती के शरीर के ५१ अङ्गों से '५१ शक्ति-पीठों' की स्थापना हुई। प्रत्येक 'पीठ' पर 'शक्ति' के साथ एक-एक भैरव भी प्रतिष्ठित हैं। इस प्रकार प्रतिष्ठित ५१ भैरवों के नाम हैं––१ कपाली, २ अमर, ३ जगन्नाथ, ४ चक्र-पाणि, ५ भीम - लोचन, ६ क्रोधीश, ७ त्र्यम्बक, ८ त्रि - सन्ध्येश्वर, ९ उन्मत्त - भैरव, १० भीषण भैरव, ११ वैद्यनाथ, १२ भीरूक, १३ कपिलाम्बर, १४ त्रिपुरेश, १५ चन्द्र - शेखर, १६ भैरवेश्वर, १७ उमानन्द, १८ भव, १९ क्रमदीश्वर, २० क्षीर-खण्डक, २१ नकुलीश,

२२ सम्वर्त, २३ काल-भैरव, २४ निमिष, २५ स्थाणु, २६ सर्वानन्द, २७ शम्बरानन्द, २८ रुरु, २९ असिताङ्ग, ३० भद्र - सेन, ३१ चण्ड-भैरव, ३२ भूतेश, ३३ संहार, ३४ महा-रुद्र, ३५ वामन, ३६ सुन्दरा-नन्द, ३७ सर्वानन्द, ३८ वक्र - तुण्ड, ३९ लम्ब - कर्ण, ४० विकृताक्ष, ४१ वत्सनाभ, ४२ दण्ड - पाणि, ४३ शिव, ४४ महोदर, ४५ योगेश, ४६ अभीरु, ४७ वक्र - नाथ, ४८ चण्ड, ४९ विश्वेश, ५० नन्दिकेश्वर, ५१ राक्षसेश्वर।

'६४ योगिनियाँ' : १ दिव्य योगिनी, २ महा - योगिनी, ३ घोरा, ४ विकटी, ५ दुर्जटा, ६ प्रेत-लक्षणि, ७ काली, ८ काल-रात्रि, ९ निशाचरी, १० हुङ्कारी, ११ यन्त्र-वाहिनी, १२ कौमारी, १३ यक्षी, १४ भक्षिणी, १५ महा-काली, १६ रक्ताङ्गी, १७ यम-दूती, १८ लक्ष्मी, १९ वीर - भद्राक्षी, २० धूम्राक्षी, २१ कलि - प्रिया, २२ राक्षसी, २३ चक्री, २४ मोहिनी, २५ कालाग्नि, २६ मन्त्र-योगिनी, २७ कौमा-रकी, २८ चण्डी, २९ वाराही, ३० मुण्ड - धारनी, ३१ दुर्मुखी, ३२ क्रोधिनी, ३३ वज्रिणी, ३४ भैरवी, ३५ प्रेत-वाहिनी, ३६ कण्डकी, ३७ दीर्घ-लुम्बी, ३८ मालिनी, ३९ सिद्ध-योगिनी, ४० सेवेरी, ४१ भय-ङ्करी, ४२ विरूपाक्षी, ४३ घोर-रक्ताक्षी, ४४ कङ्काली, ४५ भुवनेश्वरी, ४६ कुण्डला, ४७ तालुकी, ४८ प्रेत-कारी, ४९ नर-भोजिनी, ५० करा-लिनी, ५१ कौशिकी, ५२ ऊर्ध्व-केशी, ५३ भूत-डामरी, ५४ कली-कारी, ५५ सिद्ध - वेताली, ५६ विशाला, ५७ कामुका, ५८ विष - लांगुली, ५९ व्याघ्री, ६० यक्षिणी, ६१ डाकिनी, ६२ प्रेताक्षी, ६३ जिनेश्वरी, ६४ कपाली।

'लाँगुरा' : 'लाँगुरा'-शब्द 'लंगूर' से बना है। 'वानर' (बन्दर) को 'लंगूर' कहते हैं। 'शाबर'-मन्त्रों में 'लाँगुर' से तात्पर्य है हनुमान जी से। वैसे 'राजस्थान' में करौली की 'कैला देवी' (कैलेश्वरी) के मन्दिर के प्राङ्गण में 'गणेश' एवं 'भैरव' की मूर्तियाँ हैं, जिन्हें ब्रज-भाषा में "लाँगुरियाँ" कहते हैं। लोक-गीतों में भी उल्लेख है। यथा--

कैला मैया को लगौ है दरबार लाँगुरियाँ।
चले, तो दर्शन करि आवे ॥

प्रश्न २ : 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ ३९ पर 'सन्तोषी माता का मन्त्र' है। 'नव - नाथ - काल' में 'सन्तोषी माता' का नाम तक नहीं था। फिर यह मन्त्र कहाँ से मिला ?

उत्तर : 'सन्तोषी माता' के मन्त्र व विधान में नव-नाथों या नाथ - सम्प्रदाय का कोई उल्लेख नहीं है। अतः इस मन्त्र का नाथ-सम्प्रदाय से कोई सम्बन्ध नहीं। भाग ३, पृष्ठ ४५ पर मैंने स्पष्ट किया है कि नाथ - सम्प्रदाय के सिद्धाचार्यों के अतिरिक्त मुस्लिम पीर-पैगम्बरों, जैन यतियों और सन्त-महात्माओं ने भी 'शाबर'-मन्त्रों का सृजन कर इस विद्या के विकास में अपना योग - दान दिया है। इसी प्रकार 'सन्तोषी माता' का मन्त्र भी देवी के किसी सिद्ध उपासक का रचा हुआ सम्भव है।

प्रश्न ३ : प्रायः सभी देवी-देवताओं के 'शाबर' - मन्त्र मिलते हैं, परन्तु भगवान् श्रीकृष्ण, भगवान् विट्ठल के नहीं मिलते। क्यों ?

उत्तर : 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ५, पृष्ठ ३० में 'सर्प-विष-निवारण' हेतु एवं भाग ८, पृष्ठ ६२ पर 'धनुष - विद्या में प्रवीणता' हेतु भगवान् कृष्ण के 'शाबर'-मन्त्र दिए गए हैं। अन्य कई मन्त्र मेरे पास उपलब्ध हैं। सम्भव है, भगवान् विट्ठल के भी 'शाबर' - मन्त्र किन्हीं भक्तों के पास हों। शोध करने की आवश्यकता है।

प्रश्न ४ : 'नाथ-पन्थ' में तान्त्रिक पद्धति के न्यास नहीं हैं। फिर 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ ५३ पर ऐसे न्यास कैसे दिए गए हैं ?

उत्तर : 'नाथ - पन्थ' में तान्त्रिक पद्धति के न्यास स्वयं प्रश्न-कर्ता श्री बोकील जी ने ही प्रस्तुत किए हैं! यह विचारणीय है। वास्तव में प्रश्न गूढ़ और गम्भीर है। बात यह है कि 'नाथ-सम्प्रदाय' की परम्परा में 'आदि-नाथ शिव' के बाद सबसे महत्त्व-पूर्ण एवं मानव गुरुओं में सर्व-प्रथम आचार्य 'श्री मत्स्येन्द्र-नाथ जी' हैं। ये श्री 'गोरख-नाथ जी' के गुरु थे। इन्हीं 'मत्स्येन्द्र - नाथ' ने 'कौल - मार्ग' का भी प्रवर्त्तन किया था। 'तन्त्रालोक' की टीका में उन्हें सकल 'कुल-शास्त्र' का अवतारक कहा गया है। अति प्राचीन ग्रन्थ 'कौल-ज्ञान-निर्णय' में भी 'मत्स्येन्द्र - नाथ' द्वारा 'कौल-ज्ञान-साधना' के अन्तर्गत न्यास-विधि, देहस्थ - चक्र - स्थिता देवियों और देहस्थ सिद्धों की पूजा का

विस्तार से वर्णन भी किया गया है। प्रसिद्ध है कि एक बार 'मत्स्येन्द्र-नाथ' 'कदली' (काम - रूप) देश की योगिनियों की माया में फँसकर वहाँ के राजा बन गए थे। कालान्तर में 'गोरख - नाथ' ने 'मत्स्येन्द्र-नाथ' को वहाँ से बाहर निकाला।

सम्भव है कि 'मत्स्येन्द्र - नाथ' की उक्त 'कौल-ज्ञान-साधना' कहीं-कहीं 'नाथ-योग-मार्ग' में भी प्रविष्ट हो गई हो और किसी-न-किसी रूप में वर्तमान में भी प्रचलित हो, जिसकी झलक 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ८ में प्रकाशित 'नाथ-पन्थी' न्यास में दिखाई देती है।

प्रश्न ५ : 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ ११३ में 'अङ्क-आकर्षण मन्त्र' दिया है। यह सच है कि पूर्व-काल में 'जुआ' प्रचलित था, किन्तु 'सट्टा' नहीं। 'सट्टा' और 'शुभाङ्क' आदि शब्द आज के युग के हैं। अतः 'शाबर'-मन्त्रों में उनका प्रयोग भ्रामक है। साथ ही ऐसे मन्त्रों में 'शकुनी मामा' का उल्लेख भी उचित होता। '**सट्टे के नम्बर आ, नम्बर आने का बता**'--इस शब्द-योजना में 'नम्बर'-शब्द कौन-सी भारतीय भाषा में प्रचलित था ?

उत्तर : 'अङ्क-आकर्षण-मन्त्र' की शब्दावली से स्पष्ट है कि यह प्राचीन न होकर अर्वाचीन 'शाबर'-मन्त्र है। किसी सिद्ध साधक ने सटोरियों के लाभार्थ कुछ दशकों पूर्व ही इस मन्त्र की रचना की है, ऐसा प्रतीत होता है। अन्य ग्रन्थों के प्राचीन यन्त्र-मन्त्रों में 'सट्टा-जुआ' शब्दों के स्थान पर 'द्युत' शब्द का प्रयोग मिलता है।

प्रश्न ६ : 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ४, पृष्ठ २५ पर "शाबर गुरु-मन्त्र" दिए गए हैं। 'नाथ-पन्थ' में 'गुरु-मन्त्र' नितान्त व्यक्तिगत होता है। सब कुछ प्रकाशित हो सकता है, 'गुरु-मन्त्र' कदापि नहीं। दूसरे 'नाथ-पन्थ' में साधक का स्तर देखकर उसे 'गुरु - मन्त्र' दिया जाता है। प्रत्येक 'नाथ-भक्त'--'नाथ - साधक'--'सिद्ध - साधक' और 'सिद्ध-योगी' के 'बीज' अलग-अलग होते हैं। पृष्ठ २५ के 'गुरु-मन्त्र' किस प्रकार के साधक के लिए हैं ?

उत्तर : 'नाथ-सम्प्रदाय' में 'गुरु' का सर्वोपरि महत्त्व है। यह सर्वथा सत्य है कि 'गुरु-मन्त्र' पूर्णतः व्यक्ति-गत एवं अत्यन्त गोपनीय है। अतः प्रकाशित 'गुरु-मन्त्र' कदाचित् उन साधकों के लिए प्रचारित

हुए हैं, जिन्हें प्रयत्न करने पर भी 'नाथ - पन्थ' में दीक्षा नहीं मिल पाती और वस्तुतः 'नाथ-सम्प्रदाय' में उनका प्रवेश हो नहीं पाता। 'नाथ-सम्प्रदाय' में तो गुरुदेव द्वारा शिष्य की योग्यता के आधार पर ही 'गुरु-मन्त्र' प्रदान किया जाता है, यह सत्य है।

जिज्ञासा करनेवाले बन्धु : प्रश्न १ श्री श्यामसुन्दर शर्मा, मोती कटरा, आगरा (भाग ६, पृष्ठ १६०) द्वारा प्रस्तुत है। प्रश्न २ से ६ तक के पाँच प्रश्न 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६, पृष्ठ १५६ पर श्री अनिल गोविन्द बोकील, १८/१ ड, गोंधळेनगर, पुणे (महा-राष्ट्र) द्वारा प्रस्तुत हैं।

विशेष स्पष्टीकरण : ['कुल-वाणी-रत्न' श्री प्रकाशनाथ जी द्वारा प्रस्तुत उक्त जिज्ञासा : समाधान के परिप्रेक्ष्य में 'कुल-वाणी-रत्न' श्री अनिल गोविन्द बोकील का स्पष्टीकरण भी हमें प्राप्त हुआ है। उसे हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे पूर्ण समाधान हो जाता है।— सं०]

श्री प्रकाशनाथ द्वारा प्रस्तुत 'समाधान' उचित है। 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६, पृष्ठ १५६, मेरा प्रश्न क्रमाङ्क २ प्रत्यक्ष कृपा-प्राप्ति, श्रीकृष्ण-जागृति आदि से सम्बन्धित है। इस दृष्टि-कोण से समाधान करेंगे, तो उत्तम होगा। प्रश्न क्रमाङ्क ३ तान्त्रिक न्यासों से सम्बन्धित है। नाथ-पन्थ में ऋष्यादि, कर, षडङ्ग, व्यापक आदि 'न्यास' नहीं होते क्योंकि मन्त्र स्वयं-सिद्ध होते हैं। मेरे प्रश्न का सङ्केत ऐसे 'न्यास' की ओर ही है। श्री प्रकाशनाथ जी ने मेरी जिज्ञासा अन्यथा ली है। क्षमस्व ! मैंने नाथ-पन्थ में तान्त्रिक पद्धति के न्यास प्रस्तुत नहीं किए हैं। भाग ८ में जो 'न्यास-साधना' प्रस्तुत की है, वह एक 'साधना-विधि' है। उसमें 'तन्त्र' के अनुसार 'न्यास'-परक शब्द - योजना नहीं है। किसी भी मन्त्र से यह 'न्यास-साधना' की जा सकती है। यह जप की अन्यतम 'साधना-विधि' है। 'तन्त्र-मार्ग' में 'न्यास' एक क्रिया है, जो उपासना-साधना-पुरश्चरण का अङ्ग है। परन्तु 'नाथ-पन्थ' में यह 'स्वयम्भू उपासना' है। इस भेद को ध्यान में रखते हुए यदि श्री प्रकाशनाथ जी मेरा समाधान करेंगे, तो बड़ी कृपा होगी।

● ● ●

(२) समाधान-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्रीसूरजप्रकाश सारस्वत

गाँव बड़ोटी, डा० रैल, जि० हमीरपुर (हि. प्र.)-१७७०४५

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६, पृष्ठ १५६ पर, श्री अनिल गोविन्द बोकील द्वारा कुछ जिज्ञासाएँ की गई हैं। जिज्ञासा क्रमाङ्क १ तथा ४ का स्पष्टीकरण मैं देना चाहता हूँ।

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ ३६ पर मेरे द्वारा प्रेषित मन्त्र मुझे एक साधु से प्राप्त हुआ था। मैंने एक 'नव-रात्र' में एक अनुष्ठान, प्रति-दिन नौ माला जप का, किया था। इससे मेरा सङ्कल्पित कार्य आश्चर्य-जनक ढङ्ग से सम्पन्न हुआ था। इसके अतिरिक्त मैंने अपने कुछ इष्ट-मित्रों को भी, जिनकी 'सन्तोषी माता' में पूर्ण आस्था थी, बताया। उन्होंने भी मन्त्र को अत्यन्त प्रभाव-शाली पाया। अतः 'मन्त्र' पूर्ण-तया अनुभूत एवं प्रामाणिक है।

जिज्ञासा क्रमाङ्क ४ में श्री भूपेन्द्रदत्त शर्मा द्वारा प्रस्तुत मन्त्र भी पूर्णतया सही है। किसी देवी अथवा देवता के 'शाबर' मन्त्र के प्रायः दो भाग होते हैं, जिनमें एक भाग अपरिवर्तनीय होता है और दूसरे भाग को साधक अपनी इच्छा-पूर्ति हेतु अपनी मनो - कामना के अनुसार परिवर्तित कर सकता है। इससे मन्त्र के प्रभाव पर कोई असर नहीं पड़ता।

उदाहरण-स्वरूप साधक विभिन्न कार्यों के लिए निम्न-लिखित ढङ्ग से 'अङ्क-आकर्षण-मन्त्र' का प्रयोग कर सकता है। शाबर - मन्त्र का रेखाङ्कित भाग परिवर्तनीय है।

चेत माई, चेत माई कालका! चेतावे तेरा बालका। सोते को जगा, जागते को बैठा। सट्टे का नम्बर आने का बता, दुहाई गुरु गोरखनाथ की। नाथ जी को आदेश।

'सट्टे का नम्बर आने का बता' की जगह साधक अगर 'कल के सट्टे का नम्बर बता' अथवा 'आठवें दिन के सट्टे का नम्बर बता' कहे, तो भी मन्त्र के प्रभाव में कोई कमी नहीं आएगी।

उक्त मन्त्र के परिवर्तन-शील भाग में साधक इस तरह भी परि-वर्तन कर सकते हैं। यथा—

(१) **चोरी का माल बरामद करने हेतु :** चोर का पता बता, चोरी का माल बरामद करा।

(२) **घर से भागे हुए को वापस बुलाने हेतु :** रूठे को मना, अमुक को वापस घर पहुंचा।

(३) **भूत-प्रेत को बकराने के लिए :** भूत - प्रेत को पकड़ ला, सिर चढ़ खेला—मुख से बुला।

इस तरह 'शाबर - मन्त्र - विशेषज्ञ' एक ही मन्त्र से अनेक कार्य सिद्ध कर लेते हैं। इसके लिए गुरु-कृपा तथा इष्ट-कृपा दोनों का होना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि प्रत्येक 'शाबर - मन्त्र' में—'मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। चले मन्त्र, ईश्वर महादेव का वाचा फुरे।'—यह वाक्य स्पष्ट अथवा गुप्त-रूप से अवश्य जुड़ा रहता है।

'शाबर-मन्त्र' अबोध बालक की भाषा के रूप में होते हैं। अतः जो साधक एक शिशु की तरह सरल तथा निष्कपट होगा, उसका मन्त्र चामत्कारिक ढङ्ग से कार्य करेगा। मेरे अपने अनुभवानुसार प्रायः अनपढ़ देहाती लोगों के 'शाबर - मन्त्र' अधिक प्रभावी होते हैं क्योंकि उनका 'विश्वास' पक्का होता है और आधुनिक तथा पढ़े-लिखे लोगों के कम क्योंकि वे 'संशयालु' होते हैं।

● ● ●

(३) समाधान-कर्त्ता : कुल-वाणी-रत्न श्रीअनिल गोविन्द बोकील
१८/१ड, गोंधळेनगर, हडपसर, पुणे (महा-राष्ट्र)

['शाबर - मन्त्र - संग्रह' के अब तक प्रकाशित ६ भागों से तथा पत्राचार से यह स्पष्ट है कि 'नाथ-पन्थ' में अधिकाधिक बन्धुओं की रुचि बढ़ रही है। 'नाथ - पन्थ'-विषयक कुछ जिज्ञासाएँ यहाँ उत्तर-सहित बहु-जन-लाभार्थ प्रस्तुत हैं।—प्रस्तुत-कर्त्ता]

जिज्ञासा १ : क्या प्रत्येक शाबर मन्त्र ग्रहण-काल में जपा जा सकता है?

उत्तर : अवश्य! स्वयं-सिद्ध मन्त्र भी जपे जा सकते हैं। सिर्फ उग्र मन्त्रों का जप गुरु-आज्ञा से ही करे।

जिज्ञासा २ : नाथ-पन्थीय वेष विचित्र क्यों है ?

उत्तर : नाथ-पन्थीय वेष को 'नाथ-पन्थीय बाणा' कहते हैं। यह प्रतीकात्मक है, जिसका अपना विशिष्ट अर्थ है। बाणा-परिधान धारण करने के पूर्व कुछ सिद्ध क्रियाएँ तथा मन्त्र - प्रयोग किए जाते हैं।

जिज्ञासा ३ : शाबर मन्त्रों की उत्कीलन-विधि बताएं।

उत्तर : शाबर मन्त्रों का 'कीलन' हुआ ही नहीं है। अतः उसकी क्या विधि बताऊँ ?

जिज्ञासा ४ : कुछ मन्त्रों में 'अनुपान-शीला' का उल्लेख है। यह 'अनुपान-शीला' कहाँ है ?

उत्तर : 'अनुपान-शीला' महा-राष्ट्र के नासिक जिले में आद्य-ज्योतिर्लिङ्ग-क्षेत्र त्र्यम्बकेश्वर में है। ब्रह्म-गिरि पर जाते समय आधे रास्ते पर गङ्गा-द्वार है। गङ्गा-द्वार के दूसरी ओर 'गोरक्ष-गुफा' है। यहाँ श्री गोरक्षनाथ जी 'तप' किया करते थे। इस गुफा से कुछ ही दूरी पर सिद्धों की 'अनुपान-शीला' है, जिसका माहात्म्य नाथ - पन्थ में अनन्य है। ('शीला' कदाचित् 'शिला' का अपभ्रंश है)

जिज्ञासा ५ : कई मन्त्रों में ८४ सिद्धों का उल्लेख हुआ है। ये ८४ सिद्ध कौन-कौन हैं ?

उत्तर : '८४ सिद्ध' ऐसा मन्त्र में उल्लेख होता है। यह संख्या-वाचक शब्द नहीं है। तपः - साधना से जिस साधक की ८४ प्रमुख नाड़ियाँ शुद्ध हुई हैं, उसे गौरव - पूर्ण ८४ सिद्ध कहा जाता है। ऐसे साधक को मान्त्रिक, तान्त्रिक, यान्त्रिक, रासायनिक तथा यौगिक सिद्धि होती है। कई ग्रन्थों में ८४ से भी अधिक सिद्धों के नाम मिलते हैं। इन्हें भाव-रूप में ही समझना चाहिए।

जिज्ञासा ६ : 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६ में 'नाथ - पन्थीय तत्त्व-ज्ञान' दिया है। यह किस ग्रन्थ के आधार पर है ?

उत्तर : श्री गोरक्षनाथ विरचित—(१) सिद्ध-सिद्धान्त-पद्धति, (२) श्री गोरक्ष-गीता, (३) श्री गोरक्ष-संहिता, (४) श्री गोरक्ष-वाणी,

(५) श्री गोरक्षोपनिषद्, (६) ज्ञान-तिलक अर्थात् श्री गोरक्ष - दरबार, (७) श्री गोरक्ष-पद्धति आदि-आदि।

जिज्ञासा ७ : शाबर मन्त्रों में उल्लिखित 'इस्माइल जोगी' कौन हैं ?

उत्तर : कुछ शाबर मन्त्रों में श्री मछिन्द्रनाथ जी को ही इस्मायल जोगी कहा गया है। अन्यत्र अलग - अलग मत भी दिखाई देते हैं।

जिज्ञासा ८ : नव-नाथ 'अयोनि-सम्भव' कहे गए हैं। क्या यह सत्य है ?

उत्तर ; हाँ ! जिस प्रकार मौंजी-बन्धन से व्यक्ति 'द्विज' अर्थात् उसका दूसरा जन्म होता है, उसी प्रकार गुरु द्वारा शिष्य में शक्ति-संक्रमण होने से उसे उक्त नाम प्रदान करते हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में यह नया जन्म ही है, जो 'अयोनि-सम्भव' नहीं तो और क्या है ?

कथाओं में जो वर्णन हैं, वे प्रतीकात्मक ही हैं। यथा मच्छिन्द्र-नाथ जी के जन्म का सम्बन्ध 'जल-तत्त्व' से है। इससे यह समझें कि जल-तत्त्व पर संयमात्मक त्राटक से वे सिद्ध बने। इसी प्रकार श्री जालन्धरनाथ —'अग्नि-त्राटक' से, श्री गोरक्षनाथ —'सूर्य - त्राटक' के द्वारा, श्री गहिनीनाथ —'बिन्दु व तारा-त्राटक' द्वारा आदि-आदि।

जिज्ञासा ९ : नव-नाथों में सर्व-श्रेष्ठ कौन हैं ? कृपया बताएँ। हम किसे 'इष्ट' मानें ?

उत्तर : सभी नाथ श्रेष्ठ हैं। किसी को भी 'इष्ट' मानें। उसी में अन्य नाथ भी होंगे, होते ही हैं।

जिज्ञासा १० : क्या 'शाबर - क्षेत्र' में बहुत गोपनीयता होती है ?

उत्तर : 'शाबर - मन्त्र - संग्रह' के कुछ भागों में कुछ प्रस्तुत-कर्ताओं ने 'गोपनीयता' का उल्लेख किया है। ये प्रस्तुत-कर्त्ता तान्त्रिक हैं। 'नाथ-पन्थ' में साधक से कुछ भी छिपाया नहीं जाता। अतः गोप-नीयता का प्रश्न ही नहीं।

जिज्ञासा ११ : श ाबर' - साधना में कुछ बातों का त्याग करना पड़ता है। क्या यह सत्य है ?

उत्तर : जब साधक की साधना पकने लगती है, तब निम्न स्तर की बातें अपने आप छूटने लगती हैं। किसी भी बात का बल-पूर्वक त्याग 'नाथ-पन्थ' में नहीं किया जाता। शाक्तों का भी यही मत है, जो 'नाथ-पन्थ' में आदर-पूर्वक स्वीकार्य है।

जिज्ञासा १२ : 'शाबर-मन्त्र' क्या कुछ सीमा तक ही कार्य करते हैं?

उत्तर : 'शाबर' ही क्यों? हरेक पन्थ के 'मन्त्र' सीमित ही कार्य करते हैं। साथ ही असीम भी। 'शाबर' में भी ऐसा ही है।

जिज्ञासा १३ : 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ ७३ पर श्री गहिनीनाथ-परम्परा के जो मन्त्र हैं—उनकी देवता कौन हैं?

उत्तर : समाधि-अवस्था में श्री गहिनीनाथ जी को उक्त मन्त्रों का स्फुरण हुआ था। ये उच्चतम श्रेणी के मन्त्र हैं। मन्त्रों की शब्द-रचना भी देखें। 'निरञ्जन (माया-रहित) स्व-रूप' इनकी देवता है।

जिज्ञासा १४ : आज तक कुल कितने शाबर मन्त्रों की रचना हुई है?

उत्तर : सौ करोड़। विवरण इस प्रकार है—

(१) श्री मच्छिन्द्रनाथ जी द्वारा	३३ करोड़ ५५ लाख
(२) श्री चरपटीनाथजी	९ करोड़ ७ लाख
(३) श्री रेवणनाथ जी	२ करोड़ ३ लाख
(४) श्री भर्तरीनाथ	७ करोड़ ४ लाख
(५) श्री नागनाथ	१ करोड़ १ लाख
(६) श्री जालन्धरनाथ	३४ करोड़ १२ लाख
(७) श्री कानिफनाथ	६ करोड़ ८ लाख
(८-९) श्री गोरक्षनाथ व श्री गहिनीनाथ	८ करोड़ १० लाख
	=कुल १०० करोड़

जिज्ञासा करनेवाले बन्धु : (१) श्री रामसरन जी, बुलन्द-शहर। (२) श्री एस. एल. श्याम, होशङ्गाबाद। (३) श्री ओङ्कारप्रसाद शुक्ल, शहडोल (म. प्र.)। (४) श्री धर्मवीर शास्त्री, रोहतक (हरियाणा)। (५) श्री अमरनाथ ओझा, गया (बिहार)। (६) श्री आर. पी. सिंह, बाथू टिप्परी (हि. प्र.)। (७) श्री मनोज शर्मा, मण्डी (हि.

प्र.)। (८) श्री प्रदीपचन्द्र शर्मा। (९) श्री नन्दकिशोर शर्मा। (१०) श्री रमेशप्रसाद रावत, बन्धी कला (म. प्र.)। (११) श्री समीर श्रीवास्तव, प्रयाग-राज (उ. प्र.)। (१२) श्री के. वी. पुरेकर, अमरा-वती (महा-राष्ट्र) (१३) श्री अजय मिश्र, रायपुर (म. प्र.)।

● ● ●

(४) समाधान-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री बलराम बली

२८३/६३ क/२ हरचन्दपुर गढ़ी, कनौरा, पो मानकनगर, लखनऊ

गुरु-मन्त्र-प्रकाशन का औचित्य

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६, पृष्ठ १५६ पर मैंने 'गुरु - मन्त्र' का उल्लेख किया है। इस सम्बन्ध में कुछ बन्धुओं ने आपत्ति की है। क्षमा-याचना-पूर्वक यहाँ कुछ निवेदन कर रहा हूँ।

मैं पिछले दस वर्षों से भी अधिक समय से 'चण्डी' पत्रिका व परिवार से जुड़ा हूँ। मैंने अब तक देखा और पाया कि 'चण्डी' का उद्देश्य मात्र साधक - हित ही है, न कि धनार्जन। यही कारण है कि 'चण्डी' में अति गोपनीय-से-गोपनीय अथवा दुर्लभ प्रयोग छप रहे हैं, जो निश्चय ही कल्याण-कारी सिद्ध हुए हैं। एक और महत्त्व-पूर्ण बात यह है कि 'चण्डी' के प्रवर्तक पण्डित देवीदत्त शुक्ल हिन्दी-साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् ही नहीं, उच्च-कोटि के मन्त्र-तन्त्र-मर्मज्ञ एवं उद्‌भट साधक भी थे, सच तो यह है कि वे अपने समय में मुनि ही रहे, यह अतिशयोक्ति नहीं है। उनके सुपुत्र पण्डित रमादत्त शुक्ल जी (मानद सम्पादक 'चण्डी') स्वयं एक उच्च-कोटि के विद्वान् हैं। मैं कैसे मान लूं कि वे शास्त्र की मर्यादाओं का पालन नहीं करते। 'चण्डी' में गुरु-मन्त्र से लेकर वृहद् गुरु - मन्त्र तक छपे हैं, जिनके पात्र हजारों में एकाध साधक ही होंगे।

भगवान् अमरनाथ ने पार्वती जी को बताया कि 'यह कथा अत्यन्त गोपनीय है' और उसे अमरनाथ गुफा में ही चलकर सुनाने को कहा। फिर भी एक जोड़ा कबूतर ने यह कथा सुन ली और वे अमर हो गए। ठीक उसी प्रकार कलि-युग में तत्काल फल देनेवाले जन-कल्याण-कारी मन्त्रों को जल के मध्य पार्वती जी को सुनाने के

बाद भगवान् साम्ब सदा-शिव ने कहा—'गोपनीयं प्रयत्नेन स्व-योनि-रिव पार्वति !' फिर भी दादा गुरु मछन्दरनाथ का क्या कहना, उन्होंने सुन ही लिया और गोपनीयता भङ्ग कर डाली ! और-तो-और, शिव-स्वरूप जगद्-गुरु गोरक्षनाथ जी का कमाल देखिए। उन्होंने तो सारे-के-सारे मन्त्र नौनाथ चौरासी सिद्धों को सुना डाला। 'नौनाथ चौरासी सिद्ध'-जैसे अति रहस्य-मय शब्द का अर्थ भी शोधनीय है।

'शाबर-मन्त्र-संग्रह' में जो नाथ-भक्त, नाथ-साधक और नाथ-सिद्ध गुरु-मन्त्र प्रकाशित हो चुके हैं, उन्हें बहुत से साधकों ने यह कहते हुए सराहा है कि 'गुरु-मन्त्र' के 'जाप' में जो त्रुटि थी, उसे सुधारने का उन्हें अवसर मिल गया।

गुरु - मन्त्र के प्रकट करने पर किसी को आपत्ति नहीं करनी चाहिए क्योंकि मन्त्र एक शब्द-पुञ्ज है, जो श्री गुरुदेव के द्वारा शक्ति-मान बनाया जाता है। इसी शक्ति के अधिकार का प्रयोग करते हुए श्री गुरुदेव सिर पर हाथ रखकर अथवा कान फूँककर शिष्य को शक्ति-मान बनाते हैं। यही गोपनीयता है। सच्चे गुरु द्वारा दिए गए गुरु-मन्त्र को जब सच्चा शिष्य जपता है, तो कड़ाके की ठण्ड में भी पसीने से तर हो जाता है। यह है गुरु - शक्ति की ऊर्जा ! यही गोप-नीय है।

आवश्यकता है उपकरण, उपचार आदि से मन्त्र चैतन्य करने और वातावरण को मन्त्र के अनुकूल घनीभूत करते हुए स्व-शरीर की दिव्य ज्योति को प्रकट करने की। तभी निर्धारित लक्ष्य को भेदने की क्षमता प्राप्त होती है। वस्तुतः यही 'गोपनीय' विषय है, जो 'गुरु - परम्परा' से ही ज्ञात हो पाता है। यदि मन्त्र-तन्त्र-यन्त्रादि सब गुप्त ही होते, तो वेद, पुराण आदि महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थ लिखे जाने की आवश्यकता ही क्या थी ?

● ● ●

(५) समाधान-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' भूपेन्द्रदत्त शर्मा

१४५ नया बाँस, नदी मार्ग, मुजफ्फरनगर

श्री अनिल गोविन्द बोकील जी ने 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६, पृष्ठ १५६ क्रमाङ्क ४ में जो प्रश्न किया है, वह उचित है। इस प्रश्न

का उत्तर 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ९, पृष्ठ १४४ पर 'एक स्पष्टीकरण' शीर्षक में मैंने पहले ही प्रस्तुत कर दिया है। 'सट्टा' या 'नम्बर' जैसे आधुनिक शब्द को देखते हुए यह प्रश्न उत्पन्न होता ही है कि इस प्रकार के 'शाबर मन्त्र' सत्य हैं या असत्य ? और ऐसे शाबर-मन्त्रों की रचना किस प्रकार से कब हुई और किसने की ? इन प्रश्नों का उत्तर निश्चित रूप में प्राप्त नहीं है, तथापि कुछ-कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि इसी सदी में कुछ साधकों ने निर्धन-जन की 'धन-इच्छा-पूर्ति' के उद्देश्य से ऐसे कुछ शाबर - मन्त्रों की रचना की, उदाहरण-स्वरूप हम यहाँ कुछ और मन्त्र प्रस्तुत कर रहे हैं, जिनमें 'नम्बर' जैसा आधुनिक शब्द आया है। यथा—

(१) खिज्र नूर, खिज्र औलिया, खिज्र भरपूर। दिल्ली में जो नम्बर खुलेगा, उसकी खबर देना जरूर।

(२) दे-दे, दे-दे, अहि-रावण तू दे-दे। जो भी हो—तू दे-दे, सट्टे का नम्बर तू दे-दे। न दे, तो तुझे तेरे गुरु की दुहाई। जै भैरों काली-पूत, काँधै झोली, माथ भभूत।

(३) दे मुझे तू नम्बर, आए कल जो जरूर। दुहाई तुझे काली की।

उक्त मन्त्रों के शब्द - समूहों पर मात्र व्यंग्य ही प्रकट होता है। धन-इच्छुक व्यक्ति विधि के अनुसार इन मन्त्रों की साधना तो करता है, किन्तु उसको सफलता प्राप्त नहीं होती। स्पष्ट है कि उक्त मन्त्र काल्पनिक रचना-मात्र–असत्य ही हैं, जिनको किसी ने समय के प्रभाव में रच कर प्रसिद्ध कर दिया है। 'शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ७ व ९ में मेरे द्वारा प्रस्तुत जो 'अङ्क - आकर्षण - मन्त्र' है, वह कुछ व्यक्तियों द्वारा अनुभूत है। उन्हें धन-लाभ हुआ है।

'शाबर'-शब्द का अर्थ

❀ श्री 'कुल-भूषण' 'चण्डी'-कार्यालय, प्रयाग-राज (उ. प्र.)

'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के प्रथम भाग के पृष्ठ १६ पर 'शाबर-मन्त्र-विज्ञान' लेख के अन्तर्गत 'शाबर'-शब्द का अर्थ बताया गया है कि 'जङ्गली जाति' या 'पर्वतीय' लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषा को 'शाबर' कहते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी लिखा है—'अन-मिल आखर अरथ न जापू', किन्तु यहाँ यह विचारणीय है कि इस प्रकार का अर्थ करना वास्तव में उचित नहीं है। प्रत्येक 'भाषा' का अपना महत्त्व है। जिसकी जो 'मातृ-भाषा' है, उसके लिए वही सर्व-श्रेष्ठ 'भाषा' है। सभी भाषा - भाषियों को एक दूसरे की भाषा का हृदय से सम्मान करना चाहिए।

इसी प्रकार कोई भी 'मानव जाति' कहीं भी रहती हो—उसकी जीवन-शैली कैसी भी हो, उसे सबके समान सम्मान मिलना चाहिए। वनों या पर्वतों में रहनेवाली मानव जन - जातियाँ—देश के गाँवों—नगरों में रहनेवाली मानव जातियों से किसी बात में कम नहीं हैं। अपने स्वरूप में वे श्रेष्ठ हैं क्योंकि उन्हें अपने रहन-सहन और अपनी भाषा पर गर्व है। इसके लिए वे प्रशंसनीय हैं। उनकी अपेक्षा वे मानव-जातियाँ हीन ही मानी जाएँगी, जिन्हें अपनी भाषा और अपने रहन-सहन पर 'गर्व' न होकर 'ग्लानि' का अनुभव होता है।

'शाबर-भाषी' लोग अपनी भाषा का अर्थ भली प्रकार समझते हैं। उनके लिए वह न तो 'अनमिल आखर' वाली है और न 'अर्थ एवं जाप' से रहित है। अतः 'शाबर-मन्त्र' के प्रेमियों से हमारा अनु-रोध है कि वे प्रत्येक 'शाबर मन्त्र' के अर्थ को समझने का प्रयास करें। भाषा-विद् लेखकों से पुनः 'सम्पादक' का अनुरोध है कि वे 'शाबर-शब्द-कोष' को प्रस्तुत करने में अपना-अपना सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

इस भाग में एवं पिछले भागों में जो मन्त्र प्रकाशित हुए हैं, उनमें आए लोक-भाषाओं के सभी शब्दों के अर्थ राष्ट्र-भाषा हिन्दी में प्रका-शित होने चाहिए। आशा है, सभी विज्ञ पाठक-बन्धु इस ओर ध्यान देने की कृपा करेंगे। ● ●

श्रीहनुमान के शावर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री बलराम बली
२८३/६३ क/२ हरचन्दपुर गढ़ी, कनौरा, पो. मानकनगर, लखनऊ

"विश्व-रूप रघु-बंस-मनि, करहु बचन विस्वास।"

यह सम्पूर्ण विश्व भगवान् का स्वरूप है—भगवान् ही है। उसी प्रकार 'शब्द'-मात्र भगवन्नाम है। जगत् का मूल कारण 'शब्द' है—यह बात 'स्फोट - वाद' प्रतिपादित करता है। प्रत्येक 'शब्द' एक कम्पन उत्पन्न करता है और प्रत्येक 'कम्पन' एक रूप व्यक्त करता है। विज्ञान मानता है कि सृष्टि के सब पदार्थ 'कम्पन' से बनते - बिगड़ते हैं। इसलिए 'मन्त्रों की शक्ति' सहज ही समझ सकते हैं।

शब्दों में क्या शक्ति है, यह सर्वज्ञ ऋषि जानते थे। उन्होंने ऐसे शब्दों की योजना की तथा उनके प्रयोग की ऐसी विधि निश्चित की, जिससे अभीष्ट फल प्राप्त हो सके। वेद, पुराण और तन्त्रों के अधिकांश 'मन्त्र' ऐसे हैं, जिनके प्रयोगों में सावधानी आवश्यक है। सविधि करने पर ही वे फल देते हैं, किन्तु 'शाबर मन्त्र' उच्चारण मात्र से अपना प्रभाव प्रकट कर सकते हैं, केवल उन्हें प्रभावी रखने के लिए थोड़ी-बहुत प्रक्रिया आवश्यक है।

'शाबर'-मन्त्रों की योजना प्रायः अटपटी होती है। इनका कोई अर्थ हो ही, यह आवश्यक नहीं। फिर भी उनका प्रभाव प्रत्यक्ष देख सकते हैं। 'मन्त्र' चार प्रकार के होते हैं—१ वैदिक, २ पौराणिक, ३ तान्त्रिक और ४ शाबर। 'डामर'-मन्त्र 'शाबर'-मन्त्र की ही श्रेणी में हैं। 'शाबर'-मन्त्र कीलित नहीं हैं। इसीलिए ये अल्प - साधना एवं प्रयास से ही सिद्ध हो जाते हैं।

'मन्त्र' की सिद्धि के लिए सिद्ध गुरु से दीक्षा एवं गुरु की कृपा आवश्यक है। जिस पद्धति से साधना करनी हो, उस सम्प्रदाय के आचारों का पालन करना आवश्यक है। जहाँ 'जप' की संख्या निर्दिष्ट न हो, वहाँ १०८ अथवा १००८ बार जपना चाहिए। जिस 'मन्त्र' की प्रयोग-विधि ज्ञात न हो, उसे गुरु अथवा किसी अधिकारी विद्वान् से

पूरी तरह समझ कर ही प्रयोग करना चाहिए। मन्त्र - शक्ति पर पूर्ण 'विश्वास' ही साधना और प्रयोग का मूल आधार है।

'शाबर'-मन्त्र ध्वनि-प्रधान होते हैं। इनमें निहित देव-शक्ति, गुरु-शक्ति एवं मन्त्र - शक्ति उच्चारण - मात्र से अभिव्यक्त होकर अपना प्रभाव दिखाती है। ये 'शाबर'-मन्त्र गुरु गोरखनाथ के समय में प्रकट हुए। बाद में भी समय-समय पर अभिव्यक्त होते रहे। इस बात की पुष्टि राजा अजयपाल, लोना चमारी, हाड़ी दासी, चण्डी, इस्माइल जोगी आदि के उल्लेख से होती है। इन मन्त्रों में 'महा - देव' और 'कामाख्या देवी' का स्मरण विशेष रूप से होता है। श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण, हनुमान एवं सुग्रीवादि की शक्ति का स्मरण करके भी 'शाबर'-मन्त्र रचे गए हैं।

'शाबर'-मन्त्रों में रोग, पीड़ा आदि को सचेतन सूक्ष्म व्यक्तित्व से युक्त मानकर उनसे पीड़ित व्यक्ति को छोड़कर चले जाने की प्रार्थना की गई है या देवता अथवा गुरु के आदेश से उन्हें जाने को कहा गया है। बात यह है कि लौकिक जगत् के सभी क्रिया-कलाप सूक्ष्म प्राण-जगत् की विविध शक्तियों द्वारा अधिष्ठित एवं नियन्त्रित हैं। 'शाबर'-मन्त्रों की साधना से इन सूक्ष्म शक्तियों या देव - शक्तियों का अनुग्रह प्राप्त कर सभी लौकिक कार्य सिद्ध किए जा सकते हैं।

श्रीहनुमान जी चिरञ्जीवी हैं तथा जब तक यह पृथ्वी है, तब तक श्रीराम - काज के साधन एवं लोक-हित की सिद्धि के लिए इस पृथ्वी पर निवास करेंगे। उनकी शक्ति सर्वत्र वायु - प्रवाह के समान व्याप्त है। 'मेरु-तन्त्र' के अनुसार श्रीहनुमान जी के मन्त्र चारों युगों में शीघ्र फल देनेवाले हैं। अतः लोक-कल्याण की भावना से यहाँ श्री हनुमान जी के कुछ 'शाबर'-मन्त्र प्रस्तुत हैं—

१. शिर-पीड़ा दूर करने के लिए

लङ्का में बैठ के, माथ हिलावे हनुमन्त। सो देखि के, राक्षस-गण पराय दूरन्त। बैठी सीता देवी, अशोक-वन में। देखि हनुमान को, आनन्द भई मन में। गई उर विषाद, देवी स्थिर दरशाय। 'अमुक' के सिर, व्यथा पराय। 'अमुक' के नहीं, कछु पीर, नहिं कछु भार। आदेश कामाख्या हरि दासी चण्डी की दोहाई।।

विधि : सिर की पीड़ा से पीड़ित व्यक्ति को दक्षिण की ओर मुख करके बैठा दे। सिर को अपने हाथ से पकड़ कर मन्त्रोच्चारण करते हुए झाड़े। 'अमुक' के स्थान पर रोगी का नाम ले।

२. आधा सीसी दूर करने के लिए

(१) बन में ब्यायी अञ्जनी, कच्चे वन फल खाय। हाँक मारी हनुवन्त ने, इस पिण्ड से आधा-सीसी उतर जाय।

(२) ॐ नमो। वन में ब्यायी वानरी, उछल वृक्ष पर जाय। कूद-कूद शाखा-नरी, कच्चे बन-फल खाय। आधा तोड़े आधा फोड़े, आधा देय गिराय। हङ्कारत हनुमन्त जी, आधा-सीसी जाय॥

विधि : किसी एक मन्त्र से भस्म से झाड़े।

३. नेत्र-रोग-शमन के लिए

ॐ नमो। बने बिआई बानरी, जहाँ-जहाँ हनुवन्त। आँख पीड़ा कषावरि गिहिया थनै लाइ चरिउ जाई भस्मन्तन। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि : आँख पर हाथ फेरते हुए सात बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूंकने से व्यथा मिट जाएगी।

४. कर्ण-मूल की पीड़ा दूर करने के लिए

वनरा गाँठि वानरी, तो डाँटे हनुमन्त कण्ठ। बिलारी बाघी थनैली कर्ण - मूल सम जाइ। श्रीरामचन्द्र की बानी, पानी पथ होइ जाय॥

विधि : भभूत से सात बार झाड़ने से रोग दूर होता है।

५. बिच्छू का विष उतारने के लिए

(१) पर्वत ऊपर सुरही गाइ, कारी गाइ की चमरी पूछी। तेकरे गोबरे बिछी बिआई। बिछि! तोरे कर अठारह जाति। छ कारी, छ पियरी, छ भूमाधारी, छ रत्न-पवारी। छ कुं हुं कुं हुं छारि। उतरु बिछी हाट-हाट पोर-पोर ते। कस मारे लीलकण्ठ, गर-मोर महा-देव की दुहाई। गौरा पार्वती दुहाई। अनीत टेहरी शडार बन छाई। उतरहि बीछी, हनुमन्त की आज्ञा। दुहाई हनुमन्त की।

(२) ॐ हरि-मर्कट ! मर्कटाय स्वाहा ।

विधि : कोई एक मन्त्र सिद्ध कर झाड़ने से जहर उतर जाता है।

६. अण्ड-वृद्धि दूर करने के लिए

ॐ नमो आदेश गुरू को। जैसे के लेहु रामचन्द्र कबूत, ओसई करहु राध बिनि कबूत। पवन-पूत हनुमन्त ! धाऊ हर-हर रावन कूट। मिरावन श्रवइ अण्ड, खेतहि श्रवइ अण्ड—अण्ड-विहण्ड खेतहि श्रवइ। वाजं गर्भं हि श्रवइ। स्त्री पीलहि श्रवइ। शाप हर-हर जम्बीर, हर जम्बीर, हर-हर-हर।

विधि : मन्त्र पढ़कर फूले हुए अण्ड-कोश को हल्के हाथ से मले तथा अभि-मन्त्रित जल को पिलाए, तो अण्ड-वृद्धि शान्त होती है।

७. भूत-प्रेत-बाधा दूर करने के लिए

बाँधो भूत। जहाँ तु उपजी छाड़ी, गिरे पर्वत चढ़ाइ। सर्ग दुहेली, सुजभि झिल-मिलाहि। हुङ्कारे हनुवन्त, पचारह भीमा। जारि-जारि-जारि, भस्म करे जौ चापें सींउ।

विधि : मन्त्र सिद्ध कर प्रयोग करे। इस मन्त्र से भूत-प्रेत भाग जातें हैं अथवा भस्म हो जाते हैं।

८. चूहे दूर करने के लिए

पीत-पीताम्बर, मूसा गाँधी। ले जाइहु हनुवन्त ! तु बाँधी। ए हनुवन्त ! लङ्का के राउ, एहि कोणे पैसेहु, एहि कोणे जाऊ॥

विधि : स्नान कर हल्दी की पाँच गाँठें और अक्षत लेकर, उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित कर, घर अथवा खेत में डाल देने से चूहे भाग जाते हैं।

९. सुअर और चूहा दूर करने के लिए

हनुवन्त धावति, उदरहि ल्यावइ बाँधि। अब खेत खाय सुअर और घर म रहे मूस। खेत-घर छाँड़ि, बाहर भूमि जाइ। दोहाई हनुमान की, जो अब खेत मा सुअर, घर मह मूस जाइ।

विधि : मन्त्र ८ के अनुसार।

१०. शरीर-रक्षा के लिए

ॐ नमः वज्र का कोठा, जिसमें पिण्ड हमारा पैठा। ईश्वर कुञ्जी, ब्रह्मा का ताला। मेरे आठों याम का, यती हनुमन्त रखवाला।

विधि : उक्त मन्त्र को एक हजार जप कर सिद्ध कर ले। फिर तीन बार पढ़कर शरीर पर फूंके, तो कार्य सिद्ध होगा।

११. अर्श-रोग निवारण के लिए

ॐ काकाकता कोरी कर्त्ता, ॐ करता से होय। परसना दश हंस प्रकटे, ख़ूनी बादी बवासीर न होय। मन्त्र जान के न बतावे, द्वादश ब्रह्म-हत्या का पाप होय। लाख़ जप करे, तो उसके वश में न होय। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा, तो हनुमान का मन्त्र साँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : रात्रि के रखे जल को उक्त मन्त्र से अभि - मन्त्रित करके शौच-समय प्रक्षालन करे, तो 'बवासीर' रोग नष्ट हो जाता है।

१२. पीलिया रोग निवारण के लिए

ॐ नमो वीर बैताल, असराल नारसिंह देव। खादी तुषादी पीलिया कूं, भिदाती कारै - झारै। पीलिया रहै न नेक। निशान जो कहीं रह जाय, तो हनुमन्त की आन। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : मन्त्र से जल अभि-मन्त्रित करके पिलाए।

१३. दाँत का कीड़ा झाड़ने के लिए

ॐ नमो आदेश गुरू का। बन में ब्यायी अञ्जनी, जिन जाया हनुवन्त। कीड़ा-मकड़ा-माकड़ा, ए तीनों भस्मन्त। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र एक लाख जपने से सिद्ध होता है। नीम की टहनी से झाड़ने से कीड़ा निकल जाता है।

१४. नेत्र-रोग शमन करने के लिए

ॐ झलमल जहर से भरी सलाई, अस्ताचल पर्वत से आई। जहाँ बैठा हनुमन्ता जाई। फूटै न पाकै, करै न पीड़ा। जती हनुमन्त हरे पीड़ा। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्य नाम, आदेश गुरू का।

विधि : मन्त्र को सिद्ध कर ११ बार उच्चारण करते हुए नीम की टहनी से झाड़ने से नेत्र-रोग शान्त होता है।

१५. अग्नि-बन्ध करने का मन्त्र

अज्ञान बाँधो, विज्ञान बाँधो। घोरा घाट, आठ कोटि वैसन्दर बाँधो। अस्त हमारा भाई, आन हि देखे। झझके मोहे देखे, बुझाई हनुवन्त। बाँधों पानी, होइ जाय अग्नि—भवेत के जसमत्ती हाथी होई। वैसन्दर बाँधों, नारायण साखि मोरि। गुरू की शक्ति, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : सिद्ध मन्त्र से सात कङ्कड़ी पढ़कर फेंकने से अग्नि शान्त होती है।

१६. प्रेत-बाधा-निवारण के लिए

ॐ दक्षिण-मुखाय पञ्च-मुख-हनुमते कराल - वदनाय नारसिंहाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सकल-भूत-प्रेत-दमनाय स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र को कम-से-कम दस हजार जप कर सिद्ध कर ले। मन्त्र-जप के बाद अष्ट-गन्ध से हवन करना चाहिए। तब प्रयोग करे।

१७. विष उतारने के लिए

ॐ पश्चिम-मुखाय गरुड़ाननाय पञ्च - मुख - हनुमते मं मं मं मं मं सकल-विष-हराय स्वाहा।

विधि : दीपावली के दिन अर्ध-रात्रि को घी का दीपक जला कर, हनुमान जी को साक्षी मानकर, दस हजार जप लेने से सिद्ध हो जाता है। किसी विष - धारी के विष को शान्त करने के लिए ऊँचे स्वर में उच्चारित करते हुए रोगी को सुनाने से विष उतर जाता है।

१८. शत्रु-सङ्कट-निवारण के लिए

ॐ पूर्व-कपि-मुखाय पञ्च - मुख - हनुमते टं टं टं टं टं सकल-शत्रु-संहरणाय स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र के नियमित जप से शत्रु-भय दूर होता है।

१९. महा-मारी, अमङ्गल ग्रह-दोष एवं भूत-प्रेतादि-नाश के लिए

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ नमो भगवते महा-बल-पराक्र-माय ! भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्म-राक्षस-शाकिनी-डाकिनी-यक्षिणी-पूतना-

मारी-महा-मारी-राक्षस-भैरव-वेताल-ग्रह-राक्षसादिकान् क्षणेन हन-हन, भञ्जय-भञ्जय, मारय-मारय, शिक्षय-शिक्षय। महा-माहेश्वर-रुद्राव-तार! ॐ हुं फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्व-दुष्ट-जन-मुख-स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः ठं ठं ठं फट् स्वाहा।

विधि : मङ्गलवार को दिन भर व्रत रखने के बाद अर्ध-रात्रि में हनुमान जी के मन्दिर में सात हजार जप करने से सिद्ध होता है। सिद्धि के बाद हनुमान जी के सामने दशांश हवन करना चाहिए।

भूल-सुधार एवं शब्दार्थ

❀ श्री आर. के. कुमार, बी/३० डी. कैम्प, कोरबा (म. प्र.)–४९५६७९

(१) 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ९, पृष्ठ २१, 'गर्भ-स्तम्भन-मन्त्र' में 'शब्द भया सोचा' के स्थान पर 'शब्द भया साँचा' होगा। इसी मन्त्र के आगे की पंक्ति – 'दश त्रिया की चिन्ता, मेरी दश मांस' के स्थान पर 'दश त्रिया की चिन्ता, मेरी दश मास' होगा।

(२) 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ९, पृष्ठ २२, मन्त्र की चौथी पंक्ति– 'अष्ट-भुजी··ग्यारह रुद्र देव' छपा है। इसमें 'ग्यारह रुद्र देव' की जगह 'ग्यारह रुद्र सेव' होगा। सातवीं पंक्ति—'नव निधी षड्-दर्शनी' में 'षड्-दर्शनी' के स्थान पर 'षट्-दर्शनी'।

शब्दार्थ ('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ९, पृष्ठ १७-२१)

१ वासतीक : वास्तविक	११ निशान : एक तरह का तुरही बाजा
२ दीवना : दिया (दीपक)	१२ भुइयाँ : जमीन, धरती
३ करथ : करना	१३ सकल : समूचा या पूरा शरीर
४ तोला : तुम्हें	१४ फाँद : फन्दा
५ पठाऊँ : भेजूँ	१५ काकर : किसके
६ फोर : फाड़ना	१६ दाई : माँ
७ पाँगन : लगा होना	१७ विहँचे : सबेरे
८ बड़का : बड़ा	१८ मोर : मेरा
९ ताल : तालाब	१९ चुकबे : चुक जाना, फिर जाना
१० खाले : नीचे	२० खावे : खाना।

● ● ●

अनुभूत मन्त्र-प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री जयपाल सिंह

चाँदपुर कचहरी मार्ग, बुलन्दशहर (उ. प्र.)–२०३००१

१. हनुमान जी के 'वीर' की साधना

कुरु कामल चलै । नाटक व चैण्टक से चले । हनुमान के अखाड़े से चले । बावन सौ वीर, चौदह मसान चलें । ना चलें, तो बीबी फात्मा खातून के पाक दामन की दुहाई ।

विधि : उक्त मन्त्र की साधना-विधि मुझे अय्यूब नामक एक हाफिज जी से प्राप्त हुई है । आप ६०-६५ वर्ष के वृद्ध हैं । इस मन्त्र की साधना उनके एक परिचित व्यक्ति ने की थी । पूर्ण विधि इस प्रकार है—

शनिवार के दिन बिना किसी के टोका - टाकी किए किसी भी समय कुम्हार के यहाँ जाए । वहाँ से उसके बर्तन बनाने का डोरा तथा थोड़ी-सी गीली मिट्टी चुरा लाए । कुम्हार जहाँ बर्तन बनाते हैं, वहीं उसके चाक के पास गुँथी हुई गीली मिट्टी रहती है । गीली मिट्टी के पास ही एक मिट्टी का बर्तन भी रहता है, जिसमें पानी भरा रहता है और कुम्हार उसमें अपना हाथ धोता है । उस बर्तन से थोड़ा - सा पानी भी किसी बर्तन में ले आए, जिससे उस पानी से कुम्हार के यहाँ से लाई हुई गीली मिट्टी को आवश्यकतानुसार सानकर मिट्टी की लुगदी बना सके । मिट्टी तथा डोरे को घर लाकर चुपचाप कहीं एकान्त स्थान में रख दे ।

अब उसी शनिवार को या अगले शनिवार को उक्त गीली मिट्टी में से छोटी-छोटी १२० या १०० गोलियाँ बनाए । १० या २० गोलियाँ अधिक बनानी चाहिए, जिससे यदि कुछ गोलियाँ टूट जाएँ या उनमें दरार पड़ जाए, तो भी १०० से कम न हों । गोलियाँ 'तुलसी' या 'लाल चन्दन' की माला के दानों के बराबर या उससे कुछ बड़ी

बनाए। गोलियों को बीच में से दबाकर चौड़ी कर दे। गोलियों में कौए के पङ्ख से छेद कर, उन्हें सुखा ले। गोलियाँ बनाते समय गोलियों को किसी बर्तन या कागज से ढँककर रखे। खुली हवा में रहने से गोलियों में या तो दरार पड़ेगी या फिर वे टूट सकती हैं। गोलियाँ बनाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि गोलियों पर अपनी छाया न पड़े।

कुम्हार के यहाँ से डोरा लाए, उसी से गोलियों को पिरोकर माला बनाए। यदि डोरा छोटा और दोहरा हो, तो उसके एक कोने पर गाँठ लगाकर उसे एकहरा कर दे। इससे डोरा लम्बा हो जाएगा। डोरा छोटा न पड़े, इसलिए गोलियों को दबाकर चौड़ा किया जाता है। अब इस माला को मिठाई के किसी खाली स्वच्छ डिब्बे में या किसी अन्य स्वच्छ डिब्बे में, स्वच्छ रुई या स्वच्छ कपड़े के ऊपर रखे, जिससे वह टूटने न पाए।

किसी 'शनिवार' से ही साधना प्रारम्भ करे। यदि शुक्ल-पक्ष हो, तो अति उत्तम। साधना हेतु एकान्त स्थान को खोजे। साधना का स्थान ऐसा होना चाहिए, जहाँ प्रातः-काल सूर्य भगवान् निकलते हुए स्पष्ट दिखाई देते हों। साधना के लिए एक जोड़ा नया कपड़ा या पुराना धोकर स्वच्छता से रखे। इन्हें पहन कर साधना करे। 'आसन' के लिए आसन के बराबर कपड़ा और पूजा - सामग्री रखने के लिए दूसरा कपड़ा रखे। 'नैवेद्य' के लिए सवा पाव सूखी मिठाई पाँच प्रकार की, नारियल का एक सूखा गोला होना चाहिए। नित्य स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहन कर सूर्योदय से पूर्व उस स्थान पर जाए, जहाँ साधना करनी है।

सूर्योदय से कुछ पूर्व वस्त्र उतार कर पूर्णतया नग्न होकर स्वच्छ कपड़े पर बैठे। पूजा - सामग्री अपने सम्मुख स्वच्छ वस्त्र पर रख ले। जैसे ही सूर्य भगवान् निकलते हुए दिखाई पड़ें, वैसे ही पूर्व-निर्मित 'मिट्टी की माला' से जप प्रारम्भ कर दे। 'माला' के दानों को बहुत सावधानी से स्पर्श करते हुए जप करे। 'माला' को हाथ में लटका कर जप न करे, अन्यथा 'माला' टूट सकती है। साधना के बाद 'माला' को सावधानी से डिब्बे में तथा पूजा - सामग्री को एक थैले में रख लेना चाहिए। इस प्रकार सात दिन जप करना चाहिए।

सातवें दिन 'जप' पूरा होने के पूर्व हनुमान जी के 'वीर' का दर्शन होगा। उनसे डरे नहीं। जप को पूरा कर, 'माला' को छोड़कर बाँएँ हाथ में सूखे नारियल के गोले को पकड़े और दाएँ हाथ की मुट्ठी से उसके दो टुकड़े करे। एक टुकड़ा 'वीर' को दे और दूसरा टुकड़ा तथा शेष पूजा-सामग्री एक डिब्बे में अच्छी तरह से बन्द करके रखे। डिब्बे को बाहर से अच्छी तरह से सील कर उसे ऐसे स्थान पर गाड़ें, जहाँ धूप या पानी न जाए। जब तक यह सामग्री गड़ी रहेगी, तब तक 'वीर' प्रयोग-कर्त्ता के साथ रहेंगे और उसके द्वारा स्मरण करने पर अभीष्ट कार्यों को पूरा करेंगे।

२. वशीकरण-प्रयोग

(१) आगिशनी माल खानदानी। इन्नी अम्मा, हव्वा यूसुफ जुलैखानी। 'फलानी' मुझ पै हो दीवानी। बरहक अब्दुल कादर जीलानी।

विधि : यह प्रयोग भी मुझे हाफिज जी की कृपा से प्राप्त हुआ है। पूरा प्रयोग २१ दिन का है, किन्तु ११ दिन में ही इसका प्रभाव दिखाई देने लगता है। इस प्रयोग का दुरुपयोग कदापि नहीं करना चाहिए, अन्यथा स्वयं को हानि भी हो सकती है। साधना - काल में मांस, मछली, लहसुन, प्याज आदि वस्तुओं का प्रयोग नहीं करना चाहिए। दूध, दही, घी आदि का भी प्रयोग नहीं करना चाहिए। स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहन कर साधना करनी चाहिए। पवित्रता का विशेष ध्यान रखना चहिए। लम्बी धोती या स्वच्छ वस्त्र को तह-मद की तरह बाँध कर साधना करनी चाहिए। शेष बची हुई धोती या कपड़े को शरीर पर लपेटते हुए सिर को ढँक लेना चाहिए। एक ही कपड़े से पूरा शरीर ढँकना चाहिए, जैसे हिन्दू-स्त्रियाँ पहनती हैं।

उक्त मन्त्र की साधना रात्रि में, जब 'नमाज' आदि का समय समाप्त हो जाता है, तब करनी चाहिए। साधना करने से पहले मुसलमानी विधि से वजू करे। हो सके, तो नहा ले। जप या तो हिन्दू-विधि से करे या मुसलमानी विधि से। हिन्दू - विधि में माला के दाने अपनी तरफ घुमाए जाते हैं। मुसलमानी विधि में माला के दाने अपनी तरफ से आगे की ओर खिसकाए जाते हैं। प्रति-दिन

११०० बार जप करे। यदि ११ दिन से पहले 'साध्य' आ जाए, तो न तो अधिक घुल - मिल कर बात करे, न ही किसी प्रकार का क्रोध करे। कोई बहाना बनाकर उसके पास से हट जाए। यदि ११ दिन में कार्य न हो, तो २१ दिन तक जप करे। मन्त्र में 'फलानी' की जगह 'साध्या' का नाम लेना चाहिए।

(२) काला मर्यीयो इल इजामा वहैया रमीम।

विधि : उक्त मन्त्र 'कुरान शरीफ' के २३ वें 'पार' में है। हाफिज जी से मैंने इसका सही उच्चारण पूछा, तो उन्होंने उक्त प्रकार से बताया था। साथ ही, हाफिज जी ने यह भी बताया था कि इस मन्त्र का दुरुपयोग कदापि न करे, अन्यथा स्वयं को भी हानि हो सकती है।

साधना में एक मिट्टी का चौड़ा बर्तन रखे। बर्तन में हवा जाने के लिए नीचे की ओर दो-चार छोटे-छोटे छेद करे। बर्तन में आम की लकड़ी के कोयले भर दे। कुछ कोयले अलग रख ले। बर्तन के कोयले जला कर एक बार 'बिस्मिल्लाह' पढ़े और ग्यारह बार 'दरूद शरीफ' पढ़े तथा खुदा से 'प्रयोग' की सफलता हेतु दुआ करे। फिर बाएँ हाथ में एक काली मिर्च तथा दाहिने हाथ में आम की लकड़ी का एक कोयला लेकर उक्त मन्त्र ४० बार पढ़े। काली मिर्च और कोयले को फूँक मारते हुए मिट्टी के बर्तन में जलते हुए कोयले पर डाले। यदि 'साध्य' का नाम ज्ञात हो, तो उसका नाम कभी-कभी ले ले। अन्यथा उसका स्मरण करे। इस प्रकार ११ दिनों तक करे। यदि बीच में 'साध्य' आ जाए, तो भी ११ दिन तक 'प्रयोग' करे। अधूरा न छोड़े।

३. रक्षा-प्रयोग

मोहम्मद चले दिसावरा, चारों रस्ते चाक चौबन्द। बिच्छू-ततैया, साँप-कुत्ते, चोर - जार, ठग - लुटेरे, दुर्घटना वगैरा सबका रास्ता और मुँह बन्द—'अमुक' दिन के लिए। कहै 'कबीर' धर्म पास से सङ्ग जिनके सत्य पुरुष हों। दुहाई साँचे नाम की है।

विधि : उक्त मन्त्र मुझे एक हिन्दू भगत जी ने बताया था। प्रयोग ४० दिन का है। पहले 'चन्द्र - ग्रहण' या 'सूर्य - ग्रहण' में उक्त मन्त्र को जप कर सिद्ध करे। फिर ४० दिनों का 'अनुष्ठान' करे। पहले दस दिन उक्त मन्त्र का १००० बार जप करे। फिर शेष तीस दिन ५, ७, ११ या २१ बार जप करे। यदि यह सम्भव न हो, तो ४० दिन नित्य १०१ बार जप करे। जप पश्चिमाभिमुख होकर जपे। अनुष्ठान-काल में मांस-मछली का प्रयोग न करे। बाद में आवश्यकता पड़ने पर मन्त्र का स्मरण करे। मन्त्र-स्मरण से सभी प्रकार से रक्षा होगी। घर से बाहर यात्रा पर जाए, तो उक्त मन्त्र ३ या ५ बार पढ़कर फूंक मारे। 'अमुक' की जगह जितने दिन के लिए घर से बाहर जा रहे हों, उससे एक या दो दिन अधिक कहे। इस प्रकार यात्रा करने से सभी प्रकार की बाधाएँ नष्ट होंगी। यात्रा सुरक्षित होगी।

४. मोहनी-प्रयोग

गुरसत गुरसत गुरु मनाऊँ। गुरु चरनन में शीश नवाऊँ। ऐड़ी छोड़ तलवा तक मोहूँ। नौ नारी अदक सुलैना। जो कोई तेरा मोहरा जोड़ै, सदन कातती का तकला तोड़ै। पीसती का चकला फटै। जङ्गल फिरती गिरद मोह, महलों की रानी मोह। वट का पात, दही का दौना। इतना करतब न करे, तो माता अञ्जनी तेरी दुहाई है।

विधि : उक्त मन्त्र को किसी मास के शुक्ल - पक्ष में सोमवार-मङ्गलवार दो दिन में १२ हजार बार जपे। फिर ४० दिन नित्य ५, ७, ११, ४१ या १०१ बार जपे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। आवश्यकता पड़ने पर मीठी वस्तुएँ, अंगूर, अमरूद पर उक्त मन्त्र पढ़कर 'साध्य' को खिलाए। 'साध्य' मोहित होगा। 'ग्रहण' आदि पर्व पर 'मन्त्र' का जप करता रहे।

५. सर्व-कार्य-सिद्धि जञ्जीरा मन्त्र

या उस्ताद बैठो पास, काम आवै रास। ला इलाही लिल्ला हजरत वीर कौशल्या वीर, आज मजरे जालिम शुभ करम दिन करै जञ्जीर। जञ्जीर से कौन-कौन चले? बावन भैरों चलें, छप्पन कलवा चलें। चौंसठ योगिनी चलें, नब्बे नारसिंह चलें। दिव चलें, दानव चलें। पाँचों त्रिरोम चलें, लांगुरिया सलार चलें। भीम की गदा चले, हनुमान की हाँक चले। नाहर की चाक चलै, नहीं चलै, तो हजरत सुलेमान के,तखत की दुहाई है। एक लाख अस्सी हजार पीर व पैगम्बरों की दुहाई है। चलो मन्त्र, ईश्वर वाचा। गुरु का शब्द साँचा।

विधि : उक्त मन्त्र का जप शुक्ल-पक्ष के सोमवार या मङ्गल-वार से प्रारम्भ करे। कम-से-कम ५ बार नित्य करे। अथवा २१, ४१ या १०८ बार नित्य जप करे। ऐसा ४० दिन तक करे। ४० दिन के 'अनुष्ठान' में मांस-मछली का प्रयोग न करे। बाद में रात को सोते समय मन्त्र का स्मरण कर सोए। जब 'ग्रहण' आए, तब मन्त्र का जप करे। यह मन्त्र सभी कार्यों में काम आता है। भूत-प्रेत-बाधा हो अथवा कोई शारीरिक - मानसिक कष्ट हो, तो उक्त मन्त्र ३ बार पढ़कर रोगी को पिलाए। मुकदमें में, यात्रा में--सभी कार्यों में इसके द्वारा सफलता मिलती है।

प्रचलित शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' पं. रामशङ्कर उपाध्याय
ग्राम रैका, पो. आथर, जि. बक्सर (बिहार)

१. आसन-बन्धन

जोगी बाँधो आसन बाँधो, मुख से बाँधो आग ।
पवन पवन से डाइन बाँधो, बन से बाँधो बाग ॥
हम हईं हनुमान के सेवक, हनुमान जी के चौकी लागल बा ।
सत-गुरु के वन्दे पाँव, जय गुरु प्रताप तोहार ॥१

२. लाठी या शस्त्र-बन्धन

आग बाँधो लाठी बाँधो और समुद्र - टापू ।
डाइनी के टोना बाँधो और बाँधो मकू ॥
हुरङ्ग - डुरङ्ग मन्त्र फेरो, मोर विद्या ना ।
कामरू-कामाख्या के विद्या, सत-गुरु के बन्दे पाँव ।
हे गुरु ! प्रताप तुम्हार ॥

३. टोना-निवारण

इतिर बाँधो, तीतिर बाँधो । डाइनी के टोना बाँधो और बाँधो सियार । जय देवी गौरा - पार्वती की दोहाई, कामरू-कामाक्षा की विद्या पाई । सत-गुरु के वन्दे पाँव । हे गुरु ! प्रताप तोहार ।

४. भूत-टोना या आकस्मिक रोगोत्पात-निवारक मन्त्र

चकमक चाँद - सूरज की ज्योति, बैठल देव गरे गज-मोती । मोरा आँखी बसे दुखारी । भूत दुःख चिन्हाव रे

कालिका कङ्कार, मान्दती विहीन। सत-गुरु के वन्दे पाँव, हे गुरु ! प्रताप तोहार ॥

५. रोक-शोक, जादू-टोना-निवारक मन्त्र

छोटी मुटी बामति रौना भौना। घर के भतार बिलारी के छौना। चट से जइहें, पट से मरिहें, ओरिया तर मटकइहें। गाँव के बाहर दुश्मन देखि के चलि अइहें हमारे पास। मोर विद्या ना, कामरू-कामाख्या के विद्या। हे गुरु ! प्रताप तोहार ॥

विधि : मन्त्र क्रमाङ्क १ से ५ तक की सिद्धि में विशेष विधान नहीं है। इन्हें अच्छी तरह कण्ठस्थ कर नवरात्रि, ग्रहण या पर्व-योग में मन्त्र पढ़ते हुए 'हवन' करे। मन्त्र सिद्ध हो जाएँगे।

६. कहीं से कोई वस्तु मँगाने का मन्त्र

ओ मसान, कुरु कुरु, कुरु कुरु कुर्वः, सम्यता आसन समेत, ओ मसान ! हस्तेन ॥

विधि : श्मशान में या किसी निर्जन-स्थान में श्मशान - भस्म को वृत्ताकार जमीन पर फैलाकर बैठने का आसन बना ले। तत्पश्चात् आसन के सामने श्मशान-भस्म से ही एक 'आयत' बनाए। 'आयत' के चारों कोनों पर गो - घृत का दीप जलाए और दीप जलाते समय उक्त मन्त्र पढ़े। फिर आँखें बन्द कर एकाग्र - चित्त से उक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे। मन्त्र - जप की अवधि में दिव्य ज्योतियों का दर्शन एवं अनेकों आवाजें सुनाई देंगी, उनसे डरे नहीं, निर्भय रहे। यदि कोई कुछ माँगने को कहे, तो कहे कि—"सदा साथ रहो और मेरा कार्य करो।" इससे इष्ट - सिद्धि होगी। फिर जब कभी कोई वस्तु मँगानी हो, तो पवित्र होकर शुद्ध स्थान पर बैठ जाए और एक शुद्ध चादर से अपना शरीर ढँके। हाथ चादर के भीतर रखे। उक्त मन्त्र पढ़कर ईप्सित (मन - चाही) वस्तु का नाम ले। वह वस्तु हाथ में आएगी। यदि कोई बड़ी वस्तु या कीमती वस्तु मँगानी हो, तो उसकी कीमत चादर के एक कोने में लपेट कर मन्त्र पढ़े और इष्ट से ईप्सित

वस्तु खरीद कर लाने को कहे। 'इष्ट' चादर से कीमत ले लेगा और कुछ देर बाद वह वस्तु आपके इच्छानुसार 'गुप्त-स्थान' में रख देगा। 'गुप्त - स्थान' बगल का कोई कमरा होना चाहिए, जिसमें किवाड़ बन्द हो।

उक्त मन्त्र द्वारा अनेक चमत्कार किए जा सकते हैं। जैसे भोजन की सामग्री में वृद्धि या इच्छानुसार अन्य चमत्कार।

कुछ टोटके

(१) **मोहन-मन्त्र**—दाएँ हाथ की कनिष्ठिका का रक्त और कस्तूरी मिलाकर माथे पर तिलक करे। तत्पश्चात् जिस व्यक्ति के पास जाएंगे, वह मोहित होगा।

(२) **मृगी-निवारक**—शहद या केले में एक-दो खटमल एक सप्ताह तक मृगी के रोगी को खिलाए। मृगी दूर हो जाएगी।

(३) **मासिक - धर्म नियमित करना**—मासिक - धर्म की अनियमितता में पुरानी ईंट की नोनी एक सप्ताह प्रातः-सायं स्त्री को खिलाए। मासिक-धर्म नियमित हो जाएगा। परीक्षित है।

(४) **गर्भ-पात**—कभी-कभी गर्भ-पात कराना भी अत्यावश्यक हो जाता है। इसके लिए यह टोटका लाभ-दायक है। यथा—कबूतर की बीट छः ग्राम की मात्रा में प्रातः-सायं खिलाए। एक सप्ताह प्रति-दिन एक खुराक दे।

(५) **पक्षाघात (लकवा)**—यदि पक्षाघात एक सप्ताह के अन्तर्गत हो, तो यह नुस्खा बहुत लाभ करता है, अन्यथा धीरे - धीरे और अधिक दिन औषधि देनी पड़ती है।

खैनी १०० ग्राम, गुड़ ५० ग्राम और करुआ तेल २५ ग्राम एक में मिलाकर अच्छी तरह घोट ले, ताकि काफी महीन लेप बन जाए। इस लेप को पक्षाघात से प्रभावित अङ्ग पर मालिश करे। लाभ होगा।

सिद्ध जंजीरा मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री प्रदीपकुमार नन्दगोपाल व्यास
कोट मुहल्ला, डीडवाना (राजस्थान)

१. भूत-प्रेत-बाधा-नाशक मन्त्र

(१) बिसमिल्ला रहमान रहीम। नमो सत्य नाम आदेश गुरू कुं। आव आव मम्मम्दा पीर, दिल्ली के पीर। गढ़ गजनी के पीर, तुरकणी के पूत ! एक लाख असी हजार जञ्जीर बँधो। बँधो भूत-प्रेत बँधो। वोत्तर चाल के परैत बँधो। सोल से हाक मार बँधो। चोस्ट योगनी बँधो। बावन वीर बँधो। नव से नारसिंह बँधो। छपन से कलवा बँधो। एक लाख मुसाण मुसाणियाँ कुँ बँधो। चौरासी सिध बँधो। दानव बँधो, राक्षस बँधो, पीर बँधो। अष्ट कोट भैरव बँधो। रावण चँडे, महरावण बँधो। चोरासी चाल के छल - छेपर - छाया बँधो। डाकणी-साकणी बँधो। जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र कु बाँधो। द्रीठ-मुठ कु बँधो। भैंसासुर दानव कुँ बांधो। मम्मम्दा पीर, गढ़ गजनी के पातसाह, तुरकणी के पूत ! खेड़े-खेड़े बँधो, गाँव-दर-गाँव बँधो। मुलक-दर-मुलक, देश - परदेश बँधो। या गाँव की शीव बँधो। या गाँव नखासा समेत चहु खुण बँधो। या भोला की गली कुम्चली बंधो। या घर का नीकास समेत आगा-पीछा बँधो। या घर का बाँया-दाहिणा बँधो। या घर का चाउ खुण बँधो। ये मानवी का पीण्ड बँधो। ईश मानवी का पीण्ड में छल-छेदर-छाया बंधो। बेग बँधो, बँधो मम्मम्दा पीर, गड गजनी के पातसाह, तुरकणी के पूत ! एक लाख अस्सी हजार जञ्जीर बँधो। एक लाख अस्सी हजार पीर आग चलै। एक लाख अस्सी हजार पीर पीछ चलै। एक लाख अस्सी हजार पीर दस्त पर चलै। एक लाख अस्सी हजार पीर दीस्त चुर चलै। वेग चलै, हमारा चलाया वेग चलै। मम्मम्दा पीर, गढ़ गजनी के पातसाह, तुरकणी के पूत ! एक लाख अस्सी हजार पीर ओर मका-मदीना सु चढ़ै। एक लाख अस्सी हजार पीर ओर त्रीया राज सु चढ़ै। एक लाख अस्सी हजार पीर ओर पीछिम देश सु चढ़ै। एक लाख अस्सी हजार पीर ओर कावरू सु

चढ़ै। कुण कुण पीर चढ़ै। खाजे पीर चढ़ै। हसन-हुसैन चढ़ै। मरदान अली चढ़ै। शेरे अली चढ़ै। शेख सुलतानी चढ़ै। सैयद अहमन्द कवीर चढ़ै। हाक मारता चलै, तगत उठाता चले। समसेर करता चले। खुदा के अर, खुदाई के रसूल, शीजदा करता चलै। अपणे गुरु उस्ताद को सिजदा करता चलै। अपणे देन - ईमान कुँ सीजदा करता चलै। धरती धुँधकार करता चलै। भूत-प्रेत कूँ पकड़ता चलै। जीन्द-खवीस कुँ पकड़ता चलै। देन-दानव कुँ पकड़ता चलै। डाकणी - साकणी कुँ पकड़ता चलै। ओपरी-पराई कुँ पकड़ता चलै। स्यारी स्यीकोतरी कुँ पकड़ता चलै। जादु-टुणा कुँ पकड़ता चलै। हमारा कडाया वेग काडो। हमारा कडाया वेग न काडो, तो दुहाई खुदा कीर खुदा की, रसूल की। हमारा कडाया वेग काडो। हमारा कडाया वेग न काडो, तो दुहाई भानु सुलतान की। हमारा कडाया वेग काडो। हमारा कडाया वेग न काडो, तो दुहाई सलेमान पेगम्बर की। हमारा कडाया वेग काडो। हमारा कडाया वेग न काडो, तो दुहाई सैयद अहम्मद पीर की। हमारा कडाया वेग काडो। हमारा कडाया वेग न काडो, तो दुहाई एक लाख अस्सी हजार सहवा की ईल्ला ईल्लाह ईल्लीलाह मम्मम्द रसुलुला है।

विधि : उक्त जञ्जीरा मन्त्र को वृहस्पतिवार से आरम्भ कर ४१ दिन नित्य १०१ बार पश्चिमाभिमुख होकर जपे। लोबान का धूप दे। ब्रह्मचारी रहे। ४१ दिन के जप के आदि और अन्त में सवा पाव चावल, सवा पाव शक्कर, सवा पाव घी का मलीदा चढ़ाकर फकीर को दे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। फिर आवश्यकतानुसार प्रयोग करे।

(२) बिसमल्ला रहमान रहीम। सैयद वीरानावाला, भोला नङ्गी पीठ पीलाण गोड़ा। उलटा घोड़ा, उलटा जीण, उलटा चल वीराने पीर। सवा सेर का तोसा खाय, अस्सी कोस का धाव जाय। अग्र भेजूं, अगर जाय। मग्र भेजूं, मग्र जाय। पुरब भेजूं, पुरब जाय। पछिम भेजूं, पछिम जाय। उत्तर भेजूं, उत्तर जाय। दखण भेजूं, दखण जाय। तम चलता कोण चल। शीत्तर से लार चल। वत्तर सव लीन चलै। वाई सै खाजा चल। सवा लाख सैयद चल। काँहाँ कुँ चलै? कावरू देश कमक्षा देवी को बन्द करने कुँ चल। क्या-क्या ले चल?

सित्तर समण की बेड़ी ले चल। सवा समण की हतकड़ी ले चल। हात डाल हतकड़ी, पग डाल बेड़ी, गल डाल जञ्जीर। सत्तर स बेलीयाँ कुँ पकड़ कर ल्याव रै वीराना पीर। भागा नाटा भूत कुँ, पलीत कुँ, जीन्द कुँ, खईस कुँ, देवी कुँ, परी कुँ, मड़ा कुँ, मसाण कुँ, डङ्कणी-सङ्कणी कुँ, चुड़ी कुँ, चुड़ैल कुँ, काला-गोरा सेतर पाल कुँ, खटखट टङ्क पीछाड़। बेग कर बन्ध ल्याव। ईस गड़ी, ईस सायत जाहाँ ईस काया का चोर होय, जासु ल्याव हमार हाजर करो। सीस खीलावो, मुख बोलावो, तो बीबी फातमा का दुध पीया पखाण ख्वार तुमारी कार। जो लोप तुमारी कार, जाकु वाल - जाल भसम कर राल। रहीम-करीम मुरान-मुरतज्या अली मददगार वा हक कलमा अजमत अल्ला हो अल्ला मम्मम्द पाक रसुलील्ला।

विधि : उक्त मन्त्र को गुरुवार से गुरुवार तक ८ दिन १०१ बार नित्य जपे। सवा पाव चावल मिश्री और गरी के गोला सहित चढ़ाए। पूजा के आदि और अन्त में फकीरों को चना दे। घृत का दीपक जलाए। पान, फूल, लोबान का धूप दे। लौंग, इलायची, बताशा रखकर मन्त्र जपे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। फिर आवश्यकतानुसार कार्य करे।

२. गड़ा धन प्राप्त करने का मन्त्र

बिसमिल्ला रहमान रहीम। या वसीर खुदा कार्मिल। पिर हस्न वसरी रा रहम कर, मुज पर अली मोहम्मद मुस्तफा के वास्ते। मैं होता हूँ मेहनत के आसीर, खोल दे मुज पर खजाने ख्वाजा वसीर दिन किब्रिया के वास्ते।

विधि : उक्त मन्त्र का जप गुरुवार से आरम्भ करे। पश्चिम-मुख होकर सायं - काल किसी नदी या तालाब के किनारे १०८ बार जपे। प्रत्येक मन्त्र पर पानी में फूंक मारे। लोबान का धूप ४१ दिन तक करे। जेब में रेवड़ी रखे, अगर कोई मन्त्र जप कर घर वापस आते समय माँगे, तो रेवड़ी दे दे। जल से आवाज आती है। अथवा जल में कोई खड़ा हुआ दिखता है। जिस पर कृपा होती है, उसी को दिखाई देता है। आवाज आती है कि अमुक स्थान से निकाल लो।

३. डाकनी, सीमारी, भूत-प्रेत-बाधा-निवारक हनुमान मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू को। डाकनी - सीमारी कीन्ने मारी ? यति हड़मन्त ने मारी। कहाँ जाय ? दवकी किनोने देखी ? यति हनुमान ने देखी, सातवें पाताल गईं। सातवें पाताल से कोन पकड़ ल्याया ? यति हड़मन्त पकड़ ल्याया। यति हड़मन्त वीर पकड़ ल्याय के एक ताल दे। एक कोठा तोड़े, दो ताल दे। दो कोठा तोड़े, तीन ताल दे। तीन कोठा तोड़े, चार ताल दे। चार कोठा तोड़े, पाँच ताल दे। पाँच कोठे तोड़े, छः ताल दे। छः कोठे तोड़े, सातवाँ कोठा खोल देखे, तो कोन-कोन खड़े हैं ? डाकिनी, सीमारी, भूत, प्रेत चले। यति हनुमन्त तेरे झारे से चले। ओम नमो आदेश गुरू को। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ॥

विधि : उक्त मन्त्र को २१ दिन नित्य १०८ बार हनुमान जी के मन्दिर में जपे। घी का दीपक और अगर-बत्ती जलाए। २१ वें दिन १ नारियल चढ़ाए। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। फिर आवश्यकता-नुसार कार्य करे।

४. पेट-पीड़ा-नाशक मन्त्र

कङ्कर की सीला ऊठी, पथर का चीरा। सीता माता काठन बैठी, कठ पैठ का पीड़ा। सीता तेरा सत हेरे, अरजन तेरा वाण। लाल वीकट गोला गील। फीर राम की आण। चाँदी का कठोरा, सोना का थाल। सीता माता पुरसण लागी, माहादेव खा जाय। पेठ की पीड़ भस्म होय जाय। शबद साँचा, पिण्ड काचा। चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। राजा रामचन्दर का वचन, जुगो-जुग साचा।

विधि : उक्त मन्त्र का जप शुक्ल-पक्ष के मङ्गलवार से प्रारम्भ करे। ८ दिन तक नित्य १०८ जप करे। आठवें दिन दीपक, नारियल चढ़ाए। जप हनुमान जी के मन्दिर में करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। सभी प्रकार की पेट-बाधा हेतु इसका प्रयोग कर सकते हैं।

चार शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री रामकृष्ण शर्मा
सभापुर, पो. वीरसिंहपुर, जि. सतना (म. प्र.)–४८५२२६

१. सर्व-व्याधि-विनाशन मन्त्र

"ॐ नृसिंह। नृसिंह की महतारी, कातय सूत, नहिं सूत के पागा। बिना इसे बाँधै को? नृसिंह को कहती है महतारी—दादू करत मो बादी मारो। करूँ बंदिनियाँ राड़। औघट केर खिलाड़ी मारे, चिटका केर मसान। भूत-प्रेत संहारि के मारे। करुवा देव उड़ाव। हाक पड़ी नृसिंह की—जाग-जाग वीर वहा हनुमान।"

विधि : नीबू में मन्त्र पढ़कर झारे, तो सभी प्रकार की व्याधि दूर होती है।

२. महा-काली बाँध मन्त्र

"ॐ क्लीं क्लीं क्लीं। काली, महा-काली, ब्रह्मा की बेटी—खाय कलेजा, ठोके थाली। आताल बाँध, पाताल बाँध, गुनियाँ का गुन बाँध, चलता का पैर बाँध, दानव बाँध, प्रेत बाँध, भूत बाँध, सात सौ चुरयल बाँध, हाथ पर का खप्पर बाँध, हाथ जरे न काड़ा और नव मन का गोला बाँध। कै मने का गोला, कै मने का जञ्जीर? हाथे पड़ी हथकड़ी, पाए पड़ी जञ्जीर। सबका इनका बाँध कै, अपनी मूठी में लाई। तब सच्ची काली कहाई। हे सत्य काली की दोहाई। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र को ग्रहण - काल, दीपावली, होली में सिद्ध करे। ध्यान रहे कि सिद्ध करते समय त्रुटि न हो। नहीं तो, सङ्कट हो सकता है। प्रयोग के समय नींबू को अभिमन्त्रित कर बाँधे या अभीष्ट स्थान में फेंके।

३. हनुमान बाँध मन्त्र

"ॐ वीर हनुमते नमः। ॐ हनुमत वीर, धरै ना धीर। बाँधै नदी-नार का नीर। बारा कोस अगाड़ी बाँध, बारा कोस पछाड़ी बाँध।

चार खूंट, चौबन्दी बांध। आकाश बाँध, पाताल बाँध। देखते की नजर बाँध। मारते की जबान बाँध। चलते का पैर बाँध। शैतान बाँध, टोना बाँध, खप्पर बाँध। मूठ बाँध, भूत बाँध, प्रेत बाँध। सोदिन बाँध, डाइन बाँध। बुध अपनी मूठी कर लाव। नही वीर हनुमान कहाव। मेरी भगत, वीर हनुमान की शकत। महा-वीर हनुमान की दोहाई।

विधि : १००८ बार जप कर ग्रहण - काल, एकादशी, होली, दीपावली आदि में सिद्ध करे। प्रयोग के समय मन्त्र पढ़कर नींबू को बाँधे।

४. हनुमान जी का शत्रु-नाशक मन्त्र

"ॐ हनुमान वीर नमः। ॐ नमो वीर, हनुमत वीर, शूर वीर, धाय - धाय चलै वीर। मूठी भर चलावै तीर। मूठी मार, कलेजा काढ़ै। क्रोध करता, हियरा काढ़ै। मेरा वैरी, तेरे वश होवै। धर्म की दुहाई। राजा रामचन्द्र की दोहाई। मेरा वैरी न पछाड़ मारै, तौ माता अञ्जनी की दोहाई।

विधि : काले उड़द को अभिमन्त्रित करके शत्रु की ओर फेंके। इससे शत्रु का नाश होगा। प्रयोग करते समय मन्त्र का जप २१ से लेकर १०८ बार करे। पहले होली, ग्रहण - काल, दीपावली, एकादशी में सिद्ध कर ले। जप-संख्या १००८।

प्रेत-जागृति

अथवा

श्मशान-जागृति

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री अनिल गोविन्द बोकील
१८/१ ड, गोंधळेनगर, हडपसर, पुणे (महा-राष्ट्र)-४११०२८

[उक्त जागृति का विधान सुरक्षित रहे, केवल इसी उद्देश्य से प्रकाशित किया जा रहा है। पाठकों से अनुरोध है कि कृपया ज्ञान-वर्द्धन हेतु ही इसे पढ़ें। इसे करने के पीछे नहीं पड़ेंगे। यदि कोई करना ही चाहें, तो कम-से-कम किसी जानकार अधिकारी व्यक्ति के संरक्षण में ही करेंगे। अन्यथा गम्भीर सङ्कट में पड़ सकते हैं, जिसके लिए लेखक, सम्पादक, प्रकाशक कोई भी जिम्मेदार नहीं होगा।

—प्रस्तुत-कर्त्ता]

मन्त्र १ : "दैत खड़ा, भूत खड़ा, मनी मशान खड़ा। चौथे कीले पे निशान कौन लगाया ? तालन की माला, बल की विद्या फेर दो। गुरु की शपथ, मेरी भगत। चलो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।"

मन्त्र २ : "भुली मशान ठिकाळा। दैत ताल जगमऊ, मशान जगाऊ। गुरु की शपथ, मेरी भगत। चलो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।"
(उक्त दोनों मन्त्र प्रेत-जागृति व श्मशान-जागृति के हैं।)

मन्त्र ३ : श्मशान-धक्का-निवारण मन्त्र—"काळ-भैरव ! कपिला जड़ भैरव ! चौखड श्मशान में भोजन कर। राजा राज करी। काळ-भैरव ! बता तेरा रूप। तेरे कू बताऊँगा गुगुल की धूप। जात-जोड़ी। जहाँ भेजे, वहाँ जाना। बन्द मा की बाहत्तर कोठड़ी में घुस जाना। जञ्जीरवाले की जञ्जीर खोलना। भूत-पलित का चौखा उखाड़ना। चुड़ेल दासीन माते की चौकी उखाड़ना। बड़े - बड़े देवी-

देवताओं की चौकी उखाड़ना। ताल - भिवेरी पैकी घर फेक देना। न फेक दे, तो सख्खे माँ के खाट पर जाएगा। गुरू की शपथ, मेरी भगत। चलो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

मन्त्र ४ : प्रेत गिराने का मन्त्र—"चण्डी, चण्डी, महा-चण्डी। मी करीन मेल्यावर वात। अन् तुला नेऊन दावीन श्मशानान्त।"

विधि : पहले उक्त चारों मन्त्र किसी भी ग्रहण-काल में १०८ बार जप कर ग्रहण-सिद्धि करे। 'जागृति' का यह विधान शनिवार या मङ्गलवार को करते हैं। इसके लिए पहले श्मशान में जाकर एक महीने के अन्दर गड़े हुए प्रेत की जगह देख आए। 'प्रेत' का पोस्ट-मार्टम (शव-विच्छेदन) न हुआ हो। 'जागृति' की पूर्व - तैयारी निम्न प्रकार करे—

सामग्री : (१) श्मशान में गड़े हुए 'प्रेत' के आस-पास एकाध पेड़-पौधा होगा। उसकी एक डाली ले आए या श्मशान में जाकर 'खापर-खुरी' (खप्पर का एक टुकड़ा) ले आए।

(२) **श्मशान-बेरड :** यह अत्यन्त महत्त्व - पूर्ण चीज है। बकरा काटते समय १/२ किलो काले उड़द उसकी गर्दन के नीचे इस प्रकार रखे कि बहनेवाला रक्त उड़द पर गिरे। इस रक्त में भिगोए उड़द ही 'श्मशान-बेरड' कहलाते हैं।

विशेष : 'श्मशान-बेरड' शीघ्र ही खराब हो जाते हैं। अतः जिस दिन जागृति करनी हो, उसी दिन इन्हें प्राप्त करे।

(३) चना आधा किलो और 'मद्य' की एक बोतल।

(४) १०-१५ नीम्बू।

(५) हल्दी-कुंकुम, अगर-बत्ती, अक्षत आदि।

जिस दिन 'जागृति' करनी हो, उस दिन—(१) श्मशान से लाई 'खापर-खुरी' (पेड़ की डाली) मन्त्र १ एवं मन्त्र २ से इक्कीस-इक्कीस (२१-२१) बार अभिमन्त्रित करके रखे।

(२) 'श्मशान-बेरड' को भी मन्त्र १ एवं मन्त्र २ द्वारा २१-२१ बार अभिमन्त्रित करे। इसे करने में कुछ कठिनाई होती है क्योंकि मन्त्र-जप कर 'बेरड' पर फूंक मारने से दुर्गन्ध को सहना पड़ता है।

(३) 'जागृति' के समय जितने व्यक्ति उपस्थित हों, उन सबके लिए १-१ नीम्बू मन्त्र ३ (श्मशान-धक्का-निवारण मन्त्र) से २१ बार अभिमन्त्रित करे। प्रत्येक व्यक्ति को ऐसा १ नीम्बू जेब में रखने को देना चाहिए। यह नीम्बू जमीन पर गिरना नहीं चाहिए, यह बात प्रत्येक व्यक्ति को बता दे। स्वयं भी एक नीम्बू साथ में रखे।

(४) मन्त्र ४ (प्रेत गिराने का मन्त्र) से २१ बार अभिमन्त्रित एक नीम्बू अलग से अपने साथ रखे। इसे 'जागृत प्रेत' पर फेंकने से वह वापस चला जाता है।

सिद्ध 'श्रीराम-रक्षा-स्तोत्र' (सिद्धि-विधान, 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ ६७ में) द्वारा अभिमन्त्रित नीम्बू से भी उक्त कार्य होता है।

उक्त सभी वस्तुएँ श्मशान में रात्रि ९ बजे के बाद ले जाए। 'श्मशान-बेरड' की थैली अपने पास न रखे—अन्य व्यक्ति के हाथ में दे। यदि अपने पास ही रखना हो, तो 'बेरड' पूर्ण - तया बन्द होना चाहिए। प्लास्टिक की बैग में उसे पूर्णतः बन्द कर सकते हैं।

अब 'खापर - खुरी' (डाली) द्वारा गड़े हुए प्रेत को घड़ी - वत् (क्लॉक-वाइज) क्रमशः इस प्रकार 'रिङ्गण' (वृत्त) मारे कि थोड़ी-सी जगह खुली रहे ? देखें चित्र—'१' = खुली जगह। यदि पूरा श्मशान जागृत करना हो, तो सम्पूर्ण श्मशान को वृत्त मारे।

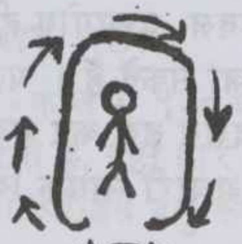

चित्र १

चेतावनी : यदि इस समय 'श्मशान - बेरड' प्रयोग - कर्त्ता के पास हो और वह जरा-सा भी खुला हो, तो उसके आकर्षण से प्रेत तुरन्त उठ खड़ा होगा—अगला विधान पूर्ण होने से पहले ही और ऐसा होना ठीक नहीं।

अब हल्दी-कुंकुम, अक्षत, अगर-बत्ती आदि से प्रेत की पूजा करे। फिर वहाँ से थोड़ी दूर जाकर बैठे और वहाँ से प्रेत की ओर 'श्मशान-बेरड' के ८-१० दाने फेंके। इससे पहले हवा जोर से आँधी-जैसी बहने लगती है। पेड़ों के पत्ते हिलने लगते हैं। पौधे डोलने लगते हैं। बाद में 'सूंऽऽसूंऽऽऽ-घऽर्रऽऽ' जैसी भय-प्रद आवाजें आती हैं। साथ ही जमीन में से 'प्रेत' उग्र रूप में उठकर खड़ा होकर, प्रयोग-कर्त्ता के सामने आ जाता है। उसके सामने आते ही, उससे उसका नाम पूछना चाहिए। नाम बताने पर, उससे तीन बार यह वचन ले कि "तीन तालियाँ बजाकर इस नाम से जब पुकारूँ, तब प्रत्यक्ष होकर बताया हुआ कार्य पूर्ण करना।" वचन लेने के बाद आधा किलो चना और मद्य की बोतल उसे दे दे। यह सारी क्रिया कितनी रोमाञ्चक और भय-प्रद है, यह बताने की आवश्यकता नहीं।

जब तक 'प्रेत' को कब्जे में रखे, उसे नित्य आधा किलो चना और बोतल देता रहे। सभी कार्य 'प्रेत' करेगा। जब भी उसे गिरा कर, वापस भेजना हो, तब मन्त्र ४ से या 'श्रीराम-रक्षा' से अभिमन्त्रित नीम्बू उसे मारे—'प्रेत' गिरकर स्व - स्थान में सदा के लिए चला जाएगा।

यदि 'प्रेत' मुक्ति चाहे, तो उसे किस प्रकार मुक्ति मिल सकती है—यह बात उसी से पूछ ले। 'प्रेत' को गिराने के बजाय, उसे मुक्ति दिलाना उत्तम है।

विशेष : उक्त प्रकार की अघोर-विद्या दुर्भाग्य से ऐसे व्यक्तियों के पास है, जो उसका केवल दुरुपयोग ही करते हैं। वस्तुतः ऐसी विद्या से सत्कर्म भी किए जा सकते हैं। यहाँ तक कि 'जागृत प्रेत' की सहायता से प्रत्यक्ष ईश्वर-दर्शन तक कर सकते हैं और वह भी अति-शीघ्र। क्या इस दिशा में अघोरी साधक विचार करेंगे ?

पशु-सम्बन्धी शाबर व टोटका

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री अनिल गोविन्द बोकील

१. पशुओं का (गाय, भैंस आदि) दूध देना अचानक बन्द हो, तो—

पहिला गण गण्या गणपती । चौदा विद्यांचा सारथी । ॐ नमो आदेश गुरु जी को । कापूर कस्तुरी शेन्दराचा चारा । बसल्या गाई उठल्या पारा । गुराख्यांना विनन्ती करा । चारी सडाच्या कर मोकल्या धारा ।"

विधि : उक्त मन्त्र ग्रहण - काल में १०८ जप से सिद्ध करे। फिर समस्या - निवारण हेतु पानी, घास आदि अभिमन्त्रित कर पशु को खिलाए-पिलाए । पानी से मार्जन भी करे। कुछ ही दिनों में सुफल प्रकट होगा ।

विशेष : इस मन्त्र का प्रारम्भ "ॐ नमो आदेश......" से ही है, परन्तु प्रयोग के पहले 'गण चलाना' होता है। पहली पंक्ति का उच्चारण करना ही गण चलाना है ।

२. यदि पालतू पशु अस्वस्थ या किसी बीमारी से पीड़ित हो, तो—

ॐ नमो बली देहली, वावी देहली पराया । सारी साटकी पशू निको हो जाय ।।छू।।

विधि : पहले ग्रहण - काल में १०८ बार जप कर, मन्त्र सिद्ध करे। फिर जहाँ पशु बाँधे जाते हैं, वहाँ द्वार पर खड़े होकर उक्त मन्त्र से जल अभिमन्त्रित करे । इसे पीड़ित पशु को पिलाए । कुछ दिनों में ही पीड़ा दूर होगी ।

३. पागल कुत्ते का विष-निवारण

ॐ नमो कामरू देश, कामाक्षी देवी । जहाँ बसे इस्मायल जोगी । इस्मायल जोगी पाली कुत्ता । दश काली,

दश काम्बरी, दश पिली, दश लाल—इनको विष हनुमन्त हटे। रक्षा करे गुरू गोरखनाथ। वाल छू ॥

विधि : ग्रहण - काल में १०८ बार जप से पहले सिद्धि करे। फिर हाथ में भस्म (रक्षा) लेकर उक्त मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करे। जहाँ कुत्ते ने काटा हो, वहाँ इस भस्म से झाड़े। विष उतर जाएगा।

४. टोटका : हंसिनी कवड़ी

यह सफेद रङ्ग की, छोटी, हलकी व कोमल होती है। यदि प्राप्त हो, तो उसे शुद्धोदक से स्वच्छ कर, उसमें पारद (पारा या 'मर्करी') व ताम्बा ('कॉपर') भरे। 'लाख' द्वारा उसका मुँह बन्द करे।

यह कवड़ी मुँह में रखकर जो भी कार्य करेंगे, सफल होगा। सर्प-दंश होने पर विष जल्दी नहीं चढ़ता।

शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ६ : भूल-सुधार

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३४	१८	बारसवकी	बारसक्की

कुछ नाथ-पन्थी अस्त्र-विधान

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री अनिल गोविन्द बोकील

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७ में 'अस्त्र - विद्या' का उल्लेख हुआ है। अस्त्रों का विधान जानने के पूर्व कुछ बातें जानना आवश्यक है—

(१) श्रीगुरु द्वारा दीक्षित होने के बाद ही 'अस्त्र - विद्या' फलीभूत होती है। गुरु शिष्य की योग्यता देखकर ही 'अस्त्र-विद्या' प्रदान करते हैं।

(२) गुरु द्वारा 'अस्त्र-विद्या' प्राप्त होने पर, गुरु शिष्य को उसके प्रयोग करने की अनुमति कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में ही देते हैं।

(३) एक ही 'अस्त्र-विद्या' के अलग-अलग विधान होते हैं। जैसे 'सुदर्शन-चक्रास्त्र' का 'वैदिक विधान' और 'नाथ-पन्थी विधान' अलग-अलग हैं। इसी प्रकार 'पाशुपतास्त्र', 'ब्रह्मास्त्र' आदि 'अस्त्र - विद्या' के भी भिन्न-भिन्न विधान हैं। यहाँ पर केवल 'नाथ-पन्थीय विधान' ही दिए जा रहे हैं।

(४) 'अस्त्र-विद्या' का दुरुपयोग कदापि न करना चाहिए। अन्यथा स्वयं का ही अहित होता है।

१. श्रीसुदर्शन-चक्र-मन्त्र

ॐ नमो सुदर्शन-चक्राय, महा-चक्राय, शीघ्र आगच्छ आगच्छ, प्रगटय प्रगटय, मम (अमुकं) शत्रु काटय काटय, मारय मारय, ज्वालय ज्वालय, विध्वंसय विध्वंसय, छेदय छेदय, मम सर्वत्र रक्षय रक्षय, हुँ फट् ॥

विधि : किसी भी 'ग्रहण' में १०८ बार जप करने से उक्त मन्त्र की सिद्धि होती है। फिर गुरु के निर्देशानुसार विशेष परिस्थितियों में इसका 'प्रयोग' करे। 'मन्त्र'-जप करते हुए एक मुट्ठी मिट्टी शत्रु पर फेंके। शत्रु दूर हो, तो उसकी तरफ देखते हुए अथवा उसका नाम लेकर फेंके। 'श्रीसुदर्शन-चक्र-जागृति तथा रक्षण-प्रयोग', शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ७ में दिया गया है। उसे भी देखना चाहिए।

२. श्रीमहा-पाशुपतास्त्र

ॐ नमो पाशुपतास्त्र ! स्मरण-मात्रेण प्रकटय प्रकटय, शीघ्र आगच्छ आगच्छ, मम सर्व-शत्रु-सैन्यं विध्वंसय विध्वंसय, मारय मारय हुँ फट् ॥

३. ब्रह्मास्त्र

ॐ नमो ब्रह्माय नमः । स्मरण-मात्रेण शीघ्र आगच्छ आगच्छ, प्रकटय प्रकटय, मम सर्व-शत्रुं नाशय नाशय, शत्रु सैन्यं नाशय नाशय, घातय घातय, मारय मारय हुँ फट् ॥

विधि : उक्त दोनों अस्त्रों के सिद्धि - विधान तथा प्रयोग 'श्री-सुदर्शन-चक्र-मन्त्र'-जैसे ही हैं। पाठकों को ज्ञात होगा कि नव - नाथों का जब भी किसी से युद्ध होता था, तब वे भस्म की झोली बगल में रखते थे तथा भस्म को अभि-मन्त्रित कर 'अस्त्र - प्रयोग' करते थे। मिट्टी भस्म की तरह ही है।

४. यमास्त्र

ॐ नमो यम-देवताय नमः । स्मरण - मात्रेण प्रकटय प्रकटय । 'अमुकं' शीघ्र मृत्युं हुँ फट् ॥

५. आग्नेयास्त्र

ॐ नमो अग्नी-देवाय नमः । शीघ्रं आगच्छ आगच्छ मम 'अमुकं' शत्रुं ज्वालय ज्वालय, नाशय नाशय हुँ फट् ॥

विधि : उक्त दोनों मन्त्रों की विधि एक ही है। किसी ग्रहण में १०८ बार जप करे। फिर 'अमुकं' की जगह शत्रु का नाम लेकर १०९ बार मन्त्र-जप करे। शत्रु - बाधा की समाप्ति होगी। शत्रु को अत्यधिक क्लेश होगा।

• • •

नाथ-पन्थीय शक्ति-साधना

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री अनिल गोविन्द बोकील

'नाथ-पन्थ' के अनुसार देवी-शक्ति हममें ही होती है। इसे बाह्य विधि के द्वारा जागृत किया जा सकता है। यह साधना श्री मत्स्येन्द्र-नाथ जी ने भगवान् आदिनाथ से प्राप्त कर, गङ्गा - तट पर पूर्ण की थी और 'अस्त्र-विद्या' में शक्ति का आशीर्वाद प्राप्त किया था। बाद में श्री गोरक्षनाथ जी ने त्र्यम्बकेश्वर - क्षेत्र में गङ्गा - द्वार पर यही साधना पूर्ण की थी। इसे यहाँ ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत किया जा रहा है। निर्बल-हृदय व्यक्ति यह साधना न करे।

साधना-समय एवं स्थान : ब्राह्म - मुहूर्त प्रातः ४ बजे से ६ बजे तक। पहले मन्त्र को कण्ठस्थ करे। मङ्गलवार की पूर्णिमा में साधना प्रारम्भ कर ५१ दिनों तक करे। यह 'साधना' नदी के किनारे करनी चाहिए।

साधना-सामग्री : (१) लाल जासौन की ६ फीट लम्बी डालियाँ–२, (२) सफेद जासौन की ६ फीट लम्बी डालियाँ–२, (३) रक्त-गुञ्जा–५१, (४) केले का एक पत्ता, (५) ३ या ४ हाथ लम्बा - चौड़ा कम्बलासन, (६) काली मिट्टी और (७) पटकल के सात पत्ते।

मङ्गल-पूर्णिमा के पहले अर्थात् सोमवार की रात्रि में नदी-किनारे जहाँ साधना करनी है—जाए। ५१ रक्त-गुञ्जा साथ में रखे। जिस स्थान पर उपासना करनी है, वहाँ से ६ हाथ बाहर गोलाकार में एक-एक गुञ्जा रेती में गाड़े। पूर्व, पश्चिम और उत्तर दिशा में १३-१३ और दक्षिण दिशा में १२ गुञ्जा गाड़े। प्रत्येक गुञ्जा गाड़ते समय एक-एक भैरव का नाम ले। यथा—संहार-भैरव, उन्मत्त-भैरव।

अब दूसरे दिन अर्थात् मङ्गलवार की पूर्णिमा को स्नानादि के बाद माता-पिता, गुरु, गुरु-बन्धु और इष्ट को प्रणाम करे। जासौन की डालियाँ अपने साधना-स्थल के चारों ओर निम्न प्रकार गाड़े—

१. श्वेत जासौन की डालियाँ पूर्व व पश्चिम दिशा में १-१।

२. लाल जासौन की डालियाँ दक्षिण व उत्तर दिशा में १-१।

साधना पूर्ण होने तक उक्त डालियाँ ऐसी ही गड़ी हुई रहनी चाहिए। अब साधना-स्थल पर आसन बिछाए। उसके मध्य में केले का पत्ता रखकर, उस पर मिट्टी रखे। उस मिट्टी की इष्ट-देवता (श्रीकाली, तारा, बाला, श्रीविद्या आदि) की मूर्ति स्वयं बनाए। साधक मूर्तिकार न हो, तो भी हाथ-पाँव, सिर आदि अङ्ग यथा-शक्ति बनाए। एक बात ध्यान में रहे कि नाभि में 'विमला'-शक्ति होती है। अतः मूर्ति में नाभि बनाना न भूले। इस मूर्ति को आसन के मध्य से दो हाथ (३ फीट) पर पूर्व दिशा में रखे और यथा-शक्ति 'सोऽहं'-भाव से उसका पूजन करे अर्थात् पूजन के समय इष्ट से अभिन्न - भावना रखे। 'पटकल' के ७ पत्ते मूर्ति के चरणों पर रखे। अर्ध - पद्मासन में साधक इस प्रकार बैठे कि बाँयाँ पैर नीचे व दाहिना पैर ऊपर रहे। साधिका इसके विपरीत अर्ध - पद्मासन में बैठे। पूर्वाभिमुख बैठना चाहिए। फिर निम्न मन्त्र २१ बार पढ़कर शान्ति - स्तवन करे और प्रणाम करे—

सर्व - मङ्गल - माङ्गल्ये, शिवे सर्वार्थ-साधिके !
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि ! नमोऽस्तु ते ॥

अब मूर्ति की नाभि पर 'त्राटक' करते हुए निम्न शाबर-मन्त्र का ५१ बार जप करे—

श्री ॐ रिशीमानी दाबी रीक्षी क्रुण्ड ह्री द्रा या ना क्ष्मी र्क वृ क्रि प्र हू ज़ ह्या मृ स्व प्र ह्ला स्त्रोस्तो प्र व्र स्ते क्ष् णु ध्र द्र हिं गोस्ती मां गल्ये चंण्डी स्तु त्रें स्या णु ॥

फिर 'पटकल' के ५ पत्तों को उठा कर स्वयं खा ले और शेष दो पत्ते नदी में अर्पित करे।

इस प्रकार ५१ दिन उपासना करे। अन्तिम दिन मूर्ति की नाभि में से खद्योत के समान प्रकाश - मय बिन्दु बाहर निकलता हुआ दिखेगा। बाद में वह मूर्ति के पीछे जाएगा। तब निम्न मन्त्र का एक बार उच्चारण करे—

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं, करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि !
नैतच्छठत्त्वं मम भावयेथाः, क्षुधा-तृषार्त्ता जननीं स्मरन्ति ॥

उक्त मन्त्र का उच्चारण होते ही शक्ति-माता इष्ट-रूप में प्रत्यक्ष होंगी और निरन्तर बढ़ती जाएँगी, यहाँ तक कि आकाश तक व्याप्त दिखने लगेंगी। यह बड़ा ही भय-प्रद दृश्य होगा। फिर भी डरे नहीं, भागे नहीं। तुरन्त निम्न मन्त्र का एक बार उच्चारण करे—

श्री स्वा स्ती प्री अनवन्ते नमस्तु ते।

तुरन्त ही स्तोत्र भी पढ़े। यथा—

प्रचण्ड - चण्ड - मुण्डयोः, महा-बलैक-खण्डिनी।
हे न करुण्ड मुण्ड युग्रणे बलेक - दायिनी ॥
क्वचित्त्व शक्ति-कारणी, रमा-विलास-दायिनी।
सुदेस्तु कालिका समस्त - पाप - हारिणीत् ॥

इससे शक्ति-माता इष्ट-रूप में ही सौम्य एवं शान्त होकर सात्विक रूप में सामने खड़ी रहेंगी। यह भय-प्रद नहीं होगा, परन्तु उनके तेज से चौंधिया कर आँखें बन्द न करे। उक्त वरदान—इच्छित वर-प्रसाद माँग ले।

विशेष : शक्ति के किसी भी एक रूप में यह साधना की जा सकती है। यदि साधक दीक्षा-प्राप्त है, तो अपने गुरु से प्राप्त क्रमानुसार ही मूर्ति-पूजन करे। सर्व-श्रेष्ठ कौलाचार का पालन करनेवाले शाक्त बन्धुओं के लिए यह साधना त्वरित फल - दायिनी है। अपने पूज्य गुरुदेव की अनुमति से करे। पूजन में मांस-मद्यादि 'म'कार पूर्णतः वर्ज्य हैं।

शंखपुष्पी अनुभूत शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'वाणी-रत्न' श्री श्रवणकुमार सोनी
मालियों का मन्दिर, अलीगढ़, जि. टोंक (राजस्थान)-३०४०२३

शाखा होली, बन में फूली। ईश्वर देख, गोरजा भूली। जो कोई शाखा होली, आओ भाओ। राजा-प्रजा लागे पाव। सुते को जगा ले, जाते को मोड़ ले। नहीं मोड़े, तो शङ्कर महा-देव की जटा टूट, धरती पड़े। शब्द साचो, पिण्ड काचो। फुरो मन्त्र, ईश्वर वाचा।

विधि : शुभ मुहूर्त में आरम्भ कर, नियमित रूप से २१ दिनों तक ग्राम से बाहर एक 'शङ्खा होली' (शङ्ख-पुष्पी) का क्षुप (पौधा) देखकर, उसके पास आसन लगाकर, उक्त मन्त्र का जप एक माला (रुद्राक्ष) नित्य करे। प्रति-दिन, 'शङ्ख - पुष्पी' के पौधे पर सोलह श्रृङ्गार चढ़ाए (काजल, चूड़ी, बिन्दी, सिन्दूर, कलाया, फीता (रिबन), प्रसाद आदि)। पहले अपनी देह की सुरक्षा के लिए 'कार' (रक्षा-मन्त्र) पढ़े, तब जल 'शङ्ख - पुष्पी' पर चढ़ाए। उसके बाद सोलह श्रृङ्गार चढ़ाए। तब मन्त्र का जप करे। इस प्रकार २१ दिनों तक साधना करे। २२ वें दिन 'शङ्ख - पुष्पी' के उस पौधे को जड़ - सहित उखाड़ लाए।

जड़ को काट कर अलग कर ले। पौधे की लताओं पर कपास की रुई लपेट कर दीपक में चमेली का तेल डालकर, काजल बना ले।

उपयोग : जब भी राज्य (कोर्ट/कचहरी, अधिकारी के समक्ष जाए और अपना कार्य न हो रहा हो, तब 'शङ्ख-पुष्पी' की जड़ को तोड़कर, उसका टुकड़ा दाँत के नीचे रखकर जाए, तो कार्य अवश्य सिद्ध होगा। 'काजल' का उपयोग यह है कि उसे एक दाईं आँख में लगाकर जाने से समस्त लोग सम्मान करेंगे, अर्थ-लाभ होगा, मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी, यह लेखक का अनुभूत है।

● ● ●

एक दुर्लभ पुस्तक के आधार पर :

सिद्ध कामाख्या मन्त्र-प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री महावीर पोद्दार
पो. वारा पलानी, दुमका (बिहार)

१. उच्चाटन-मन्त्र

(१) ॐ नमः कामाक्षाय, ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्रा करालाय 'अमुकं' दह - दह, पच - पच, उच्चाटय हुँ फट् स्वाहा ठं ठः ।

विधि (१) : रविवार के दिन लता से भतुआ का फल तोड़े। अमावास्या की आधी रात को किसी चौबटिया पर उस फल में चूना, काजल और सिन्दूर लगाकर उपर्युक्त मन्त्र १०८ बार पढ़कर रख दे। एक आकार की चार कौड़ियां चित्त करके फल के चारों ओर रख दे और उसी आकार की एक कौड़ी चित्त करके फल के ऊपर रख दे और चुपचाप घर चला आए। मन्त्र में 'अमुक' की जगह जिसका नाम लिया जाएगा, उसका उच्चाटन होगा।

विधि (२) : डुम्बुर की लकड़ी का एक चार अंगुल का कील ले। कील के ऊपर उक्त मन्त्र १०८ बार पढ़कर 'अमुक' के गृह में डाले। 'अमुक' का उच्चाटन होगा।

विधि (३) : काग और उल्लू के पर से १०८ बार उक्त मन्त्र द्वारा होम करे। मन्त्र में जिसका नाम लिया जाएगा, उसका उच्चाटन होगा।

विधि (४) : मनुष्य की ठठरी की हड्डी चार अंगुल के बराबर ले। हड्डी के ऊपर उक्त मन्त्र १०८ बार पढ़े। हड्डी को 'अमुक' के गृह के द्वार के सामने फेंके। 'अमुक' का उच्चाटन हो जाएगा।

विधि (५) : मिट्टी का एक 'शिव - लिङ्ग' बनाए। 'शिव-लिङ्ग' पर 'चिता-भस्म' और 'ब्रह्म-दण्डी' एक साथ पीस कर लेपन

करे। फिर शनिवार की रात्रि में उक्त मन्त्र १०८ बार पढ़कर 'शिव-लिङ्ग' को अभिमन्त्रित करे और जिसका उच्चाटन करना हो, उसके घर में रखे।

विधि (६) : चार अंगुल की गूलर की लकड़ी ले। उस लकड़ी पर १०,००० बार उक्त मन्त्र पढ़े। लकड़ी को, जिसका उच्चाटन करना हो, उसके घर में डाले। मन्त्र का १०,००० जप 'शनिवार' से प्रारम्भ करे और दूसरे 'शनिवार' तक पूरा करे।

ॐ तुङ्ग स्फुलिङ्ग बक्रिम चाश्विका विद्वद्वघ्न मोध वन-वने स्फरै स्फरें ॐ ठं ठः अमुकं।

विधि : चिता-भस्म के ऊपर उक्त मन्त्र १०८ बार पढ़े। फिर भस्म को, जिसका उच्चाटन करना हो, उसके घर में डाले।

२. आकर्षण-मन्त्र

(१) ॐ नमः कामाक्षाय महा-शक्ति-रूपाय 'अमुकस्य' आकर्षण कुरु कुरु, ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

विधि : पहले उक्त महा-मन्त्र को सिद्ध करे। सिद्ध करने के लिए पाँच-मुखी और सात-मुखी बिल्व-पत्र एकत्रित करे। पाँच - मुखी बिल्व-पत्र कम-से-कम ५ एकत्रित करे, अधिक हों, तो अति उत्तम। इनके अतिरिक्त ११०८ तीन पत्तीवाले बिल्व-पत्र लाए। सबको गङ्गा-जल से धोकर पवित्र करे। इसके बाद मिट्टी के १००० शिव - लिङ्ग तैयार कर एक बार उक्त मन्त्र पढ़कर एक बिल्व-पत्र शिव-लिङ्ग पर चढ़ाए। इस प्रकार १०८ बार मन्त्र पढ़कर ११०८ तीन - मुखी बिल्व-पत्र चढ़ाए। पाँच-मुखी बिल्व - पत्र जितने हों, उन्हें उक्त मन्त्र पाँच-पाँच बार पढ़कर चढ़ाए। सात-मुखी बिल्व-पत्रों को सात - सात बार मन्त्र पढ़कर चढ़ाए। इसके बाद सभी का 'विसर्जन' करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा।

मन्त्र सिद्ध कर लेने के बाद किसी भी चतुर्दशी के दिन काले धतूरे के रस में गोरोचन मिलाकर, श्वेत कनेर की टहनी की लेखनी से भोज - पत्र पर 'साध्य' के नाम के साथ उपर्युक्त मन्त्र को लिखे। 'साध्य' आकर्षित होगा।

(२) ॐ नमः भगवते रुद्राय, ॐ नमः जगदम्बिके आकर्षण-कारिणी कामाक्षाय अं कं चं टं तं पं यं शं ह्रीं क्रीं श्रीं आकर्षण कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि : उक्त मन्त्र को सिद्ध करने के लिए 'एक चतुर्दशी' से दूसरी 'चतुर्दशी' तक नित्य १०८ बार जपे। इसके बाद अपनी कनिष्ठिका अँगुली के रक्त से गृद्ध के पङ्ख की लेखनी द्वारा, भोज-पत्र पर 'साध्य' के नाम के साथ उक्त मन्त्र को लिखे और तकिए के नीचे उसे रखकर सो जाए। 'साध्य' आकर्षित होकर रात्रि में स्वप्न में मिलेगा और कुछ ही दिनों के अन्दर यदि वह सात समुद्र पार भी होगा, तो आकर्षित होकर उसके पास चला आएगा।

(३) ॐ नमः कामाक्षाय ह्रीं ठं ठः स्वाहा ।

विधि : उक्त मन्त्र का जप मङ्गलवार से प्रारम्भ करे। जब दस हजार जप पूरा हो जाए, तब होम करे। फिर चूहे के बिल की मिट्टी में उल्टा सरसों और बिनौले मिलाकर उक्त मन्त्र १०८ बार पढ़कर, जिसके बदन पर छींटा जाएगा, वह आकर्षित होगा।

४. पुष्प-माला पर आकर्षण-मन्त्र

फूलों के हार, मोहे संसार, कर मोह-वर्षण ।

सुन-सुन सत्-गुरु की पुकार, हो जा तैयार, भर ले रूप में निखार, सुगन्ध में प्यार, 'अमुक' पर कर आकर्षण ।। दोहाई कामाक्षा देवी की, सत्-गुरु का कहना मान, चला आकर्षण-बान। मोह ले, मोह ले मन - प्राण; तुझे शङ्कर की आन ।। ॐ नमः शम्भु-शक्ति-स्वरूपिणी माँ कामाक्षाय आकर्षण कुरु कुरु फट् स्वाहा ।।

विधि : माघ शुक्ला पञ्चमी की रात्रि में गाँव के बाहर पीपल-वृक्ष के नीचे कुशासन पर पूर्व की ओर मुँह करके सिद्धासन लगाकर बैठे। श्री श्री कामाक्षा देवी का ध्यान करते हुए उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। अनन्तर जब कभी

किसी को आकर्षित करना हो, तो स्नानादि कर किसी पुष्प-वाटिका में बासी मुख जाए और मन्त्र पढ़ते हुए फूलों का सञ्चय करे। फिर जिसे आकर्षित करना हो, उसका नाम लेते हुए फूलों की सुन्दर माला तैयार करे। माला जिसे आकर्षित करना हो, उसे पहनाए। वह आकर्षित होगा। यदि माला पहनाना सम्भव न हो, तो स्वयं वह माला पहन कर उसके पास जाए और ऐसा प्रयत्न करे, जिससे साध्य की दृष्टि माला पर पड़े।

५. शत्रु-हन्ता प्रयोग

विशेष : साधारण विषयों को लेकर यह प्रयोग कदापि न करे। देश, समाज, धर्म-शत्रुओं एवं महा - पापियों पर ही यह प्रयोग करना न्याय-सङ्गत है। अन्यथा प्रयोग-कर्त्ता को भी हानि हो सकती है।

(1) **ॐ नमः कामाक्षाय, ॐ नमः रुद्राय कालाय भीमाय रिपु-हन्ताय क्रीं क्रुं फट् स्वाहा।**

विधि : आश्विन मास की 'नवरात्रि' में उक्त मन्त्र को सिद्ध किया जाता है। आश्विन मास के शुक्ल - पक्ष की प्रतिपदा से जप प्रारम्भ करे और 'नव-रात्रि' तक दस हजार जप करे। 'विजय-दशमी' के दिन 'हवन' आदि करे। जप के लिए आधी रात के समय गाँव के बाहर किसी पीपल के पेड़ के नीचे, दक्षिण दिशा की ओर मुख करके आसन लगाए। नर-खोपड़े की हड्डी पहले से खोज कर रखे। खोपड़ी भी दक्षिण दिशा की ओर मुख करके रखे, जिससे उसका पिछला भाग अपनी ओर पड़े। उस खोपड़े के ललाटवाले भाग में सींक से सिन्दूर की सात लकीरें, काजल की सात लकीरें और सात लकीरें चूने की खींचे। इसके बाद ओड़हुल के फूल पर उक्त मन्त्र १०८ बार पढ़कर खोपड़े पर चढ़ाए। इस प्रकार १० फूल पर १०८ बार जप करके चढ़ाने से १०८० जप प्रति-दिन पूरा होगा। नौ दिन में ९७२० जप पूरा हो जाएगा। शेष २८३ जप दशमी के दिन पूरा करके 'विसर्जन' करे। यदि नौ दिन के अन्दर ही 'दशमी' समाप्त होनेवाली हो, तो जप उसी हिसाब से प्रति-दिन करे, जिससे दशमी तक १०,००० जप पूरा हो जाए। जप करने का स्थान एकान्त में होना चाहिए। कारण, यह नर-खोपड़ा वहाँ दस दिनों तक रहेगा। कोई भूला-भटका

यदि वहाँ पहुँच भी जाएगा, तो भय से स्वतः भाग जाएगा। प्रयोग-कर्त्ता को चाहिए कि जहाँ तक सम्भव हो, दिन के समय गुप्त रूप से खोपड़े की रखवाली करे। यदि कुतूहल-वश वहाँ लोगों का जमावड़ा हो जाए, तो उन्हें बुद्धिमानी से भगा दे। 'विसर्जन' के बाद खोपड़े को श्मशान में ले जाए और जहाँ तक हो सके, गहरा गड्ढा खोद कर उस खोपड़े को उसमें गाड़ दे। जब तक वह खोपड़ा धरती के अन्दर गड़ा रहेगा, तब तक उक्त मन्त्र का प्रभाव रहेगा। खोपड़ा उखड़ जाने के बाद मन्त्र का प्रभाव घट जाएगा। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा।

विधि (२) : अमावास्या की रात में, श्मशान में शत्रु का नाम लेकर मिट्टी की एक छोटी मूर्ति तैयार करे। इसके बाद मूर्ति को दक्षिण-मुख स्थापित करे। पतले बेंत की छोटी धनुही पर 'शाही' (एक प्रकार का काँटेदार जङ्गली जानवर, जिसके शरीर में रोएं के बदले तीखे काँटे होते हैं) का एक काँटा बाण की तरह चढ़ाए। इसके लिए मृग-चर्म की पतली ताँत की धनुही की डोर बनाए। १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे। इसके बाद श्री श्री कामाख्या देवी का ध्यान करते हुए शत्रु का नाम लेकर उस मिट्टी की मूर्ति पर बाण चलाए, जिससे उस मूर्ति की छाती विंध जाए। इससे शत्रु का नाश होगा।

विधि (३) : एक घोड़े की हड्डी ४ अंगुल की लाए। उस पर उपर्युक्त मन्त्र १०८ बार पढ़े। शत्रु के नाम के साथ मन्त्र पढ़े। हड्डी को शत्रु के घर में फेंक दे। इससे शत्रु नष्ट होगा।

६. शान्ति-प्रकरण

ॐ शं शां शिं शीं शुं शूं शृः शें शैं शों शौं शं शः स्वं स्वः स्वाहा। ॐ नमः कामाक्षाय ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

विधि : पूर्णिमा की रात में, किसी नदी या तालाब के किनारे पूर्व-मुख आसन में श्री श्री कामाख्या देवी का ध्यान करते हुए उक्त मन्त्र का १००० बार जप करे। इसके बाद स्नान कर ताम्बे के पात्र में जल भर कर पीपल या तुलसी की जड़ में डाले, तो उक्त मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। फिर बारह अंगुल पलाश की लकड़ी की 'कील' तैयार करे। 'कील' को १००० बार उक्त मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करे। 'कील' को जिसके घर में रखा जाएगा, वहाँ सर्व-शान्ति होगी। ● ●

पाठकों के पत्र

श्री कृष्णकुमार परिहार, प्राथमिक शाला—नाथिया नया गाँव, पो० लखनपुरी, काँकेर, जिला बस्तर (म० प्र०)

"...आपके द्वारा संग्रहीत 'शाबर-मन्त्र' वास्तव में वर्तमान युग में भी अत्यन्त प्रभाव-पूर्ण हैं। मैंने स्वयं 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ३, पृष्ठ ५६ पर प्रकाशित पं. कपिलनारायण मिश्र द्वारा प्रस्तुत 'श्रीहनुमान जी' के 'शाबर-मन्त्र' का प्रयोग किया। मुझे तत्काल प्रभाव देखने को मिला। मेरी प्रसन्नता की सीमा न रही। पहली बार जब मेरी पत्नी को ज्वर हुआ, तब मैंने उक्त मन्त्र पढ़कर अगरबत्ती से झाड़ा, जिससे लाभ हुआ। दूसरी बार अपने पुत्र के पेट के दर्द पर ११ बार फूंक कर झाड़ा। पुत्र का पेट - दर्द शान्त हो गया और वह हँसते हुए स्कूल गया। मैंने पर्व-काल, ग्रहण आदि में मन्त्र सिद्ध भी नहीं किया था, तो भी मुझे प्रभाव दिखाई पड़ा। इससे मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। हम इसके लिए आपके प्रति हृदय से आभारी हैं।..."

'कुल-वाणी-रत्न' श्री गोपाललाल बिस्सा, देशनोक, बीकानेर (राजस्थान)

"...'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के प्रकाशन की प्रशंसा शब्दों में करना सूर्य को दीपक दिखाना है। आप पर श्रीजगदम्बा एवं साधक-सज्जनों का आशीर्वाद है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण 'चण्डी' मासिक पत्रिका, शाबर-मन्त्र-संग्रह के ६ भाग एवं उच्च - स्तरीय साहित्य का निरन्तर प्रकाशन है।..."

अनुरोध

जानकार महानुभावों से अनुरोध है कि 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के नौ भागों में प्रकाशित मन्त्रों के सम्बन्ध में यदि उन्हें कुछ विशेष बातें ज्ञात हों, तो उसे लिखकर प्रकाशनार्थ भेजने की कृपा करेंगे। साथ ही, यदि उनके पास अन्य अप्रकाशित 'शाबर - मन्त्र' हों, तो उनकी भी प्रतिलिपियाँ भेजने का अनुग्रह करेंगे, जिससे मन्त्र - विद्या के इस महत्त्व-पूर्ण अङ्ग पर शोध करनेवालों को कोई कमी प्रतीत न हो।

—सम्पादक

अनुभूत सिद्ध शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री रामकृष्ण कुमार
गृह-संख्या बी-३० डी. कैम्प, एस. ई. सी. एल., कोरबा-४९५६७९

१. शाबर भैरव-साधना

ॐ काली कङ्काली महा-काली के पुत्र कङ्काल-भैरव! हुक्म है—हाजिर रहे, मेरा कहा तुरन्त करे। मेरा भेजा रक्षा करे। लान बाँधूँ बान चलते के—फिरते के औसान बाँधूँ। दश दिशा, दसों सूर नव-नाथ बहत्तर वीर बाँधूँ, पाँच हाथ की काया, कुबेर की माया बाँधूँ। फूल में भेजूँ—फूल में जाय। मेरे 'अमुक' शत्रु का कलेजा खाय। थर-थर काँपे, हल-हल हिले, गिर-गिर पड़े। मेरा भेजा सवा मास, सवा दिन, सवा पहर 'अमुक' को बावला न करे, तो माता काली की शय्या पर पग धरे। वाचा छोड़ कुवाचा करे, तो धोबी की नाँद, चमार के कुण्ड में पड़े, रुद्र की नेत्र की ज्वाला पड़े, पारबती के चीर पर चोट पड़े। दुहाई काली माई की। कामरू कामाक्षा की। गुरू गोरख-नाथ की।

विधि : गाय के गोबर का चौका (लीपकर) देकर दक्षिण की तरफ मुख करके बैठे। 'काल-रात्रि' में यह साधना करना उत्तम है। पूजन में लाल कनेर का फूल, सिन्दूर, नींबू, लौंग और लड्डू आदि रखे। चार मुख का दिया, फूलों की माला भी रखे। १०८ बार मन्त्र का जप करे और इतनी ही बार चीनी और घी मिलाकर हवन करे। हवन की समाप्ति पर यदि भैरव जी प्रकट हों, तो उन्हें फूलों की माला अर्पित करे, लड्डू का भोग दे और प्रणाम कर उनसे कार्य सिद्ध करने की प्रार्थना करे।

प्रयोग : (१) मन्त्र सिद्ध हो जाने पर एक नींबू पर शत्रु का नाम सिन्दूर से लिखे। २१ बार मन्त्र का जप कर उस नींबू में २१ सुइयां चुभो दे और एक मिट्टी की छोटी - सी हण्डी में उसे रखकर श्मशान में गाड़ दे। जब तक यह गड़ा रहेगा, शत्रु को भयानक पीड़ा होगी।

(२) शत्रु के पहनने का कोई कपड़ा प्राप्त कर उस पर श्मशान के कोयले से शत्रु का चित्र बनाए। चित्र में प्राण - प्रतिष्ठा करे और शत्रु का नाम लिखे। फिर इस कपड़े पर उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। खैर या आक की लकड़ी जला कर इस वस्त्र को आग में तपाए। कपड़ा जलने न पाए। शत्रु पागल हो जाएगा। अच्छा करने के लिए गधे के मूत्र से उस कपड़े को धोकर सुखा दे।

२. मोहम्मद पीर की साधना

बिस्मिल्लाहे रहेमानिर्रहीम ! पाँय धूधरा कोट जञ्जीर। जिस पर बैठा मोहम्मद पीर, सवा मन का तीर। खेलता आवे मोहम्मद पीर। मार-मार करता आवे, बाँध - बाँध करता आवे। डाकिनी को बाँध, चुड़ैल को बाँध, शाकिनी को बाँध, मरी को बाँध, मसान को बाँध, चारों दिशा की श्मशान को बाँध, भूत-प्रेत को बाँध, नौ नरसिंह बावन भैरों को बाँध, आकाश बाँध, पाताल बाँध, जातका मरता गूगिया, धोलिया मसान बाँध, बाँध कुँआँ बावड़ी। सोती को लावौ, बैठी को लावौ, चलती को लावौ, पीसती को लावौ, पकाती को लावौ, जल्दो लावौ। हजरत इमाम हुसैन की जोध से लावौ, बीवी फातिमा के दाम से लावौ। नहीं लावौ, तो अपनी माता को चोट मारो। दुहाई रसूलिल्लाह की।

विधि : मन्त्र यद्यपि कुछ बड़ा है, किन्तु इसका फल और लाभ अवश्य ही मिलता है। इस मन्त्र की साधना के समय कुछ असा-

मान्य और विचित्र प्रकार के दृष्टान्त और घटनाएँ होती हैं। इसलिए इसे किन्हीं जानकार और अनुभवी व्यक्ति के सान्निध्य में ही करे। नौचन्दी जुमेरात की रात्रि से प्रारम्भ करे। कब्रिस्तान या निर्जन एकान्त स्थान में इसकी साधना करनी चाहिए। पहले आवश्यक रक्षा-विधान आदि करे, फिर कान में गुलाब के इत्र का फाहा और अपने सामने गुलाब के फूलों की माला रखे। लोहबान की धूप देता रहे। नित्य १०८ बार उल्टी माला जप करे। २१ वें दिन जब पीर प्रगट हों, तो उन्हें प्रणाम कर गुलाब के फूलों की माला गले में पहना दे और उनसे सभी कार्य करने का वचन ले ले। किसी का अहित न करे। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर इस मन्त्र द्वारा बीमारी, नजर, टोना, आसेब, भूत-प्रेत, पागलपन आदि दूर किए जा सकते हैं।

विशेष—उक्त 'साधना' मैंने 'हजरत मौलाना असगर अली फारुखी' से प्राप्त की है। पीर की साधना में पवित्रता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। मांस, मछली, मद्य आदि का सेवन वर्जित है। साधक को पाक - साफ रहना चाहिए। ब्रह्मचर्य से रहे और मन में सबके प्रति कल्याण-भावना रखे।

३ः कटोरी चलाना

जिसके धन की चोरी हो गई हो, वह निम्न मन्त्र के द्वारा अपने धन को पुनः प्राप्त कर सकता है। यदि धन गड़ा होगा, तो भी मिल जाएगा—

ॐ नमो सत्तर सौ पीर, चौंसठ सौ योगिनी। बावन सौ वीर, बहत्तर सौ भैरों। तेरह सौ तन्त्रा, चौदह सौ मन्त्रा। अठारह सौ परबत, सत्तर सौ पहार। नौ सौ नदी, निन्यानबे सौ नाला। यति हनुमन्त गोरखनाथ रखवाला। काँसे की कटोरी—चार अंगुल चौड़ी, कहाँ वीर! कहाँ से चलाई? गिरनार परबत से चलाई। अठारह भार वन-स्पता, चल लोना चमारिन—वाचा फूटे। काली कुम्हारी चाक ज्यों-ज्यों फिरे, कहाँ-कहाँ जाय? चण्डाल के घर जाय, चोर के घर जाय। तिहाँ लावे चोर को, चण्डाल

को। गड़ा धन बताय। चल-चल रे हनुमन्त वीर! जहाँ चले, वहाँ रहे। न चले, तो गङ्गा-जमुना उल्टी बहे। न चले, तो सीता माता की छाती, अञ्जनी मैय्या के सिर पर पैर रखे। सत् के हनुमान होबे, तो चोर के गाड़े धन के पास ठहरबे। दुहाई रामचन्द्र के।

विधि : काँसे की एक छोटी-सी चार अंगुल चौड़ी कटोरी ले। दीपावली के दिन कटोरी की विधि-वत् पूजा करे। प्राण-प्रतिष्ठा करे। एक पाव समूचे उड़द को उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित करे। प्रयोग के समय कटोरी को चौक में रखकर, अभि-मन्त्रित उड़द को मन्त्र पढ़ते हुए कटोरी पर फेंके। कटोरी चलने लगेगी। जहाँ थोड़ा रुके, फिर मन्त्र पढ़कर उड़द फेंके। जहाँ चोरी का धन गड़ा होगा, कटोरी वहीं जाकर रुकेगी। पहले उक्त मन्त्र को ग्रहण-काल में १०८ बार जप कर सिद्ध कर ले, तब प्रयोग में लाए।

४. दाँतों की पीड़ा दूर करने का मन्त्र

लाम् लिल्ल लट्टू लम्माद लगदेअ लादिन।

विधि : प्रातः-काल उठकर, मुख धोने के समय, हाथ में जल लेकर उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर कुल्ला करने से दाँत की पीड़ा दूर होती है। यदि दाँत हिलते भी होंगे, तो वे जम जाएँगे। अनुभूत है।

५. नेत्र-पीड़ा दूर करने का मन्त्र

(१) ॐ नमो आदेश गुरू को। समुद्र-समुद्र में खाई, उस मर्द को आँख आई। पाके न फूटे पीड़ा करे, गुरू गोरखनाथ जी पीड़ा हरे। जो न हरे, तो महादेव की त्रिशूल पड़े। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। जय गोरखनाथ की।

विधि : नमक की सात कङ्कड़ी लेकर प्रत्येक कङ्कड़ी पर सात-सात बार मन्त्र पढ़कर नेत्र से लगाए। फिर सभी कङ्कड़ी को लेकर कुएँ में डाल दे। नेत्र की लाली, पीड़ा, जलन दूर हो जाएगी।

(२) ॐ नमो झलमल जहर-भरी ललाई। कहाँ से आई ? अस्ताचल परबत से आई। वहाँ बैठा हनुमन्ता जाई। फूटे न पके—न करे पीड़ा, भली हनुमन्त राखे होड़ा।

विधि : मन्त्र पढ़ते हुए नीम की टहनी से सात बार झारने से नेत्र की लाली, वेदना दूर हो जाएगी।

६. दाढ़-पीड़ा का निवारक मन्त्र

सकोरे में, ताँबे में, शीशे में, पानी में, सीपी में, कीड़ा मरे, पीड़ा हरे। पारबती के वचन न टरें। 'अमुक' के पीड़ा ल हरबे, नहीं तो महादेव के त्रिशूल के चोट ल खालें। जय शङ्कर भगवान। सत गुरु, सत कबीर।

विधि : लोहे की सात कीलों को सात बार उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित करे। प्रत्येक कील को दर्दवाले दांत से छुआए। फिर उन सब कीलों को इकट्ठा कर किसी कुएँ में डाल दे। दाढ़ की पीड़ा दूर हो जाएगी।

७. आकर्षण, वशीकरण के प्रबल सूर्य-मन्त्र

(१) ओम् नमो भगवते श्रीसूर्याय ह्रीं सहस्र-किरणाय ऐं अतुल-बल-पराक्रमाय नव-ग्रह-दश-दिक्-पाल-लक्ष्मी-देव-वाय, धर्म - कर्म - सहितायै 'अमुक' नाथय नाथय, मोहय मोहय, आकर्षय आकर्षय, दासानुदासं कुरु-कुरु, वश कुरु-कुरु स्वाहा।

(२) ऐं पिन्स्थां क्लीं काम-पिशाचिनी शिघ्रं 'अमुक' ग्राह्य ग्राह्य, कामेन मम रूपेण वश्वैः विदारय विदारय, द्रावय द्रावय, प्रेम-पाशे बन्धय बन्धय, ॐ श्रीं फट्।

विधि : सूर्य-देव का ध्यान करते हुए मन्त्र-संख्या-१ का १०८ बार जप प्रति-दिन ६ दिन तक करने से 'आकर्षण' का कार्य सफल

होता है। मन्त्र-संख्या–२ को पहले २० हजार जप कर सिद्ध कर ले। प्रयोग के समय 'साध्य' के नाम का स्मरण करते हुए प्रति-दिन १०८ बार मन्त्र जपने से 'वशीकरण' हो जाता है।

८. कर्ण-पिशाचिनी-साधना

'कर्ण-पिशाचिनी' का प्रयोग लोक-सिद्धि के लिए बहुत ही प्रभावी है। यह साधना उग्र श्रेणी में आती है। अतः किन्हीं सिद्ध गुरुदेव का सहारा लेना चाहिए, अन्यथा सङ्कट में पड़ सकते हैं। 'कर्ण - पिशाचिनी' की उग्रता को कम करने के लिए 'घीकुवाँर' या 'घृत-कुमारी' नामक पौधे की जड़ और उसके पत्तों का गूदा बहुत उपयोगी है। जड़ को विधि-वत् उखाड़ कर, सिद्ध कर, अपने पास रखने से और उसके पत्तों के गूदे या रस को सारे शरीर तथा मस्तक में लगाने से उग्रता सौम्यता में बदल जाती है। ऐसा जानकार लोगों से ज्ञात हुआ है। 'कर्ण-पिशाचिनी' का मन्त्र—

(१) ओम् नमः कर्ण-पिशाचिनी अमोघ सत्य-वादिनी ! मम कर्णे अवतरावतर, अतिता नागत वर्तमनानी दर्शय, मम भविष्यं कथय कथय, ह्रीं कर्ण-पिशाचिनी स्वाहा।

विधि : लोहे का एक त्रिशूल बनाकर पञ्चोपचारों या षोडशोपचारों से उसका पूजन कर साधना-स्थल में जमीन में गाड़ दे। दिन में घी का दिया जलाकर मन्त्र का ११०० जप करे। फिर आधी रात को त्रिशूल का पूजन कर, 'घी' और 'तेल' के दीपक जलाकर ग्यारह दिन तक ग्यारह सौ मन्त्र-जप करे। अन्त में 'कर्ण-पिशाचिनी' प्रगट होकर वर प्रदान करेगी, जिससे किसी भी प्रकार के प्रश्नों का उत्तर ज्ञात होने लगेगा। यह अति उग्र साधना है। अतः सिद्ध गुरुदेव के सान्निध्य में ही करे।

(२) ओम ह्रीं श्रीं क्लीं नृं ठं ठं नमो देव-पुत्री, स्वर्ग-निवासिनी, सर्व-नर-नारी-मुख-वर्तालो ! वार्ता कथय, सप्त-समुद्रान दर्शय दर्शय, ओम ह्रीं श्रीं क्लीं नृं ठं ठं हूँ फट् स्वाहा।

छत्तीसगढ़ के अनुभूत शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री रामकृष्ण कुमार, कोरबा (म. प्र.)

प्रस्तुत शाबर-मन्त्र स्वयं सिद्ध है, फिर भी अधिकाधिक जाग्रति लाने के लिए पर्व-काल में १०८ बार जप कर ले, तो उत्तम होगा। 'नाग-पञ्चमी' के दिन पञ्चोपचारों से 'पूजन' कर १०८ बार जप लेने से ये मन्त्र वर्ष भर जाग्रत रहते हैं, मात्र ३ बार पढ़कर फूंक मारने से सभी कार्य सम्पन्न होते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं।

१. नजर, पीड़ा, बुखार झारने का मन्त्र

पाँच फन, पाँच सङ्ग। कभी भी छोड़ नाम, मुक्तार नाम। अरगट नाम, परगट नाम। जहर नाम, धरम नाम। कबीर का सत नाम, धरम से बोल। पानी से पन्थ, जय सूरजनारायण। धरती माता, मँड़वा रानी। सत् के महा-देव होबे, तो 'अमुक' के नजर, टोना, टामर, पीड़ा, बुखार, बैरी के लगाए जादू माढ़ जाबे। मोर फूँके, मोर गुरू के फूँके, महा-देव-पार्वती के फूँके। सत्य नाम कबीर-दास के, फूँके जा—माढ़ जा।

(पृष्ठ ७६ का शेष)

विधि : जङ्गली 'सूअर' (वराह) का दायाँ दाँत और 'सेही' का काँटा लेकर अपने सामने आसन के नीचे रखकर १ लाख बत्तीस हजार मन्त्र-जप करने से सिद्धि मिलती है। भूत - भविष्य - वर्तमान जानने की यह सिद्ध विधि है। इसकी साधना के समय अपने हाथ-पैर के तलवों में 'ग्वार-पाठा' (घी-कुवाँर) का लेप करना आवश्यक है, जिससे इसकी उग्रता कम हो जाती है। मन्त्र - सिद्धि के बाद साधक को कुंकुम या रोली का तिलक नहीं लगाना चाहिए।

२. टोना झारने का मन्त्र

(१) दूध के धार धरों, सूत के ताग उतारों। हाथ का छप्पन छुरी, छाती चीर कलेजा खाँव। तेलाई में खाँव, कराही में खाँव। खप्पर में खाँव, खून के पूजा पावे। जब टोनही के कलेजा ला खाबे, टोना ला पाँगन करबे। मोर फूँके, मोर गुरू धरमदास के फूँके। शङ्कर - पार्वती के फूँके। जा रे टोनही के टोना, पाँगल हो जा।

(२) अरघट्टी खाँव, मरघट्टी खाँव। टोनही के खाँव पूत, टोनही के टोना झारों और मारों भूत। काकर कहें, पारबती दाई के कहे। सत् के पारबती के मन्त्रा होबे, तो टोनही के टोना फिर जावें।

विधि : उक्त सभी मन्त्रों का प्रयोग करते समय, थोड़ी-सी राख और सरसों को मिलाकर, सात बार मन्त्र पढ़कर फूंक मारे। यह क्रिया शनिवार, रविवार और मङ्गलवार को करे।

३. मूठ लौटाने का मन्त्र

अरघट्टी झन खा, मरघट्टी झन खा। झन खा पर के पूत—कारी - पीरी चाऊर, मूठ झन मार। मूँठ माँ ठेस लगाँव, नदिया पार नहकाँव। जाकर चलाए, वही ला खाए। उलट मूठ, पलट टोना। काकर कहे, पारबती के कहे। सच के पारबती के मन्त्रा होबे, तो जा रे मूठ! पलट जा।

विधि : एक मुट्ठी काले और पीले चावल लेकर सात बार मन्त्र पढ़कर अभि - मन्त्रित करे तथा सात बार सिर के चारों ओर घुमाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दे। मूठ उलटकर चलानेवाले पर ही पड़ेगी।

४. मसान भगाने का मन्त्र

काली-काली महा - काली, इन्द्र की बेटी, ब्रह्मा की साली। हाँक पड़े महा - देव के, पूजा देहुँ रक्त के। भूत-प्रेत, मरी-मसान। आवत हे पञ्च - मुखा हनुमान। गदा ला चलाही, तोर गोदी ला खाही। सत् के महा - देव होबें, तो मसान ला भगाबें। दुहाई गौरा-पार्बती के।

विधि : एक मुट्ठी पीली सरसों लेकर उक्त मन्त्र से २१ बार अभि-मन्त्रित करे। ३ बार पीड़ित व्यक्ति के सिर से घुमाकर आग में डाल दे। यदि मांस-जैसे जलने की गन्ध आए, तो समझे मसान, प्रेत आदि जल गए।

५. भूत-प्रेत भगाने का मन्त्र

भाग-भाग भूत, भाग-भाग मसान। आवत हे पञ्च-मुखा हनुमान। गदा ला चलाहि, तोर करेजा ला खाही, आगी में जलाही, तेल में पकाही। मन के राव, मन का दुआ करे। भूत-प्रेत के पीरा ला हरे। सत् के महा-देव होबे, तो 'अमुक' के रक्षा करबे। मोर अरजी-विनती ला सुनबे। दुहाई पारबती दाई के।

विधि : मन्त्र-संख्या ४ के अनुसार।

६. टोना बाँधने का मन्त्र

जल बाँधों, थल बाँधों, जल के बाँधों कीरा। नौ नगर के राजा बाँधों, हाथ मा बाँधों जँजीरा। भूत - प्रेत-मसान बाँधों, टोनही के बाँधों टोना। मोर बाँधे, मोर गुरू के बाँधे, मँड़वा रानी के बाँधे, सर्व-मङ्गला दाई के बाँधे, जा रे भूत बँधा जा। जा रे टोना बँधा जा। जे दिन बिन

पानी, बिना कपसा फूटे, वो दिन ये बन्धन छूटे। सत्य नाम कबीरदास की।

विधि : भभूत लेकर सात बार मन्त्र पढ़कर फूंक मारे और माथे पर टीका लगा दे। नित्य-प्रति ३ बार पढ़ने से शरीर की रक्षा होती है।

७. बान झारने का मन्त्र

खत-खत कुन-कुन बान, आगे बान, पीछे बान। मोर पीछे है अर्जुन के बान। कौन चलाया है जादू-बान? काट के रख दे, फार के रख दे। बैरी के बान पलटा के रख दे। सत् के अर्जुन के बान होवे, तो बैरी के बान काट डार—चीर डार, नहीं तो कुन्ती माता के आँचल पर चोट पड़े। दुहाई कबीरदास की।

विधि : बाँस की लकड़ी से एक तीर-कमान बनाए। इस तीर पर सात बार मन्त्र पढ़कर फूंक मारे। बान लगे व्यक्ति की सात बार परिक्रमा करके, तीर को कमान पर चढ़ाकर दक्षिण दिशा की ओर छोड़ दे या हाथ में भभूत लेकर सात बार मन्त्र पढ़कर फूंक मारे।

८. खाट-पलँग बाँधने का मन्त्र

झन छुबे आरी, झन छुबे बारी। झन छुबे पालँग हमारी, दास कबीर हे रखवारी। महा - देव के त्रिशूल भारी, पार्वती की महिमा न्यारी। खाट बाँधु, बाट बाँधु। बाँधु पलँग-चौकी। काकर बाँधे? मोर गुरू के बांधे, महा-देव-पार्वती के बांधे। सत् नाम कबीरदास के, बांधे जा रे खाट! बँधा जा।

विधि : पहले मन्त्र को किसी पर्व - काल में १०८ बार गुग्गुल की धूप देकर सिद्ध कर ले। रात को सोते समय ४ बार मन्त्र को पढ़कर पलँग या खाट के चारों कोने में फूंक मारे। इससे अच्छी नींद

आएगी। किसी भी प्रकार के डर-भय, बुरे स्वप्न, चोर, सर्प, बिच्छू इत्यादि से रक्षा होगी। अनुभूत मन्त्र है।

६. चोट, मोच, दर्द दूर करने का मन्त्र

कारी गाय के दूध के मोल, बांस के पोंगरा ले निकलिस चोर। चिल्लके, चालके, ललके, लालके, लचक के हाड़ जामें। सत् के होबे महा-देव, तो रचक के साढ़ जाबे।

विधि : एक कटोरी में थोड़ा-सा सरसों का तेल लेकर पहले सात बार मन्त्र द्वारा अभि-मन्त्रित करे। फिर चोट या मोच लगे स्थान पर तेल लगाकर, मालिश करते हुए मन्त्र पढ़े। पाँच-सात बार ऐसा करने से चोट, मोच, दर्द में आराम हो जाएगा।

१०. बिच्छू-जहर झारने का मन्त्र

(१) बाजा बाजे तुरूर - तुरूर, बिच्छी चधे सुरूर-सुरूर। हे शङ्कर नामी, पारबती के स्वामी। एक धान के तीन फूल। फार धरती मा समाय। नदी तीर के बिछुवा, लहर - लहर उतराय। बिछुवा कुँवर के बिछुआ तोर। उतर जा बिच्छी पोर-पोर, कसम हे महा-देव के तोर। सत् के महा-देव होबे, तो बिच्छी के जहर उतर जाय। दुहाई मनसा देवी की।

विधि : अपामार्ग की एक टहनी काँटे-सहित लेकर २१ बार मन्त्र पढ़ते हुए ऊपर से नीचे की ओर झारे। जहर उतर जाने के पश्चात् मनसा देवी के नाम से एक नारियल और सवा पाव दूध, अगर-बत्ती, महा-देव के मन्दिर में चढ़ा दे।

(२) ॐ नमो आदेश गुरू को, कारी बिच्छू कांकर वालों, उतर बिच्छू न कर टालों। उतरे तो उतारूँ, चढ़े

तो मारूँ। गरुण मोर पङ्ख हँकालूँ। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा। महा - देव का मन्त्र सांचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : गरुड़ के पङ्ख या मोर-पङ्ख से २१ बार झारे।

११. दांत-दर्द दूर करने का मन्त्र

आग बांधों, पाग बांधों। ऊपर - नीचे दाढ़ बांधों। अगिया-बेताल बांधों, सौ खाल विकराल बांधों। सौ लोहा-लोहार बांधों। बज्र अस होवै, बज्र फन दांत पिराय, तो महा-देव-पार्वती की आन।

विधि : थोड़े-से नमक में सरसों का तेल मिलाकर उक्त मन्त्र को ११ बार पढ़े, फिर उक्त रोगी को दाँत में लगाने को दे। ऐसा ३ दिन तक करे। दाँत के दर्द से सदा के लिए छुटकारा मिल जाएगा। परीक्षित है।

१२. बजरङ्ग वशीकरण शाबर मन्त्र

ॐ पीर बजरङ्गी, राम-लक्ष्मण के सङ्गी। जहां-जहां जाय, फतह के डङ्के बजाय। 'अमुक' को मोह के मेरे पास न लाए, तो अञ्जनी का पूत न कहाय। दुहाई राम-जानकी की।

विधि : ग्यारह दिनों तक ११ माला उक्त मन्त्र का जप कर इसे सिद्ध कर ले। 'राम-नवमी' या 'हनुमान - जयन्ती' शुभ दिन है। प्रयोग के समय दूध या दूध से बने पदार्थ पर ११ बार मन्त्र पढ़कर जिसे खिला या पिला देंगे, वह वशीभूत होगा।

स्वत: सिद्ध शाबर-प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री रामकृष्ण कुमार, कोरबा (म. प्र.)

[प्रस्तुत प्रयोग स्वयं-सिद्ध हैं, अपना प्रभाव अति-शीघ्र दिखाते हैं। अलग से सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं।—प्रस्तुत-कर्त्ता]

१. भूत-प्रेत-निवारण

(१) ना मयो हो, रेन गे कयो।

विधि : शनिवार के दिन 'घोड़े की नाल' की पञ्चोपचार-पूजा कर उक्त मन्त्र का ११ माला जप करे। फिर 'नाल' को घर के मुख्य द्वार के बीचो-बीच टाँग दे या ठोंक दे। इससे घर में कभी भूत - प्रेतों का आक्रमण नहीं होगा और यदि होगा भी, तो 'नाल' के प्रभाव से भाग जाएँगे।

(२) टूरी-टूरी तैं कहां जाथस ? छप्पन छूरी, छूरी लाए। वो मा काय काटबे ? भूत काटे, प्रेत काटबे, टोना-टामर मरी-मसान काटबे, नजर-गुजर, चुड़ैल-डायन काटबे, पीरा - बीरथा ला काटबे। काकर काटे ? मोर काटे। मोर गुरू के काटे, सत - नाम कबीरदास के काटे। जा, कट जा।

विधि : पीड़ित व्यक्ति को सामने बैठाकर पहले एक छुरी से आड़ी रेखाएँ खींचे। फिर ७ बार मन्त्र पढ़ते हुए प्रत्येक बार आड़ी रेखा को काटे। इससे नजर-टोना, भूत-प्रेत और बच्चे का रोना दूर हो जाएगा।

(३) अर्जुन काटे लकड़ी, बरजुन बहोरे जाय। भूत-प्रेत ला बांध दे, जति हनुमन्त के आन। मोर बांधे, मोर गुरूधरमदास के बांधे, सत-नाम कबीरदास के बांधे। जा रे भूत ! बँधा जा, या भाग जा।

विधि : गोबर के कण्डे की राख को सात बार उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित करे। तब मन्त्र पढ़ते हुए दरवाजों के चौखट पर, खिड़कियों के नीचे राख की ३ रेखाएँ खींच दे। भूत-प्रेत घर के अन्दर प्रवेश नहीं कर सकेंगे। यदि घर में होंगे, तो भाग जाएँगे या बँध जाएँगे।

२. शत्रु-दमन-प्रयोग-यन्त्र

ॐ ह्लीं ॐ नाम :—	ॐ ह्लीं ॐ	ॐ ह्लीं ॐ
ॐ ह्लीं ॐ	ॐ ह्लीं ॐ	ॐ ह्लीं ॐ
ॐ ह्लीं ॐ	ॐ ह्लीं ॐ	ॐ ह्लीं ॐ

विधि : अमावास्या के दिन उक्त यन्त्र को 'भोज-पत्र' या साफ कागज पर, श्मशान के कोयले से लिखे। प्रथम खण्ड में 'शत्रु' का नाम लिखे। रात्रि के समय श्मशान में या सूनसान स्थान में इसे गाड़-कर एक नींबू की बलि देकर 'मद्य' अर्पित करते हुए यह कहे कि "मेरे 'अमुक' शत्रु को शान्त करें।" शत्रु का दमन हो जाएगा, कभी तङ्ग नहीं करेगा। इस 'यन्त्र' का प्रयोग एक बार में एक ही शत्रु के लिए करे।

३. वशीकरण-मन्त्र

हाय मीन शीन काफ, हा या ऐन शीन काफ।

विधि : अमावास्या के दिन एक कोरी 'ईंट' पर श्मशान के कोयले से, उक्त 'मन्त्र' और 'यन्त्र' को लिखकर उसी दिन उस 'ईंट' को श्मशान में या 'कब्र' के नीचे गाड़ दे। एक नींबू की बलि दे और 'मद्य' का नैवेद्य चढ़ाए। 'मद्य' चढ़ाते समय कहे कि—'अमुक स्त्री या पुरुष को मेरे वश कर।' वशीकरण के लिए यह अचूक प्रयोग है।

३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
"अमुक को काबू कर"						

६. शिर-दर्द अध-कपारी झारने का मन्त्र

जय गाय गरण्ट अध - कपारी महाराज ! 'अमुक' के पोरा जाय । मोर फूँके, मोर गुरू के फूँके, सत् - नाम कबीरदास के फूँके । जा रे पीरा ! माढ़ जा ।

विधि : (१) दो छोटे कङ्कड़ ले । मस्तक के दोनों ओर एक-एक कङ्कड़ को अँगूठे से दबाकर ३ बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूंक मारे । फिर रोगी के ऊपर सात बार घुमाकर कङ्कड़ को पीछे की ओर फेंक दे । 'अध-कपारी' दूर हो जाएगी ।

(२) सूर्योदय के पूर्व 'गुड़' का एक छोटा टुकड़ा लेकर चौराहे पर जाए । पूर्वाभिमुख होकर ३ बार उक्त मन्त्र को पढ़कर फूंक मारे । फिर दांतों से गुड़ के टुकड़े को काटकर, एक टुकड़ा वहीं गिरा दे और दूसरा पीछे की ओर फेंक दे । तुरन्त पीड़ा दूर होगी ।

शाबर-मन्त्र-साधना में गुरु-तत्त्व

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री रामकृष्ण कुमार, कोरबा (म. प्र.)

['शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग १, पृष्ठ २३-३० में उक्त शीर्षक के अन्तर्गत नव-नाथ-माला, नव-नाथ-स्वरूप, नव - नाथ - चरित आदि प्रकाशित हैं। इसी क्रम में यहाँ 'नव-नाथ-स्मरण, नव-नाथ-स्तुति एवं नव-नाथ शाबर मन्त्र' प्रस्तुत हैं।—प्रस्तुत-कर्त्ता]

१. नव-नाथ-स्मरण

आदि-नाथ ओ स्वरूप ! उदय - नाथ उमा-महि-रूप। जल-रूपी ब्रह्मा सत-नाथ, रवि-रूप विष्णु सन्तोष - नाथ। हस्ती-रूप गनेश भतीजै, ताकु कन्थड-नाथ कही जै। माया-रूपी मछिन्दर-नाथ, चन्द-रूप चौरङ्गी - नाथ। शेष - रूप अचम्भे-नाथ, वायु-रूपी गुरु गोरख-नाथ। घट-घट-व्यापक घट का राव, अमी महा-रस स्रवती खाव। ॐ नमो नव-नाथ-गण, चौरासी गोमेश। आदि-नाथ आदि-पुरुष, शिव गोरख आदेश। ॐ श्रीनव-नाथाय नमः ॥

विधि : उक्त 'स्मरण' का पाठ प्रति-दिन करे। इससे पापों का क्षय होता है, मोक्ष की प्राप्ति होती है। सुख-सम्पत्ति-वैभव से साधक परिपूर्ण हो जाता है। २१ दिनों तक २१ पाठ करने से इसकी सिद्धि होती है।

२. नव-नाथ-स्तुति

आदि-नाथ कैलास - निवासी, उदय - नाथ काटै जम-फाँसी। सत्य-नाथ सारनी सन्त भाखै, सन्तोष - नाथ सदा सन्तन की राखै। कन्थडी - नाथ सदा सुख - दाई, अञ्चति अचम्भे-नाथ सहाई। ज्ञान-पारखी सिद्ध चौरङ्गी, मत्स्येन्द्र-नाथ दादा बहुरङ्गी। गोरख-नाथ सकल घट-व्यापी, काटै

कलि-मल, तारै भव-पीरा। नव - नाथों के नाम सुमिरिए, तनिक भस्मी ले मस्तक धरिए। रोग-शोक-दारिद नशावै, निर्मल देह परम सुख पावै। भूत-प्रेत-भय-भञ्जना, नव-नाथों का नाम। सेवक सुमरे चन्द्र - नाथ, पूर्ण होंय सब काम ॥

विधि : प्रति-दिन नव-नाथों का पूजन कर उक्त स्तुति का २१ बार पाठ कर मस्तक पर भस्म का तिलक लगाए। इससे नव - नाथों की कृपा मिलती है। साथ ही सब प्रकार के भय - पीड़ा, रोग - दोष, भूत-प्रेत-बाधा दूर होकर मनो-कामना, सुख - सम्पत्ति आदि अभीष्ट कार्य सिद्ध होते हैं। २१ दिनों तक, २१ बार पाठ करने से सिद्धि होती है।

३. नव-नाथ शाबर-मन्त्र

[प्रस्तुत 'नव-नाथ शाबर-मन्त्र' नाथ-पन्थी सिद्ध योगियों और साधकों का सिद्ध मन्त्र है। 'शाबर - पद्धति' से इस मन्त्र को यदि 'उज्जैन' की 'भर्तृहरि-गुफा' में बैठकर ६ हजार या ६ लाख की संख्या में जप ले, तो परम सिद्धि मिलती है और नौ नाथ प्रत्यक्ष दर्शन देकर अभीष्ट वरदान देते हैं। इस उपासना से शरीर में तेज, ओज, यश, कीर्ति, ज्ञान, वाक् - सिद्धि, सम्पत्ति, वैभव, सौभाग्य, दीर्घायु आदि इच्छित मनो-कामनाओं की पूर्ति होती है।—प्रस्तुत-कर्त्ता]

ॐ नमो आदेश गुरू की। ॐकारे आदि-नाथ, उदय-नाथ पार्वती। सत्य - नाथ ब्रह्मा। सन्तोष - नाथ विष्णुः, अचल अचम्भे-नाथ। गज-बेली गज-कन्थडि-नाथ, ज्ञान-पारखी चौरङ्गी-नाथ। माया - रूपी दादा मचछेन्द्र - नाथ, जति - गुरू हैं गोरख - नाथ। घट-घट पिण्डे व्यापी, नाथ सदा रहें सहाई। नव-नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई। ॐ नमो आदेश गुरू की।

(शेष पृष्ठ ८८ पर)

जिज्ञासा और समाधान

समाधान-कर्त्ता : श्री रामकृष्ण कुमार, कोरबा (म. प्र.)

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६ में प्रकाशित 'छत्तीसगढ़ के अनुभूत शाबर मन्त्रों' के सम्बन्ध में अनेक जिज्ञासुओं के पत्र मुझे मिले हैं। उनके उत्तर निम्न प्रकार हैं :

बैरी-नाशन प्रयोग ४, पृष्ठ १६

प्रश्न : क्या प्रयोग अमावास्या को करना है या अमावास्या को १०८ बार जप कर, प्रयोग किसी भी दिन कर सकते हैं ?

उत्तर : 'काल-रात्रि' अथवा 'ग्रहण' या किसी 'पर्व-काल' में मन्त्र की सिद्धि कर सकते हैं, लेकिन प्रयोग 'अमावास्या' को ही करना है।

प्रश्न : 'गुग्गुल' की धूप ११ बार 'नींबू' को दी जाएगी या केवल मन्त्र पढ़कर ११ आहुतियाँ देनी हैं ? क्या मन्त्र को सिद्ध करते समय शत्रु के नाम-सहित जपना है ? क्या यह जप 'नींबू' पर होगा।

उत्तर : मन्त्र सिद्ध करते समय १०८ मन्त्र का जप करना है और गुग्गुल की ११ आहुतियाँ देनी हैं। जप 'नींबू' पर नहीं होगा, केवल शत्रु का नाम सिन्दूर से लिखा जाएगा। प्रयोग के समय 'अमुक' के स्थान पर शत्रु का नाम ले।

(पृष्ठ ८७ का शेष)

विधि : पूर्णमासी से जप प्रारम्भ करे। जप के पूर्व चावल की नौ ढेरियाँ बनाकर उन पर ६ सुपारियाँ मौली बाँधकर नव - नाथों के प्रतीक-रूप में रखकर उनका षोडशोपचार - पूजन करे। तब गुरु, गणेश और इष्ट का स्मरण कर आह्वान करे। फिर मन्त्र - जप करे। प्रति-दिन नियत समय और निश्चित संख्या में जप करे। ब्रह्मचर्य से रहे, अन्य के हाथों का भोजन या अन्य खाद्य - वस्तुएँ ग्रहण न करे। स्व-पाकी रहे। इस साधना से नव - नाथों की कृपा से साधक धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। उनकी कृपा से ऐहिक और पारलौकिक --सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

प्रश्न : क्या 'नींबू' पर काँटे गाड़ने का कार्य अपने घर में किया जाएगा अथवा श्मशान में ? यदि पास में 'काली-मन्दिर' न हो, तो 'नारियल' और 'सिन्दूर' कहाँ अर्पित करे ?

उत्तर : जहाँ साधना की हो, उसी स्थान पर काँटे 'नींबू' पर गाड़ने हैं। अन्त में 'नींबू' को श्मशान में गाड़ना है। किसी भी देवी-मन्दिर में 'नारियल' और 'सिन्दूर' चढ़ा सकते हैं अथवा नदी या तालाब में विसर्जित कर दे।

विशेष : 'बैरी-नाशन प्रयोग' सिद्ध होने पर काली को 'रक्त' की पूजा अवश्य दे। 'रक्त-पूजा' में अपने दाएँ हाथ की अनामिका अँगुली के 'रक्त' की ३ बूंदें भूमि पर गिराए या बताशे, अक्षत आदि में मिलाकर अर्पित करे।

शत्रु-स्तम्भन-मन्त्र (प्रयोग–५) पृष्ठ २०

प्रश्न : क्या 'बांधौं' के स्थान पर 'बांधु' शब्द होगा क्योंकि आपने अन्यत्र 'बाँधु' शब्द का प्रयोग किया है ?

उत्तर : शाबर-मन्त्रों में शब्दों का विशेष महत्त्व नहीं है क्योंकि ये क्षेत्रीय भाषाओं, बोलियों में हैं। 'बाँध, बाँधौं, बाँधु, बाँधव'— ये एक ही शब्द के रूप हैं, जिनका अर्थ 'बाँधना' होता है। यहाँ पर 'बांधौं' शब्द बहु - वचन के रूप में आया है। इसी से मन्त्र में 'पाँचो काला-कलवा बांधौं' शब्द प्रयुक्त हुआ है।

महा-काली शाबर-मन्त्र, पृष्ठ २२

प्रश्न : 'चौंतीसा यन्त्र' की रचना-विधि क्या है ? क्या इसे कागज पर बना सकते हैं ?

उत्तर : 'यन्त्र' की रचना भोज-पत्र पर ही करे। इसकी रचना की विधि के लिए 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६, पृष्ठ ६२ और 'शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ७, पृष्ठ २१-२४ का अवलोकन करें।

प्रश्न : क्या 'चौंतीसा यन्त्र' को धारण करना आवश्यक है ? क्या इसे सुरक्षित घर में नहीं रख सकते ?

उत्तर : सिद्ध किए हुए 'यन्त्र' को धारण करना ही चाहिए। यदि धारण नहीं करना है, तो अन्य किसी को धारण करा दे। इसे अपने पूजा-स्थान पर भी सुरक्षित रख सकते हैं।

प्रश्न : क्या तीनों नींबुओं को काटकर 'रक्त' मिलाकर अर्पित करना है या केवल एक 'नींबू' को ?

उत्तर : माँ काली के चित्र के सामने अर्पित 'नींबू' को ही काट कर 'रक्त' मिलाकर निचोड़ना है, अन्य नींबुओं को वैसे ही रहने दे ।

प्रश्न : साधना श्मशान में करे या घर पर ही एकान्त कमरे में ?

उत्तर : साधना श्मशान, वन, नदी - तट, देवी-मन्दिर या घर के एकान्त स्थान में, जहाँ कोई आए-जाए नहीं – कर सकते हैं ।

प्रश्न : 'महा-काली-मन्त्र' के साथ क्या 'कङ्काली महा - काली··· स्वाहा' का जप करना आवश्यक है ?

उत्तर : 'महा-काली मन्त्र' अपने आप में पूर्ण शक्ति - शाली है । लेकिन यदि इस मन्त्र को अतिरिक्त रूप में जपा जाय, तो यह अत्यन्त उग्र हो जाता है । अतः इसे उत्प्रेरक मन्त्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

प्रश्न : क्या 'शाबर-मन्त्रों' की सिद्धि के लिए गुरु से दीक्षा लेना आवश्यक है ? क्या 'मेरु-मन्त्र' के बिना साधना नहीं कर सकते ?

उत्तर : मार्ग-दर्शन और दोषों के परिमार्जन हेतु गुरु की आवश्यकता होती है । अतः 'मन्त्र-साधना' गुरु से आज्ञा लेकर ही करनी चाहिए । 'मेरु-मन्त्र' को सिद्ध किए बिना साधना नहीं करनी चाहिए ।

प्रश्न : क्या 'शाबर-मन्त्र' की साधना में 'आसन-सिद्धि' आवश्यक है ? इसे सिद्ध करने की विधि क्या है ?

उत्तर : 'आसन-सिद्धि' का आशय है देर तक एक ही स्थिति में बैठकर अविचलित भाव से 'मन्त्र - जप' करना अर्थात् देर तक बैठने का अभ्यासी होना । 'शाबर-मन्त्र' की साधना में 'आसन - सिद्धि' की आवश्यकता नहीं है ।

प्रश्न : 'काला केवाँच' किसे कहते हैं ? यह किस प्रकार का होता है ?

उत्तर : 'काला केवाँच' एक लता - जाति का पौधा है । इसकी पत्तियाँ 'सेम' की पत्ती के समान होती हैं और फलियाँ भी सेम की फलियों की जैसी रोम - युक्त होती हैं । यदि शरीर पर इसके रोएँ लग जाएँ, तो अत्यन्त खुजली होती है । इसके बीज काले होते हैं ।

प्रश्न : 'महा-काली शाबर-मन्त्र' में 'अमुक' शब्द नहीं है ? फिर काम्य प्रयोगों में शत्रु का नाम किस तरह से ले ?

उत्तर : प्रयोग के समय शत्रु के नाम का प्रयोग सङ्कल्प में करे। जैसे (१) मैं 'राधा' को वश में करने के लिए यह प्रयोग कर रहा हूँ। इसे मेरे वश में कर।

(२) मैं 'रामलाल' का उच्चाटन करने के लिए प्रयोग कर रहा हूं। मेरे शत्रु 'रामलाल' का उच्चाटन हो आदि।

प्रश्न : 'चौंतीसा यन्त्र' को 'अष्ट-गन्ध' से बनाए या सिन्दूर से ?

उत्तर : 'अष्ट-गन्ध' से।

प्रश्न : क्या विभिन्न काम्य प्रयोगों को करने के पहले १०८ बार जप आवश्यक है ?

उत्तर : प्रयोगों की सफलता के लिए 'सङ्कल्प' सहित जप आवश्यक है।

भूल-सुधार

'शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ६ में 'छत्तीसगढ़ के अनुभूत शाबर-मन्त्र', पृष्ठ १७-२१ एवं 'महा-काली शाबर - मन्त्र', पृष्ठ २०-२५ में कुछ शब्द अशुद्ध छप गए हैं। उनके शुद्ध रूप निम्नलिखित हैं :

गर्भ-स्तम्भन-मन्त्र—७, पृष्ठ २१

शुद्ध रूप : गौरी गण्डा दे गई, ईश्वर दे गया वाचा। महा-देव थापा धर गया, शब्द भया साँचा। दश - त्रिया की चिन्ता, मेरी दश मास। बाँधु……सत् नाम आदेश गुरु की।

महा-काली शाबर-मन्त्र, पृष्ठ २२

पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	ग्यारह रुद्र देव	ग्यारह रुद्र सेव
७	षड-दर्शनी	षट-दर्शनी

एक दुर्लभ पाण्डु-लिपि

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री भूपेन्द्रदत्त शर्मा

१४५, नया बाँस, नदी मार्ग, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)–२५१००२

मेरे हस्त - लिखित ग्रन्थ - संग्रह में विद्यमान उक्त प्राचीन - जीर्ण पाण्डु-लिपि में कुल छः शाबर मन्त्र हैं –(१) आकर्षण-मन्त्र, (२) फुलै रोग - नाशक मन्त्र, (३) बुध भैरो मन्त्र, (४) मोहनी सिन्दूर मन्त्र, (५) आकर्षण-मन्त्र (द्वितीय) और (६) रोग-नाशक मन्त्र। मन्त्रों को सिद्ध करने की विधि नहीं लिखी है और प्रयोग भी अस्पष्ट हैं। पाण्डु-लिपि में जैसी भाषा है, वही यहाँ प्रस्तुत है। कहीं-कहीं भाषा साङ्केतिक प्रतीत होती है। पाण्डु-लिपि के लेखक हैं—'रुद्रदेव' नामक कोई पण्डित जी। आशा है, 'शाबर' मन्त्रों के शोध में लगे बन्धु इन मन्त्रों पर कृपया विचार करेंगे।

१. आकर्षण-मन्त्र

"ॐ नमो आदेश माता - पिता - गुरु को। जुहार विद्या को नमस्कार। कामरु - देश कमछा - देवि की फूलो वाड़ी, दुदि नारसिंग बैठी जाई। क्या-क्या काम करन्ति आई ? भोवर जैसी उड़ाई ल्यावो, घट जैसी रिडन्ति ल्यावो, बिल्ली जैसी रामन्ति लावो, कुता जैसी न्युलाई ल्यावो, गाई जैसी हुङ्करति लावो, बैहेल जैसौ डूकर्तो लावो, भैसा जैसी फुकरन्ति लावो, धरती जैसी पलटाई लावो, ठिङ्गाल भैरो। ठिङ्गाई लावो। मोहि ल्याविर, मोहि माही, मेरा वञा पगतल नहीं ल्यावेगे, तो कमंछा देवि ! तुमारी आण, दुदि नारसिंग ! तुमारी आण।

सिन्दुर-तिलक-चन्दन घट को भाणो, चषकि माटी गाका - जोड़ कौ वोठ का ठुका पात-समेत डाल को चलो, ऐ तु कजलाई सात बेर मन्त्रणो फुल गुलाबी - हजारि मन्त्री देषा दिणु और चिज सिर में डालणाकि फुल में भरी दे, षाई की सुन्दाई दिणू। मेरी भगती, गुरु की सगति। फुर मन्त्रो, ईश्वरोवाचः। ॐ ऐं आसुरि ऐं प्रत्यक्षे ऐं परोक्षे ऐं मां विदु धरती तान्हन ने म्म सर्वाथ-साधनं कुरु-कुरु स्वाहाः।

ऐं मन्त्र लेवि को वभूत मन्त्रनौ १०१ बेर सत्रू का सिर मैं डालणा।"

२. फुलै-रोग-नाशक मन्त्र

"ॐ नमो आदेश गुरु जी को। सात समुन्दर पार लो इटा-माटी, ता उपजी पिपल की डाली। पिपल डाली वरसरो पाणी। प्रसर पाणी नाउ फुलै, गाउ फुलै, फुल नास्ती हो जाए। मेरी भगती, गुरु की सगति। फुर मन्त्र, ईश्वरो वाच। आषु फकण भलोहा तारा औणी वखत फुलो कटः।"

३. बुध भैरो मन्त्र

"ॐ नमो गुरु जी को आदेश। रे, रे मेरा नाद। बुध भैरौ, माता कालीका का पुत। मेरा गुरु नाद। वुद भैरौं रे लायो, थाम लगायो। थाम हङ्कार थाम फुङ्कार थाम। मेरा गुरु नाद। बुद भैरौ रे मेरौ वैंपाणी सौ पतलो। धुवा सौ उगलो। पाणी सौ पतलो, नि करे तो माता कालीका का पाप डाई। धरती माता की दुवाई, हरिधार बद्री तलका देवतो की दुवाई। मेरी भक्ति।

उमसण मन्त्र, राई मतिर्ण सुगावणौ अ बोल है वेर। ॐ नमो आदेश। राम बोले, लक्षिम्ण बोलै, सिता चलहूक दक्षीण दिशा। मेरी भगती, गुरु की सगती।"

४. मोहनी सिन्दूर मन्त्र

"ॐ नमो आदेश, गुरु जी को नमस्कार। सिन्दुर - सिन्दुर, महा-सिन्दुर नु कहाँ सै आयै? कौन ल्यायो? गरुड़ पर्वत से आयौ। गौरी का पुत गनेस ल्यावा। पैली सिन्दुर माता अञ्जनी की चडायों। आनि कासै कर ल्यायो, रिद-सिद रीली भर ल्यायो। दूसरी सिन्दूर किसको चढ़ाऊँ? अञ्जनी कौ पूत हनुमान्कौ चडायों। हौ-हङ्कार हनुमन्कौ। तेसरी सिन्दुर किसकौ चडाया? बिल जति गोरषनाथ को चडायो। मन रिक्षा पुन वडो-सिधि वर पायो। चौथौ सिन्दुर किसकौ चडायो? चतुर्भुज गनेश कौ चडायौ। पाँचो सिन्दुर किसको चडायो? तारा-त्रिपुरा-तोतला को चडायो। जो करै सिन्दुर की निन्दा, उसको षाशै माया रजीदास दो रजडावै। श्रीगास्णा पावै, त्रिपुरा - सुन्दरी सङ्ग

पावै । षड······काली मनाऊँ, काली वाशै सन्तूरौ को विजड़ा पै । कालिका माता ! मन-इच्छा पूरन कर, सिद्धि-करका । ॐ अपीलीयि, अली आगां काली आप्रगां कुरु - कुरु कालीकायो फट् स्वाहा । फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ।

ऐं मन्त्र ले सिन्दुर मन्तणौ । सिर लगाणौ विन्दी । स्त्री वश हो ।"

५. आकर्षण-मन्त्र (द्वितीय)

"ॐ श्री सीर सिन्दुर कन्या कुँवारी मन-पियारी, चौंस्ट जोगीणी मोडे अगास अस्त्री पुर्य मिलाए सङ्गा । काली गङ्गा से तो पाट छोडि दे । गोरी मैति सौरासी वाट चली आ गोरी । हमारी वाट तोहि जन लागो । दोसरी जगा की माया औ चाट-चलाई अमुक बोलाई आकुँड़ी । जैसी रीडति आकूल जैसी धलकन्तिः स्वाय । जैसी बलकन्ति आ, पौन जैसी सरकन्त्रि आ । जोहि-मोहि मेरा पिण्ड पैतला भया सरा । नङ्करि न आवे, तो हणुमन्ता वीर तेरी आण पड़े । जैसै काम त्वीले रामचन्द्र को सुदारो, तैशो काम मेरा नि सुदारो, तो माता अञ्जनीऽ चली हात लावै । सवा सेर का रोटा न पावै । राजा रामचन्द्र को आरुणन नि पावै । चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचः ।"

६. रोग-नाशक मन्त्र

"ॐ नमो गुरु को आदेश । समुन्दर में टापू, टापू में लूणा चमारी । लूणा चमारी का फूल । वसु रुद्रकार कुण्डता कि छौत चौ लौक वसी । मेरे पास अमृत-कुण्डी बसे, तै अमृत-कुण्डि चौ लोक गङ्गा-जल सिचौ । इस रोगिया का पिण्ड कि छौत झाड़ू । गङ्गा झाड़ू इस रोगीया का पिण्ड कि छौत नी झड़े, तो ईश्वर के पत्थर पड़े ।

मेरी भक्ति, ए गुरु की शक्ति । फुर मन्त्र, ईश्वरोवाच । ऋणा क्षेत्र-पाल, गोबार मा हो जा ।"

छत्तीसगढ़ के अन्य शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री रामकृष्ण कुमार
कोरबा, जिला बिलासपुर (म. प्र.)

[छत्तीसगढ़ के शाबर मन्त्रों की श्रृङ्खला में यहाँ कुछ अन्य शाबर-मन्त्र प्रस्तुत किए जा रहे हैं। प्रस्तुत शाबर-मन्त्र स्वयं सिद्ध हैं तथा अत्यन्त प्रभाव-शाली हैं। ये सभी मन्त्र मेरे द्वारा अनुभूत हैं। इन मन्त्रों को कण्ठस्थ कर लेना चाहिए। सावधानी यह रखनी चाहिए कि 'रजस्वला स्त्री' या 'कन्या' के हाथ का बना हुआ भोजन या अन्य वस्तुएँ न खाए। – प्रस्तुत-कर्त्ता]

१. जञ्जीरा—नाम-मन्त्र

धरमदास बीरा ले के, पुहमी चले आइन। अपन पन्थ के करे निरवारा। कोई भागे अउघट-अउघट, कोई भागे बाटे। भागे रोधन, भागे चेला, भागे कुँवर नीर परि-हारा। ऊँहां ले ढिट्टी चते आईन। रात माय म कहे अर-थाइन। पाखा फोर चते पराईन। कठिन डङ्का कबीर के, मोर बुती सहयो न जाय, ऐसे भगऊआ भागे, तो गड़-सम्हर चले पराय। सत्य गुरू, सत्य कबीर।

विधि : उक्त मन्त्र द्वारा भूत - प्रेत, बाधा, नजर - टोना तथा अभिचार-प्रयोगों को नष्ट किया जाता है। मन्त्र से जल को ७ बार अभि-मन्त्रित करके पिलाना चाहिए या घर में छिड़कना चाहिए।

२. चेचक (माता) के बोल

सूरुज-मुखी सूरही गईया चरे, जेकर गोबर अगीन म जरे, जेकर भभूत शिव शङ्कर के माथ पर चघे। जै जान भस्मासूर, जिहाँ जाँव तिहाँ लगावै, पाप छोड़ धरम म

जांव। भभूत मोहिनी, भभूत जोहिनी, भभूत गुरु पीर, भभूत माता भद्र - काली, काल-कण्ठ माता भवानी। जल में, थल में, रन में, बन में, बैरी सिरदार में। खदासन के होईहा गडूर वहनासन। रामचन्द्र जी निचे रहें। काला-भैरुँ हाथ जोड़ के खड़े रहें। तराव म बैठ के चितोही, बितोही, चितलाख के माता भवानी, वाचा छोड़ कुवाचा करे, तो छत्रपती के डङ्का परे। अक्कईसों माता हिङ्गलाज म जाके शान्त हो जावे। सत्य गुरु, सत्य कबीर।

विधि : उक्त मन्त्र के द्वारा चेचक (माता) को झारा जाता है। एक नारियल और अगर - बत्ती रोगी के सिरहाने रखकर उक्त मन्त्र द्वारा माता को परवाना दिया जाता है। तीन बार मन्त्र पढ़कर रोगी के शरीर पर फूंक मारना चाहिए। इससे चेचक - शान्ति हो जाती है। बाद में नारियल और अगर - बत्ती को मन्दिर में चढ़ा देना चाहिए।

३. माता के बोल (परवाना देना)

(१) झुर-झुर नार बोहे, कुरमी बैठ नहाय। खाँधे खोरी देत हैं, ब्राह्मण पुजे औ पुजे जात कलार। हाँक परथे अक्काईसों माता के, जा दाई हिङ्गलाज म जाबे जुड़ाई। सत-जुग म अकल कुवाँरी, दोआपर म द्रोपदो। त्रेता म महा-माई, कल-जुग में देवी। हत-जुग में धुकी। काकर कारण देवी भए? भोग कारन। भारजा पाँच देव मिल रक्षा करें, ब्रह्मा, विष्णु, महेश। गहों जोत पुरुष, अकल कुवाँरी। नगर कोट के रानी, दूध के दूध–पानी के पानी। जा दाई हिङ्गलाज म जाके शान्त हो जाबे। सत्य गुरु, सत्य कबीर।

विधि : मन्त्र क्रमाङ्क २ के समान।

(२) मैं दारुन नति खिन - खिन नारी, जिहाँ जाँव तिहां करूँ उजारी। मोर नाम दारुन, मोर बहिनी खिन-खिन। धरमदास के बिटिया पुहमी डारे लीन, जा पहूना सङ्ग जा गोहराई। जब खिन-खिन नारी कहाईन। खीर सोंहारी आगे धर दीन्हा, तब खिन - खिन नारी बहुत सुख कीन्हा। सवा सात हाथ धजा फहराईन, तैं जाने उत्पन्न के नाम। तेकर दूर - दूर से छोड़े गाँव। सत्य गुरु, सत्य कबीर।

विधि : मन्त्र क्रमाङ्क २ के समान।

(३) नहीं धरती, नहीं आकाश। नहीं पवन, नहीं पानी। नहीं चाँद, नहीं सुरुज। नीरा काल म जननी तोर अवतार। पुत्र गदत पुत्री बने तैं प्रचण्डा, वीर भागे से बचे नहीं सरमुख लड़े जाय। ऐ के बचे नाम से, ओहू ला काल धर खाय। सवा सात हाथ धजा, सवा हाथ कलशा। एक नारियल घर के बीच। गली म खड़े हों दाई। लौंग, इलायची पूजा तुम्हारी। पान-सुपारी पूजा तुम्हारी। खीर सोंहारी पूजा तुंम्हारी। आद पुरुष तो बोधन देएँ। मोर अवकईसो माता शान्त हो जा। मोर फूँके, गुरु धरमदास के फूँके। पइयाँ पड़त हों, दाई शान्त हो जा। सत्य गुरु, सत्य कबीर।

विधि : मन्त्र क्रमाङ्क २ के समान। इसमें पान-सुपारी, लौंग, इलाइची और खीर से परवाना दिया जाता है।

४. चरन पखारने के बोल

सोन के थारी, रूप के झारी। गङ्गा के जल मँगावों। ऐति ऊगे चन्दा, ऊति ऊगे सुरुज। बगत म चिपे ढाल-

तलवारी। भाँखों ताकट मर जावे, अन्दर जावे समाई। पाँच नाम के झोंपड़ी। अक्कईसों बहिनी के पैयाँ लागों। सिर पर दरश दिखा जावे माता। सत्य गुरु, सत्य कबीर।

विधि : जब चेचक (माता) शरीर के भीतर हों और बाहर दिखाई न दे रही हों तथा रोगी को कष्ट हो, तब उक्त मन्त्र को ७ बार पढ़कर सारे शरीर पर फूंक मारना चाहिए अथवा जल को अभि-मन्त्रित कर पिलाना चाहिए।

५. माता आरती के बोल

आद पुरुष के आद चेला, आद आमिन। सात बाती साज के कञ्चन थार, उठाय आरती लेवथो इक्कईसों बहिनी कें। जा दाई हिङ्गलाज म जाबे जुड़ाई। सत्य गुरु, सत्य कबीर।

विधि : यदि माता (चेचक) सारे शरीर में दिखाई देने लगे, तब उक्त मन्त्र को ३ बार पढ़कर और एक थाल में दीपक जलाकर फूंकना चाहिए।

६. जल मतरने का मन्त्र

जल मतरों, काया मतरों, निरमल करे शरीर। अक्कइसों माता ल सुमरन करों, सो माता के बोल। काकर मतरे ? मोर मतरे, गुरु धरमदास के मतरे। जा रे जल ! मतरा जा, अमुक के पीरा - बीरथा ल दूर करबे। सत गुरु, सत कबीर।

विधि : शरीर में किसी भी प्रकार का कष्ट या पीड़ा होने पर उक्त मन्त्र द्वारा जल को ७ बार अभि - मन्त्रित कर रोगी को पिलाए।

७. मसान भगाने का मन्त्र

कल-कल-कल-कल कलुवा करें। देवता भूत पताल म गड़े, तरो बाजे झाँझ-मँजीरा, ऊपर बाजे निशान। कहें

कबीर सुनों धरमदास, मोर फूँके भागे भूत-मसान। सत गुरु, सत कबीर।

विधि : भूत-प्रेत, मसान आदि को घर या शरीर से भगाने के लिए उक्त मन्त्र को तीन बार पढ़कर फूंके।

८. नजर-टोना बाँधना

लाल घोड़ा—सेत कमान, जे मा चढ़े अगिया बेताल। सात सौ अगाड़ी बाँधों, सात सौ पिछाड़ी बाँधों। रेंगता के पाँव बाँधों, बोलता के जिभीया बाँधों। टोनही के नजर ल बाँधों, गुनियाँ के पाँगन ल बाँधों। काकर बाँधे ? मोर बाँधे, गुरु धरमदास के बाँधे, जा रे टोना! जुग-जुग ले बँधा जा।

विधि : टोनही के टोना, जादू, नजर आदि को बाँधने के लिए उक्त मन्त्र को तीन बार पढ़कर फूंके।

९. अभिचार-कर्म को लौटाने का मन्त्र

जल वाँधो, जलाजल बाँधो। जल के बाँधो कीरा, नौ नगर के राजा ल बाँधो, टोना के बाँधो जँजीरा। धरमदास कबीर, चकमक धूरी धर के काटे जम के जूरी। काकर फूँके ? मोर फूँके। मोर गुरु धरमदास के फूँके, जिहाँ से आँय हस, वहीं चले जा। सत गुरु, सत कबीर।

विधि : किसी भी प्रकार के 'अभिचार - कर्म' को नष्ट करने या लौटाने के लिए उक्त मन्त्र को तीन बार पढ़कर फूंके। करनेबाले पर उल्टा जाकर पड़ेगा।

१० जादू-टोना उतारने का मन्त्र

पाँच नाम सुमरों, प्रताप नाम हे साखी। कोर कोट नाम के भाखे, म करु नाम हे माटी। दूर्गा कलसा धराई के, रतन नाम है सार। काया नाम के भागे, मटोना नाम

जै छार हो जाय। मोर फूँके, मोर गुरु धरमदास के फूँके, टोनही के टोना-जादू-पाँगन होवें, तो फिर जावे।

विधि : टोनही आदि के टोने को नष्ट करने के लिए उक्त मन्त्र को तीन बार पढ़कर टोना लगे व्यक्ति पर भभूत से फूंके।

११. देह बाँधने का मन्त्र

(१) सत के धनुहि, सत के बान। जम मार के, दीन पयान। चन्दा-सुरुज ल साखी दीन। धरमदास ल लिखनी दीन, अहों धरमदास लहेर लिखत, काल भग जाय। कहें 'कबीर' सुन हालक लोर, ऐ जीव ल झन छुवे रे चोर। मोर बाँधे, मोर गुरु धरमदास के बाँधे, जा रे शरीर! बँधा जा। सत्य गुरु, सत्य कबीर।

विधि : भूत-प्रेतादि का भय होने पर या झाड़-फूंक करते समय, अकेले में डर लगने पर, उक्त मन्त्र को तीन बार पढ़कर अपने शरीर पर फूंके। अन्य लोगों के शरीर को भी इसी प्रकार बाँध सकते हैं।

(२) ऐर बाँधों, घेर बाँधों, बाँधों अपन काया। आऊठ मन के काया बाँधों, दास 'कबीर' के दया। काकर बाँधे? मोर बाँधे, मोर गुरु धरमदास के बाँधे, सत-गुरु कबीर के बाँधे। जा रे शरीर! बँधा जा। सत गुरु, सत कबीर।

विधि : मन्त्र क्रमाङ्क ११ (१) की विधि के अनुसार।

(३) चन्दन काठ लगाय पटिया, वज्र लगे किवाँर। बारी-बखरी झन छुब, नाम हे रखवार। तरी घाट, ऊपर घाट, काया-पिण्ड माता के हाथ। रामचन्द्र - लक्ष्मण जी, जति हनुमान के लगे हे पहरा। काकर बाँधे? मोर बाँधे, मोर गुरु रघुदास महन्त के बाँधे। सत - गुरु धरमदास के बाँधे। जा रे काया! बँधा जा। सत गुरु, सत्य कबीर।

विधि : मन्त्र क्रमाङ्क ११ (१) की विधि के अनुसार।

(४) पदूम केसरी नाम, सूर शब्द छाप। कञ्चित नाम के भाखे, म कहें कबीर। अहो धरमदास! मोर फूँके, काल छोड़े बाट। काकर फूँके ? मोर फूँके। मोर गुरु धरमदास के फूँके। जा रे तन! बँधा जा। सत्य गुरु, सत्य कबीर।

विधि : मन्त्र क्रमाङ्क ११ (१) की विधि के अनुसार।

१२. गर्भावली मन्त्र

जल के लहू, रक्त के हाड़ा। ऐसे कृपालु साहेब सिरजन-हारा। पदूम-पदारथ नाम हैं। ऐसे कृपा करिहा साहेब, तो 'अमुक' के वंश उतारा। सत्य गुरु, सत्य कबीर।

विधि : जिस स्त्री के सन्तान न होती हो, उसके नाम से एक नारियल, एक अगर-बत्ती, लौंग, इलायची, पान, सुपारी लेकर और घी का दीपक जलाकर उक्त मन्त्र को २१ बार पढ़े। 'अमुक' के स्थान पर उस स्त्री का नाम ले। इस प्रकार परवाना देने से वह स्त्री अवश्य सन्तान-वती होगी। यह क्रिया स्त्री के रजस्वला से निवृत्त होने के बाद करे। गर्भ-स्थापना का यह अनुभूत मन्त्र है।

१३. गर्भ-रक्षा मन्त्र

मकर-कँवल म मध्यान है, हीरा - कँवल म टेक, सूर्य-कँवल म बसिए, पाँच नाम सन्देश। पाँच नाम जो रख-वारा, करें चराएँत भव-सागर-पारा। बालक तो पौढ़े हैं रक्ष्या करीहा साहेब कबीर। मोर भक्ति, मोर गुरु धरम-दास के शक्ति। कबीर के वाचा, शब्द साँचा। सत्य गुरु, सत्य कबीर।

विधि : गर्भ - वती स्त्री के गर्भ की रक्षा हेतु सत - गुरु साहेब कबीरदास जी के नाम लौंग, इलायची, पान, सुपारी, नारियल का

परवाना देकर उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर गर्भिणी को फूंके। इससे गर्भ-वती स्त्री सुरक्षित रहती है।

१४. सुख-प्रसव-मन्त्र

अमुआ सागर विकट पानी, साधु-सन्त नहाय। मुँख कम्वल के ओट म, सकल पाप कट जाय। जल मघे सिरिघ हैं, चौं दिश में ले डार। सन्त के लईका नहाथ हैं, होईन भव-सागर के पार। ऐसे कृपा करिहा साहेब, तो खसलत लगे न भार। सत गुरु, सत्य कबीर।

विधि : किसी स्त्री को प्रसव के समय विलम्ब हो रहा हो तथा उसे कष्ट-पीड़ा हो रही हो, तो जल के ऊपर दाहिना हाथ रख-कर उक्त मन्त्र को तीन बार या सात बार पढ़कर पिलाए। इससे प्रसव में कष्ट नहीं होगा।

१५. आसन बाँधने का मन्त्र

आसन बाँधो, पासन बाँधो, बाँधो अपन काया। सात हाथ के भूइयाँ बाँधो, बाँधो शैतान के माया। आकाश बाँधो, पाताल बाँधो। बाँधो दशों दिशा, नौ कोस के टोनही बाँधो। धरमदास के वाचा। काकर बाँधे? मोर बाँधे। सत गुरु, सत कबीर के बाँधे। जा बँधा जा। सत्य गुरु, सत्य कबीर।

विधि : साधना करते समय, रात्रि में सोते समय, झाड़ - फूंक करते समय, निर्जन एकान्त में भय के समय उक्त मन्त्र को तीन बार पढ़कर शरीर पर फूंक मारने से भूत - प्रेतादि, नजर - टोना आदि से शरीर सुरक्षित रहता है।

१६. वशीकरण का शैतानी मन्त्र

इन्ना आत्वेन शैतान! मेरी शक्ल बन 'अमुकी' के पास जाना। उसे मेरे पास लाना। न लावे, तो तेरी बहन-भांजी पर तीन सौ तीन तलाक।

विधि : पहले ६ जुम्मे तक, १०८ बार प्रति जुम्मे, लोहबान जलाकर, खिरनी का प्रसाद रखे तथा उक्त मन्त्र का जप करे। जप के पश्चात् प्रसाद को बच्चों में बाँट दे। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। 'वशीकरण' के प्रयोग के समय एकान्त कमरे में खाट के पायन्ते, नग्न होकर, उक्त मन्त्र से १०८ बार 'गुड़' के ऊपर फूँक मारे। 'अमुक' के स्थान पर साध्य स्त्री-पुरुष या कन्या का नाम ले। अभि-मन्त्रित गुड़ को खाट के नीचे रख दे और सो जाए। प्रातः उस गुड़ को बच्चों में बाँट दे। यह क्रिया सात दिन तक करे। अभिलषित पुरुष - स्त्री या कन्या साधक के पास आ जाएगी।

१७. धूल का वशीकरण

ॐ धूली धूलेश्वरी, धूली माता परमेश्वरी। जहाँ लगाँव, मोर बदन लागे। मोर ऊपर जान वारे। न लागे, तो रामचन्द्र की आन।

विधि : पहले १०८ बार उक्त मन्त्र को जप कर सिद्ध कर ले। फिर जिसका वशीकरण करना हो, यदि स्त्री है, तो उसके बाँएँ पैर की मिट्टी और यदि पुरुष है, तो उसके दाएँ पैर की मिट्टी शनिवार के दिन तथा चौराहे की मिट्टी रविवार के दिन सायं-काल में ले आए। तीनों को मिलाकर, गुग्गुल की धूप देकर, उक्त मन्त्र २१ बार पढ़कर उसे अभि-मन्त्रित करे। इस अभि-मन्त्रित धूल को जिसके ऊपर डालेंगे, वही वशीभूत होगा।

१८. कार्य-सिद्धि हेतु गणेश शाबर मन्त्र

ॐ गनपत वीर! भूखे मसान, जो फल माँगू, सो फल आन। गनपत देखे, गनपत के छत्र से बादशाह डरे। राजा के मुख से प्रजा डरे, हाथा चढ़े सिन्दूर। औलिया गौरी का पूत गनेश! गुग्गुल की धरूँ ढेरी, रिद्धि-सिद्धि गनपत धनेरी। जय गिरनार-पति! ओं नमो स्वाहा।

विधि : सामग्री—धूप या गुग्गुल, दीपक, घी, सिन्दूर, बेसन का लड्डू। दिन—बुधवार, गुरुवार या शनिवार। निर्दिष्ट वारों (दिनों) में यदि ग्रहण, पर्व, पुष्य नक्षत्र, सर्वार्थ - सिद्धि योग पड़े, तो उत्तम। समय—रात्रि १० बजे। जप-संख्या—१२५ बार। अवधि—४० दिन। किसी एकान्त स्थान में या देवालय में, जहाँ लोगों का आवागमन कम हो, भगवान् गणेश की षोडशोपचारों से पूजा करे। घी का दीपक जलाकर, अपने सामने, एक फुट की ऊँचाई पर रखे। सिन्दूर और लड्डू के प्रसाद का भोग लगाए और प्रति-दिन १२५ बार उक्त मन्त्र का जप करे। प्रति-दिन के प्रसाद को बच्चों में बाँट दे। चालीसवें दिन सवा सेर लड्डू का प्रसाद रखे और मन्त्र का जप समाप्त होने पर तीन बालकों को भोजन कराकर उन्हें कुछ द्रव्य दक्षिणा में दे। सिन्दूर को एक डिब्बी में सँभाल कर रखे। एक सप्ताह तक इस सिन्दूर को न छुए। उसके बाद जब कभी कोई कार्य या समस्या आ पड़े, तो इस सिन्दूर को सात बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपने माथे पर टीका लगाए। कार्य सफल होगा।

१६. हाजरात 'मेरु'-मन्त्र-सिद्धि

['हाजरात' के अनेक मन्त्र 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' में दिए गए हैं, लेकिन यह बहुत कम लोग जानते हैं कि जिस प्रकार 'शाबर-मन्त्र' की साधना के पहले 'मेरु-मन्त्र' को सिद्ध करना पड़ता है, उसी प्रकार 'हाजरात'-मन्त्र को सिद्ध करने के पहले यदि 'हाजरात-मेरु-मन्त्र' को सिद्ध कर लिया जाए, तो 'हाजरात' में शीघ्र ही सफलता मिलती है। यहाँ उसी 'हाजरात-मेरु-मन्त्र' और उसकी विधि प्रस्तुत है।

—प्रस्तुत-कर्त्ता]

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं हाजरात-सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : शनिवार या मङ्गलवार को, जब 'पञ्चमी तिथि' हो, प्रारम्भ करे। उक्त मन्त्र का १००८ बार जप करे। चमेली के तेल में कपूर मिलाकर १०८ बार हवन करे। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। किसी भी 'हाजरात-मन्त्र' की सिद्धि के पहले उक्त मन्त्र को १०८ बार जप कर फिर साधना प्रारम्भ करे, तो सफलता अवश्य मिलेगी।

२०. भूत-मसान भगाने का हनुमान-जंजीरा

[प्रस्तुत मन्त्र परम पूज्य महन्त गोपालदास महाराज जी से मिला है। 'जँजीरा-मन्त्रों में बोलने की गति और श्वाँस पर विशेष बल दिया जाता है। बोलने की गति तीव्र होनी चाहिए और मन्त्र कण्ठस्थ होना चाहिए। तीन बार से अधिक साँस टूटनी नहीं चाहिए। तभी मन्त्र सफल होता है।—प्रस्तुत-कर्त्ता]

ॐ नमो आदेश गुरू की। मन्त्र साँचा, कण्ठ काँचा। दुहाई हनुमान वीर की। जो जावे लङ्का जारि। लक्ष्मण वीर की तीर की आन। मेमना-पीर की बादशाह, ज्यादा काम में रहे अमादा। दुहाई काली माई, धौला - गिरी वारि, चढ़े सिंह की सवारी। जाके लँगूर अगारी, प्याला पीए रक्त की। चण्डिका भवानी, वेद-वानी में बखानी। भूत नाचे, बेताल नाचे। राखो अपने भक्त की वाणी। मैहर-वाली कलकत्ते-वाली, हाथ कज्जल की थाली। सदा भक्त-हित-कारी। उतर भूत, जल्दी जाई, नहीं तोके खाए कालिका माई। तेरी ज्योति, सदा जलाई। पकड़ के पछाड़ के, मात कर। भूत-प्रेत पर घात कर। हाथ में कृपाण, भक्षण कर ले आन। गोरखनाथ का फन्दा, करेगा तोय अन्धा। उतर भूत, भाग। नहीं तो हनुमान तुझे पकड़ खाय। फुरो मन्त्र, हूँ फट् स्वाहा।

विधि : पहले मन्त्र को कण्ठस्थ करके सिद्ध कर ले। भूत-ग्रस्त रोगी को सामने बैठाकर समूचे लाल मिर्च, सरसों और सूअर की विष्ठा की धूनी देकर, सात बार उक्त मन्त्र पढ़कर, नीम की टहनी से झारे। धूनी का धुआँ रोगी को सुँघाए। भूत तुरन्त रोगी को छोड़कर भाग जाएगा।

मुस्लिम सिद्ध शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री रामकृष्ण कुमार, कोरबा (म. प्र.)

[प्रस्तुत मन्त्रों को पहले ७८६ बार जप ले, तो इनमें विशेष चैतन्यता आएगी। ये मन्त्र मैंने 'बाबा इन्सान अली' के दरगाह 'लूतरा शरीफ' के मौलाना नूर मोहम्मद कारी जी से प्राप्त किए हैं। ये सभी अनुभूत हैं।—प्रस्तुत-कर्त्ता]

१. पेट-दर्द या बाय-गोले का मन्त्र

अल्लाह ! अल्लाह की कोट, अल्लाह - अल्लाह की बाई। गोला - बाय ठिकाने नहीं आवे, तो पीर पैगम्बर हजरत अली की दुहाई।

विधि : 'नौचन्दी जुमेरात' से ७ दिनों तक २ माला प्रति-दिन जप करे। मन्त्र-जप के समय कमरे में 'लोहबान' जलता रहे। प्रयोग के समय पेट पर हाथ फेरते हुए २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर पेट पर फूंक मारे। पेट का दर्द और 'बाय-गोला' ठीक हो जाएगा।

२. नजर, पेट-दर्द, सिर-दर्द मिटाने का मन्त्र

बिस्मिल्लाहे रहेमानिर्रहीम, अल हम्दो लिल्लाहे रबील, आलेमीन हर रहेमानिर्रहीम, मालेकीयो यामा नाम बदोयामानस्ताहीन। अहवई नसरातल मुस्तकी मासरातल गेरील मगडुबेनल डुवालीन आमीन।

विधि : मन्त्र क्रमाङ्क १ के अनुसार।

३. भय दूर करने का मन्त्र

बाबा फरीद की कामरी, अब अँधियारी निशा। तीन चीज बाँधूँ—नाहर, प्रेत, विष। दुहाई बाबा फरीद की !

विधि : रात को सोते समय, या रात्रि में यदि भय लगे, तो उक्त मन्त्र को तीन बार पढ़कर अपने शरीर पर फूंक मारकर, तीन ताली बजा दे। चोर, प्रेत और सर्प पास नहीं आएँगे।

४. यात्रा-भय दूर करने का मन्त्र

लाहा अला ऊबा आला, कुवालाई हलाविहल हिल, आलियल आजिम ।

विधि : यात्रा के समय यदि मार्ग में भय लगे, तो थोड़ी-सी धूल या जल लेकर तीन बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूंक मारे और अपने ऊपर छिड़क ले । यात्रा निर्विघ्न पूरी होगी ।

५. वशीकरण मन्त्र

(१) बिस्मिल्लाहे रहेमानिर्रहीम, आलमोती होवल्लाह ।

विधि : शुक्रवार से जप प्रारम्भ करे, लोहबान की धूप दे । कान में 'गुलाब के इत्र' का फाहा लगाए । ४० दिनों तक रात्रि के समय नित्य एक माला जप करे । प्रयोग के समय सात बार किसी खाने - पीने की वस्तु पर फूंक मारकर खिलाए । इससे किसी को भी वश में किया जा सकता है ।

(२) बिस्मिल्लाहे रहेमानिर्रहीम सलामुन, कौलुनमिनर्रविवरहीम तनजोलुल अजिजुर्रहीम ।

विधि : उक्त मन्त्र को क्रमाङ्क ५ (१) के अनुसार प्रयोग के समय एक बार 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर अपने हाथों की दोनों हथेलियों पर फूंक मारकर अपने चेहरे पर इन हथेलियों को फेरे । जहाँ जाएँगे, लोग वशीभूत होंगे ।

(३) बिस्मिल्लाह हवाना कुलु अल्ला, हथगाना दिल है सख । तुम हो दाना, हमारे बीच फलाने/फलानी को करो दिवाना ।

विधि : शुक्रवार से प्रारम्भ करे । लोहबान जलता रहे । २१ बार 'बिनौला' लेकर, प्रत्येक 'बिनौले' पर २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूंक मारे । 'फलाने/फलानी' की जगह जिसे वश में करना है, उसका नाम ले । फिर उन 'बिनौलों' को आग में डाल दे । ऐसा सात शुक्रवार तक करे । यह मन्त्र उसी दशा में काम करेगा, जब एक - दूसरे को जानते-पहचानते हों । 'अनजान' और 'अनदेखे' लोगों पर असर नहीं करेगा ।

अनुभूत शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : डा० ओमप्रकाश भारद्वाज
जी-८५, कर्मपुरा, नई दिल्ली–११००१५

[व्यवसाय से मैं चिकित्सक हूँ, किन्तु 'तन्त्र-शास्त्र' में मेरा पूर्ण विश्वास है। समय-समय पर मुझे विभिन्न लोगों और महात्माओं द्वारा 'मन्त्र' प्राप्त होते रहे हैं। ये सभी 'मन्त्र' अनुभूत हैं।—प्रस्तुत-कर्त्ता]

१. मन्त्र में अक्षर या पंक्ति छूटने का दोष-निवारण

सिरों सरस्वती, लछमन धारी। तिरिया बन्दो जय-जय काली। तरासों भई, गजमत हारी। जैसे बिन्ध्या दिल भण्डारी, जैसे मालन गूँथे फूल, वैसे विद्या मेरी हो सन्तूल। गौरी-पूत गणपति, मोर अच्छर बिसरो। कण्ठ चढ़ावो, हे माँ परमेश्वरी !

विधि : जब हमारे पास अनेक मन्त्र इकट्ठे हो जाते हैं, तो कभी-कभी किसी अक्षर के छूट जाने की शङ्का रहती है। कभी-कभी तो पूरी-की-पूरी पंक्ति ही छूट जाती है। ऐसी दशा में भी भगवान् गणेश की कृपा से कोई अक्षर या पंक्ति नहीं छूटती। पहले उक्त मन्त्र का १० हजार जप कर सिद्ध कर ले। प्रयोग से पहले इसका उच्चारण करे, तो किन्हीं अक्षरों या पंक्ति के छूटने का दोष नहीं लगेगा और प्रयोग में सफलता मिलेगी।

२. बाय का मन्त्र

पर्बत पर बाइल काग। कै अण्डे, कै बच्चे ? सात अण्डा, सात बहिन। कोन-कोन बहिन ? दाँत चमोकनी, मुँह चमोकनी, आँख चमोकनी, पैर चमोकनी, हाथ चमोकनी, बाय - बाय री हरहुल्ला ! आवेगा हनुमान बाबा, मारेगा लोहा का सोटा। भाग-भाग रे बहनचोद बाय, सात समन्दर पार हुई जाय।

विधि : पहले किसी पर्व या ग्रहण में मन्त्र की सिद्धि करे। फिर प्रयोग-काल में किसी धारदार औजार से २१ बार झाड़े।

३. टूटे अङ्ग पर तेल का मन्त्र

हाड़ जोड़ों, मांस काढ़ो। रकत करो पानि, सोने की चिड़िया। रूपे का पङ्ख, पच जाय सूज। दोहाई ईश्वर महा-देव, गौरा-पार्वती की।

विधि : कड़वे तेल में सेंधा नमक मिलाकर उस पर १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़े। इस तेल को लगाने से टूटा हुआ—सूजा हुआ अङ्ग अच्छा हो जाएगा, पशु हो या मनुष्य।

४. धन-प्राप्ति का मन्त्र

ॐ क्रां क्रीं ह्रां ह्रीं, उसभमजियं च वन्दे। सम्भव मभिणं दणं च सुमइं, पउयप्पह सुपोस जिणं च। पंदप्पहं वन्दे स्वाहा॥

विधि : प्रातः स्नान कर, मौन रहकर, उत्तर की ओर मुँह कर, पद्मासन में बैठकर, 'कमल - गट्टे' की माला से उक्त मन्त्र का एक माला जप शुभ मुहूर्त में करे। सात दिनों में सिद्धि प्राप्त होगी। भोजन में दूध, दही, चावल, खोया ले, भूमि पर सोए। ब्रह्मचर्य व सत्य का पालन करे। इस प्रयोग से धन-वृद्धि, ऐश्वर्व, ऋद्धि - सिद्धि, मनोइच्छा, रुका, खोया, दिया हुआ धन प्राप्त होता है। यह जैन मत का मन्त्र है।

५. देह-रक्षा मन्त्र

दे बानों, दे बन्दन बानों। बानों आपन छातो, माय धिये डायन बानों। बापे पूते, ओझा बानों। मारी ताली, जहाँ जाय ताली, वहाँ तक लागे बज्र किवाड़ी। एक सो सिरसों तेरे राय, सो तिल चुबावे तुगनी माय। से तिल किकर कालिका, उठो काली! करो पुकार। घड़ी - घड़ी हमरो पर खबरदार॥

विधि : पहले सिद्ध योग—'रवि' या 'गुरु - पुष्य' योग में या किसी पर्व पर उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। फिर जहाँ कहीं किसी भयानक स्थान पर रुकना पड़े, तो तीन बार ताली बजाए और मन्त्र पढ़ता जाए। इससे सभी प्रकार की सुरक्षा मिलेगी।

६. कामना-सिद्धि का मन्त्र

ॐ गुरू जी ! जल तू, जलाल तू। तू कातिर, तू कुर्बानी। साहब करके कमाल, तू मुश्किल के वक्त को सँभाल। आई बला को टाल, तू जो 'अमुक' काम करे, वो ही सतगुरू हमारा। पिण्ड काचा, शब्द साँचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। मेरे गुरू का शब्द साँचा। देखूँ सिद्ध गुरू गोरख ! तेरी शक्ति का तमाशा।

विधि : ३ दिनों तक व्रत रखे। केवल चाय - दूध ही ले। १००० प्रति-दिन रात्रि में उक्त मन्त्र को एक हजार जपे। 'अमुक काम करे' के स्थान पर किसी अच्छे कार्य की कामना करे। बुरे काम की कामना कदापि न करे।

७. ज्वाला माई का मन्त्र

चार पहर, चार दीपक जलते। आठ पहर ज्वाला माई दुख-दरिद्र दूर कर दे। शिव भोलेनाथ।

विधि : यह मन्त्र आध्यात्मिक है। इसका जप यथा - शक्ति करने से आनन्द की प्राप्ति होती है।

८. परी हाजिर करने का मन्त्र

हाथ में चुट्टा, बगल में सोटा। मारे ताल, भागे काल। सात सो परी लगे, आकाश बोले। परी देई, जवाब सुन ! चेला वचन हमार बोले, चेला देई जवाब। पढ़ल अच्छर, दे बताय। बोले परी, देई जवाब। पढ़ल अच्छर, देव बताय। गुरू की सिखनी, कामरू के सिखनी। सत-गुरू के बन्दो पाँव, बँगला गुरू जीं के दुहाय ॥

विधि : नौचन्दी जुमेरात से प्रारम्भ करे। पाक - साफ बदन में इत्र लगा कर एक दिया, लोबान, अगर-बत्ती जलाए। पश्चिम-मुख होकर १०८ बार उक्त मन्त्र जपे। चालीस दिन बिना नागा करे। चालीसवें दिन एक उम्दा कुर्सी पास में रखे। जब 'परी' हाजिर हो, तब उसे फूलों की माला पहना दे। जो काम कहे, करता रहे।

९. बवासीर का मन्त्र

उमती-उमती चल-चल स्वाहा।

विधि : लाल सूत लेकर तीन गाँठ लगाए। इक्कीस बार उसे उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित करके पैर के अंगूठे से बांध दे। बवासीर ठीक हो जाएगी।

१०. धरन ठिकाने पर लाने का मन्त्र

ॐ नमो नाड़ो। नाड़ी नोसे, नाड़ी बहत्तर सौ। कोठा चले अगाड़ी, डिगे न कोठा—चले न नाड़ी। रक्षा करें यति हनुमान की आनि। मेरी भक्ती, गुरू की शक्ती। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : पहले शुभ योग में उक्त मन्त्र सिद्ध करे। फिर प्रयोग के समय एक 'नाला' लेकर उसमें नौ गांठ लगाए। फिर उसे रोगी की नाभि पर रख दे और मन्त्र जप-जप कर उसमें फूंक मारे। थोड़ी देर में 'धरन' ठिकाने पर आ जाएगी।

११. शत्रु को परास्त करने का मन्त्र

ॐ बैरी-नाशक दोष दूरय हुं फट् स्वाहा।

विधि : पहले एक सकोरा मिट्टी का लेकर, उसे आक के दूध से भर ले। उस पर शत्रु का नाम लिखे। फिर उसे १०८ बार उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित कर चौराहे पर रखे। शत्रु कभी सफल नहीं होगा।

१२. वशीकरण हेतु कामदेव-मन्त्र

ॐ नमः काम-देवाय। सहकल सहद्रश सहमसह लिए वन्हे धुनन जनममदर्शनं उत्कण्ठितं कुरु कुरु, दक्ष दक्षु-धर कुसुम-वाणेन हन हन स्वाहा।

विधि : कामदेव के उक्त मन्त्र को तीनों काल, एक-एक माला, एक मास तक जपे, तो सिद्ध हो जाएगा। प्रयोग करते समय जिसे देखकर जप करेंगे, वही वश में होगा।

१३. सर्व-कार्य-साधक मन्त्र

ॐ वाङ्-मायाये नमः।

विधि : कुशा की जड़ पर बैठकर उक्त मन्त्र का जप करे, तो सम्पूर्ण कार्य सिद्ध हों।

१४. अशुभ-नाशक यक्षिणी-मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं नमः।

विधि : आँवले की जड़ पर बैठकर उक्त मन्त्र का एक लक्ष जप करे, तो सिद्ध हो जाएगा। अशुभों को दूर करेगा।

१५. गद्दी का मन्त्र

ॐ नमो आदेश, गुरू को आदेश। आ आसन पूजूँ, सिंहासन पूजूँ, पूजूँ गुरू के पाँव। पाँच भूत आज्ञा दो, तो लागूँ गुरू के पाँव। मन मारे, मिट्टी करूँ—करूँ चकना-चूर। पाँच भूत आज्ञा दो, तो आसन करूँ भरपूर।

विधि : शुभ योग में उक्त मन्त्र का जप कर सिद्ध कर ले। फिर तीन बार गद्दी या कुर्सी पर फूंक कर बैठे, तो व्यापार में वृद्धि होती है।

१६. वशीकरण मन्त्र—पान का

कच्ची सुपारी, बँगला पान। कत्था-चूना, वीर मसान। जै तू खाए हमारे हाथ का पान, कटे कलेजा, तजे प्राण। दोहाई हो चमारिन की, छू।

विधि : उक्त मन्त्र की सिद्धि ग्रहण में करे। प्रयोग में पान पर सात बार पढ़कर फूंके और अभीष्ट व्यक्ति को खिला दे, तो उसका वशीकरण होगा।

१७. मन-वचन की गति रोकने का मन्त्र

ॐ नमो हुण्डने ! अमुकस्य मुखं गतिं स्तम्भय। ज्वाला-मयी भ्राग्निमुत्काधिक बन्ध-बन्ध, स्तम्भय, कुरूष्व च ममेप्सितानि । ठः ठः, हुं फट् स्वाहा ।

विधि : रिपु का नाम लेकर सात दिनों तक उक्त मन्त्र का जप करे या 'भोज-पत्र' पर 'हल्दी' से उक्त मन्त्र को लिखकर पीले डोरे से लपेट, पीले फूल से रँगे । फिर इस 'भोज-पत्र' को पत्थरों के बीच में दबा दे । इससे उस शत्रु के मन-वचन का स्तम्भन होगा ।

१८. मूठ लौटाने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू को ! चण्डो - चण्डी ताउ पर, चण्डी आवत मूठ फिरे । नव-खण्डी चक्कर, उपर चक्कर। धरूँ बार, चम्पकरले कहा करूं । श्री नरसिंह का मुख आगे धरूँ, नन्दमास की करो अग्यारी । नाटक-चेटक मेरे साथ, मूठ फिराउँ तीन सो साठ । मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

विधि : 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ ४७ पर श्री दीपक-नाथ जी ने भी मूठ लौटाने का मन्त्र दिया है। उक्त मन्त्र की विधि उसी मन्त्र के समान है ।

१९. देह बांधने का मन्त्र

जल बाँधों, थल बाँधों, बाँधों अपना काया । सात सौ योगनी बाँधों, बाँधों जगत के माया। दुहाई कामरू कमक्षा, नैना योगनी की । दुहाई गौरा - पार्वती की, दुहाई वीर मसान की ।

विधि : किसी पर्व में उक्त मन्त्र को सिद्ध करे । प्रयोग में मन्त्र पढ़कर देह पर फूंक ले, तो रक्षा होती है ।

२०. देह खोलने का मन्त्र

जल खोलों, जल-नीर खोलों। खोलों अपना शरीर का काया। अञ्जीर खोलों, जञ्जीर खोलों। खोलों काल-करैया। दुहाई ईश्वर-महादेव, गौरा - पार्वती की। दुहाई नैना योगनी, कामरू-कामाक्ष्या की।

विधि : किसी पर्व में उक्त मन्त्र को सिद्ध करे। प्रयोग में मन्त्र से देह पर फूंक ले, तो देह खुल जाएगी।

२१. हूक का मन्त्र

ॐ नमो सार की छुरी, धार का बान। हूक न चले रे, मुहम्मदा ज्वान की आन। शब्द सांचा, पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : एक पैनी छुरी लेकर उक्त मन्त्र को ३१ बार पढ़ता जाय और पृथ्वी पर लकीर खींचता जाय। हूक बन्द हो जाएगी।

२२. गोरख प्रातः-स्मरण

प्रातः स्मरामि परमेश्वर - आदि - नाथ—
मत्स्येन्द्र-नाथ-जल-धारी-पदारविन्दम्।
गोरक्ष - नाथ - गुरु - देव - मुखारविन्दम्,
गीर्वाण - वाचमनिशं गज-राज-रामौ ॥१

प्रातः स्मरामि शशि-कान्त-शिला-तलस्थम्,
सिद्धासनं सकल-सिद्ध - समाज - जुष्टम्।
उद्यद् - दिनेश - किरणारुण - जाज - जूटम्,
गोरक्षमक्षयमखण्डमवेद्यमाद्यम् ॥२

प्रातर्भजामि भुजगेश्वर - यज्ञ - सूत्रम्,
ताप - त्रय - त्रिविध - पाप - हरं त्रिनेत्रम्।

(शेष पृष्ठ ११५ के नीचे)

पाँच शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० प्रमोद भारद्वाज
सिद्धि सदन, बाड़वान, धामपुर, बिजनौर (उ. प्र.)

[प्रस्तुत 'मुस्लिम शाबर - मन्त्र' श्री तव्जम्मुल हुसैन जी द्वारा अनुभूत हैं। आपका दीक्षित व पूरा नाम इस प्रकार है—'हकीम व सूफी तव्जम्मुल हुसैन' उर्फ 'अब्दुल हकीम चिश्तिया कादिर' या 'साविरया'।' आप 'पक्का बाग, धामपुर, जिला बिजनौर (उ. प्र.)' के निवासी हैं। लगभग ३० वर्षों से आप जिन्नातों पर शोध कर रहे हैं। आपके संरक्षण में अनेक शिष्य लाभान्वित हो रहे हैं। 'मुस्लिम शाबर-मन्त्र' को सिद्ध करने के लिए पहले पाक-साफ (स्वच्छ) होकर किसी बुजुर्ग (वयोवृद्ध) से आशीर्वाद लेकर ७, ११ या २१ बार 'बिस्मिल्लाह' पढ़ना चाहिए।—प्रस्तुत-कर्त्ता]

१. जिन्न बाबा से सर्व-कामना-पूर्ति

बिस्मिल्लाहेरहिमानिर्रहीम—या अलि मूल फत्ताहो नम्बरी, अल्लिमनों विस्सीद की बस्साऊ अति ॥

विधि : उत्तर या पश्चिमाभिमुख होकर आसन पर बैठे। अगर-बत्ती या लोबान या दोनों की धूनी करे। ४१ दिनों तक नित्य ११०० बार उक्त मन्त्र का जप करे। १० वें या २५ वें दिन यदि विशाल-काय

(पृष्ठ ११४ का शेष)

सिद्धासुरोरग - नरामर - वन्द्य - पादम्,
गोरक्षमक्षरमनादिमनन्तमीड्यम् ॥३
प्रातर्नमामि निगमागम - गम्यमेकम्,
भू - भूप - भूसुर - हिताय कृतावतारम् ।
शान्तं शशाङ्क-दल-कोमल-कान्त-कायम्,
माया - पतिं पतित - पावनमप्रमेयम् ॥४

'जिन्न बाबा' के दर्शन हों, तो पूर्ण श्रद्धा एवं निर्भयता के साथ गुलाब का फूल या चमेली का इत्र, बताशा, जल आदि देकर मन की बात कहे। साथ ही, प्रार्थना करे कि याद करने पर पधारने की कृपा करें। प्रसन्न होने पर 'जिन्न बाबा' सभी कार्य पूरा करेंगे। साधना ४१ दिनों तक पूरी करे।

२. सर्व-कार्य-साधक मोहम्मद मौलाना

काला घोड़ा सफेद बाना, उस पर बैठे मोहम्मद मौलाना। मेरे सामने हाजिर होकर, मेरी मदद करो ॥

विधि : चाँद की पहली तारीख से उक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे। तीसरे दिन रोटी का मीठा मलीदा बनाकर भोग लगाए। लोबान की धूनी व अगर-बत्ती जलाए। अच्छे इत्र का फाहा भी रखे। उक्त मन्त्र का १२१ बार जप २१ दिनों तक नित्य करने से घोड़े पर सवार बुजुर्ग के दिखाई पड़ने पर उन्हें सलाम कर अपनी मंशा कहे। सभी कार्य पूरे होते हैं। निरन्तर जपते रहने पर तुरन्त हाजिर होकर कार्य करते हैं।

३. हाजिरात का मन्त्र

(१) **मौलानन्द जब्बार कश, इन्नामा आकूम बिल फजले, इत अमाकुम्। नपसन, चन्दन, वस्सरा मा आकुम् अन्तल हकीम। इल्म रुहानी दीन वो देवता, मुलाकात रुहानात करो।**

विधि : जो बच्चा उल्टा पैदा हुआ हो, उसे शीघ्र दिखाई देते हैं। ४१ दिनों तक ३,१२५ बार नित्य जप से सवा लाख जप होता है। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाता है। प्रयोग के समय प्याज, लहसुन, मांस-मदिरा, स्त्री-सङ्ग वर्जित है। पश्चिम की ओर मुख करे। तेल का चिराग, अगर-बत्ती, बताशा, पानी, गुलाब का फूल चढ़ाए। स्थान निर्जन एकान्त होने पर पीर या फकीर के दर्शन होते हैं। प्रार्थना करने पर वे किसी भी समस्या का समाधान कर देते हैं या बता देते हैं। बीच में बोलना नहीं चाहिए।

(२) **"अव्वल जारोब कश, जारोब कशी करो।"**

विधि : किसी वृहस्पतिवार को रात्रि १० बजे उक्त मन्त्र का जप प्रारम्भ करे। उत्तर या पश्चिमाभिमुख होकर आसन पर बैठे। अगर-बत्ती जलाए और कोरे सकोरे में आग पर लोबान की धनी दे। ११ माला जप नित्य ११ दिनों तक करे। अनेकानेक पीरों, फकीरों के दर्शन होंगे। कठिन-से-कठिन कार्य होता है। किसी भी प्रकार का, कैसा भी बन्धन हो, वह दूर होता है। पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ६ महीनों तक निरन्तर जप करने से मात्र पुकारने से पीर व फकीर प्रकट होते हैं और सभी कार्य कर देते हैं।

(३) जल बान्धु थल बान्धु, बान्धु वाकी काया। ३ त्रिलोक पर थामी बान्धु, बरमा अन्त लुभाया। बाबोरिगन बदन अपना काल मत सुनाना। वाचा बरम, वाचा कन्या। १० के आगे, १० के पाछे। ८० कोस के दाता को मारे। मेरा काम फौरन करे। दुहाई बङ्गालेवाले स्वामी विद्यानन्द की।

विधि : प्रयोग करते समय पूर्व की ओर मुँह कर बैठे। शुद्ध घी का दीपक, अगर-बत्ती, पुष्प, बताशे, जल रखकर जप करे। ५ माला नित्य ४१ दिनों तक करने से बहुत बृद्ध संन्यासी या बुजुर्ग के दर्शन होने पर विनीत भाव से उन्हें प्रणाम कर अपनी आवश्यकता बताए और कष्ट के लिए क्षमा माँग ले। दैहिक - दैविक - भौतिक — कैसा भी कठिन कार्य हो, तीन दिनों में पूरा कर देते हैं, किन्तु साधक को 'अभिचार-कर्म' से बचना ही श्रेयस्कर है। यदि साधक 'अभिचारिक प्रयोजन' से दुबारा बुलाएगा, तो नहीं आएँगे। अतः सदैव कार्य लेना हो, तो सौम्य कर्म ही करने की प्रार्थना करे।

४. स्वप्न-सिद्धि

(१) ओम् नमो स्वप्न-मातङ्गिनी, सत्य - भाषिणी! स्वप्नं दर्शय स्वाहा। (२) ह्लीं नमो स्वप्न-वाराहि, अघोरे! स्वप्नं दर्शय दर्शय ठः ठः ठः। (३) ओम् ह्लीं नमो स्वप्न-वाराहि, अघोरे, कालि! स्वप्ने कथयोच्चरेत क्रीं स्वाहा।

विधि : पहला मन्त्र 'मातङ्गी माता' का है। यदि एक दिन में ही शुभाशुभ जानना हो, तो निराहार रहकर ११ माला जप कर सो जाए। सब कुछ स्वप्न में दिखाई देगा। ५ माला नित्य जपते रहने से जब आवश्यकता हो, सभी शुभ-अशुभ ध्यान में या स्वप्न में दिखाई देने लगता है। प्रत्येक अष्टमी को कभी खीर, कभी हलुआ और कनेर या गुड़हल के फूल, कमल-गट्टा, गुग्गुल आदि से जप का दशांश होम करते रहना चाहिए। तीनों मन्त्रों की विधि समान है। सदैव श्रद्धा से जप करने से 'वीणा-वादिनी' या 'वाराही'—दोनों में से कोई नित्य दर्शन देती हैं और सभी कार्यों को पुत्र-वत् बताती रहती हैं।

५. मसान-सिद्धि का मन्त्र

कड़-कड़ बोले कालिका, भड़-भड़ जले मसान। हरुफ दड़े की आवाज दे माता, तुझे जाने सकल जहान। माथा टेकता हूँ।

विधि : उक्त मन्त्र लाटरी या सट्टे का नम्बर जानने में बढ़िया काम करता है। सर्व-प्रथम अपने इष्ट एवं गुरुदेव का स्मरण-पूजन करे। तदनन्तर गुग्गुल, लोबान, पान, छः लौंग, इलायची, बताशे, सरसों का तेल, शहद, अदरख, अण्डे, मांस और शुद्ध घी का दीपक लेकर श्मशान में जाए और जलती चिता में उक्त मन्त्र से एक माला जप का होम करे। फिर निर्वस्त्र होकर, मुँह में 'मद्य' भर ले और मन में मन्त्र जपते हुए उस चिता की परिक्रमा करे। इसके बाद जलती चिता में से 'चितास्थि' निकाल कर, उस पर मुँह में भरी 'मदिरा' का कुल्ला कर दे। 'चिता' के ठण्डी हो जाने पर शहद, अदरख, दही, तेल, बताशे और लोबान की अलग - अलग आहुति देकर काले कपड़े में 'शवास्थि' को बाँध कर 'चिता' को माथा टेके। इस प्रकार प्रणाम कर ले आए और उस 'शवास्थि' को एकान्त व निर्जन मकान के पूजा-स्थल में रख ले। नित्य ११ माला का जप व सभी वस्तुओं से दशांश होम करने पर प्रेत सिद्ध होकर मनो - वाञ्छित कार्यों को करता या बताता है, परन्तु केवल सावधान, निर्भय एवं दीक्षित साधक ही इस मन्त्र की साधना करे। अन्यथा यदि आपमें इष्ट-बल नहीं है, तो आप स्वयं भूत-प्रेतों के दास बन जाएँगे। ● ●

सिद्ध शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० श्रीकान्त त्रिपाठी मवैया, लखनऊ (उ. प्र.)

१. 'हनुमान' सुरक्षा-मन्त्र

आसन बाँधूँ, बासन बाँधूँ, बाँधूँ आपनि काया।
चारि खूँट धरती के बाँधूँ, हनुमत! तोर दोहाई॥

विधि : ३१ दिनों तक, लगातार, नित्य सात बार उक्त मन्त्र का जप करे। इस प्रकार वह सिद्ध हो जाएगा। इसी से सम्बन्धित मन्त्र चौकी खोलने या काटने का निम्न प्रकार है—

आसन खोलूँ, बासन खोलूँ, खोलूँ आपनि काया।
तेरे गुरु का दाना खोलूँ, चारि योग से पाया॥
हनुमत! तोर दोहाई।

विधि : उक्त 'सुरक्षा-मन्त्र' के अनुसार।

२. 'काली' का शाबर-मन्त्र

बन्ध-बन्ध, धूर बन्ध। धूर के चारि जुग बन्ध। जाल तू, जलाल तू। साहिबी कमाल तू। आई बलाय को मार तू। इन चारिउ का मारि, विडारा बिश फूकत अगिनि। बासी पानी होइ जाई। दुहाई फरीदा काली की।

विधि : मग काली चौदस को १००८ बार उक्त मन्त्र का जप कर सिद्ध करे। नारियल, चूनर और इत्र भगवती काली को अर्पित करे। जप पूरा करने के बाद सात भट्ठी की शराब एक मिट्टी के सकोरे में भगवती काली को अर्पित करे। मन्त्र किए-कराए अभिचार और ग्रह - बाधाओं को दूर करता है। उक्त मन्त्र से लौंग को फूंक कर प्रयोग करे।

३. ज्वर उतारने-रोकने का मुस्लिम मन्त्र

कलामे मुकद्दम तफिरहात। अलम ए जाल कैद हुम्। उ मा तख्फरीना मा विस्माबरीन।

विधि : पैशाचिक बाधा शान्त करनेवाले एक साधक ने उक्त मुस्लिम मन्त्र दिया है। उनके अनुसार मन्त्र को चमेली की कलम से कागज पर लिख कर बाँध दिया जाय, तो पागल तक ठीक हो जाते हैं। चढ़े हुए ज्वर को शान्त करने के लिए मन्त्र का प्रथम भाग दाहिनी हथेली पर और मन्त्र का मध्य भाग ललाट पर लिखे। बुखार उतर जाएगा अथवा चढ़ेगा नहीं। मन्त्र की विधि ज्ञात नहीं। विज्ञ साधकों से अनुरोध है कि यदि कोई त्रुटि हो, तो कृपया 'चण्डी'-कार्यालय को सूचित करें।

४. शत्रु-पीड़क शाबर मन्त्र

अन्न हर, वस्त्र हर, लोन हर दाल का—शत्रु का। ब्रह्मा की बेटी कालिमा!

विधि : उक्त मन्त्र की विधि यदि किन्हीं महानुभाव को ज्ञात हो, तो कृपया 'चण्डी' - कार्यालय को सूचित करेंगे। इस मन्त्र के बतानेवाले के अनुसार केवल इसका जप करने से शत्रु को पीड़ा होती है।

५. आकर्षण हेतु हनुमद्-मन्त्र-यन्त्र

ॐ अमुक-नाम्ना ॐ नमो वायु-सूनवे झटिति आकर्षय-आकर्षय स्वाहा।

विधि : द्वादश-दल-कमल जैसा 'यन्त्र' लिखकर उसके मध्य में, जहाँ पराग रहता है, उक्त मन्त्र को लिखे। बारह दलों में क्रमश: निम्न मन्त्र लिखे—१. हनुमते नमः, २. अञ्जनी-सूनवे नमः, ३. वायु-पुत्राय नमः, ४. महा-बलाय नमः, ५. श्रीरामेष्टाय नमः, ६. फाल्गुन-सखाय नमः, ७. पिङ्गाक्षाय नमः, ८. अमित-विक्रमाय नमः, ९. उदधि-क्रमणाय नमः, १०. सीता-शोक-विनाशकाय नमः, ११. लक्ष्मण-प्राण-दाय नमः और १२ दश-मुख-दर्प-हराय नमः।

१. केसर, २. कस्तूरी, ३. गोरोचन, ४. रक्त - चन्दन, ५. श्वेत चन्दन, ६. अम्बर, ७. कर्पूर और ८. तुलसी की जड़—इन आठ वस्तुओं को घिस या पीसकर स्याही बनाए। उसी से उक्त यन्त्र बनाए और प्राण-प्रतिष्ठा करे। 'अमुक' के स्थान पर 'साध्य' का नाम लिखे

और उक्त मन्त्र का ११,००० जप करे। ब्रह्मचर्य का पालन करे। जप लाल चन्दन या तुलसी की माला से करे। षोडशोपचार - पूजन करे। आकर्षण हेतु अति प्रभावकारी है।

६. भागे हुए व्यक्ति को बुलाने का टोटका

'सुन्दर-काण्ड' में एक 'रक्त गुलाब-पुष्प' रखकर पुस्तक को उलट कर रख दे अर्थात् मुख - पृष्ठ नीचे कर दे। बाद में पाव भर सुपाड़ी कटी हुई हवन कर दे। इससे भागा हुआ व्यक्ति वापस आ जाता है।

शाबर-मन्त्रों को सिद्ध कैसे करें?

प्रस्तुत-कर्त्ता : डा० एच० एम० तिवारी
दतिबा (म. प्र.)

• शाबर - मन्त्रों की 'साधना' के पूर्व निम्न - लिखित 'सर्वार्थ-साधक-मन्त्र' को २१ बार जप लेना चाहिए—

गुरु सठ गुरु सठ गुरु हैं वीर, गुरु साहब सुमरौं बड़ी भाँत। सिङ्गी टोरीं बन कहौं, मन नाऊँ करतार। सकल गुरु की हर भजे, घट्टा पकर उठ जाग, चेत सम्भार श्री परम-हंस।

• इसके पश्चात् गणेश जी का ध्यान कर **'वक्र - तुण्डाय हुं'** मन्त्र का जप करना चाहिए।

• फिर निम्न-लिखित मन्त्र से 'दिग्-बन्धन' करना चाहिए—

वज्र-क्रोधाय महा - दन्ताय दश - दिशो बन्ध बन्ध, हूँ फट् स्वाहा !

• तब जिस मन्त्र को सिद्ध करना हो, उसका जप करना चाहिए।

शाबर-प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' पं. राजेन्द्रकुमार अवस्थी
हिरणमगरी, उदयपुर (राजस्थान)

[प्रस्तुत सभी प्रयोग श्री ला. सिं. सरुपरिया के विशाल-संग्रह से सङ्कलित हैं। इनमें से कुछ की विधि और फल स्पष्ट हैं, कुछ में अस्पष्टता है। प्रयोग-कर्त्ता अब तक प्रकाशित शाबर-मन्त्रों का अध्ययन कर, उनमें वर्णित दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए, अपने विवेक से इन्हें उपयोग में लाएं। उत्तम तो यह होगा कि किन्हीं जानकार व्यक्ति के परामर्श से प्रयोग करें। —प्रस्तुत-कर्त्ता]

१. देह-रोग : किया-कराया या अपने आप हुआ

ॐ नमो आदेश गुरु को। ओम, अपर कस विकट भेष। खम्भ पति प्रहलाद, रषियानी लरा से पाँव देवी। जङ्घा राखे कालका, मस्तक राखे महा-देवी। जो कोई इस पिण्ड प्राण को छेदे, तो देव-दाना-भूत-प्रेत-डङ्कनी-शङ्कनी-गड-ताप-तिजारी-जूड़ी एक पहर साँझ को, सबेरे को, किया को, कराया को उलट। बाई के पिण्ड की रक्षा श्री नरसिंह जी करे। शब्द सांचा, पिण्ड काँचा। फुरे मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर रोगी को झारे।

२. रक्षा-मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को। बजरी-बजरी, बज्र किवाड़। बज्र के बाजू, दसौ द्वार को चले। चाट उलट बद - बाही को खाता। पहली चौकी गणपति की, दूजी चौकी हनुमन्त की। तीजी चौकी भैरव की, चौथी चौकी राम-राम की।

रक्षा करने को श्री नरसिंह देव जी आए । शब्द सांचा, पिण्ड कांचा । फुरे मन्त्र, ईश्वरी वाचा ।

विधि : शनिवार से २१ दिन, नित्य २१ बार मन्त्र-जप करे। घी का दीपक, गूगल की धूनी, पुष्प, मिष्ठान्न का नैवेद्य दे। सिद्ध होने पर अष्टमी को पूजन कर सात बार अभि-मन्त्रित जल पिए।

३. राज (अधिकारी) वशीकरण

ॐ नमो आदेश गुरु का। जल बाँधूँ, अग्नि बाँधूँ, बारा-बन बाँधूँ, शिव-पुत्र प्रचण्ड बाँधूँ। राजा काई-करनी, आसन छोड़ो। मुझ वैष्णव देवी आसनों, चन्दन ललाट टीको काढ़ि, सिंह-वर्ण कहाऊँ और करूँ सैई चालत में बन्धबान। गौरी-पार्वती-सन्ध्या। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि : धूप-दीप-नैवेद्य के सहित माता पार्वती का ध्यान कर शनिवार से २१ दिनों तक नित्य १२२ बार जप से मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। तब कुंकुम-चन्दन-गोरोचन को गाय के दूध में पीसकर मन्त्र से अभि-मन्त्रित कर तिलक लगाए। 'तिलक' देखकर अधिकारी वशी-भूत होकर अनुकूल हो जाएगा।

४. सर्वोपरि मन्त्र

ॐ परं-ब्रह्म परमात्मने नमः। उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय कराय, ब्रह्म - हरि - हराय त्रिगुणात्मने। सर्व की तूफान दर्शाय, दत्तत्रेयाय नम्। तन्त्र-सिद्धि, फुर स्वाहा।

विधि : पर्व-काल अथवा दीपावली से आरम्भ कर १ लाख जप, हवन से उक्त मन्त्र सिद्ध करे। कोई कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व अष्टोपचार-सहित जप करने से कार्य-सिद्धि होगी।

५. मोहन तिलक

(१) कुंकुम और सिन्दूर को लाए। गोरोचन भी सङ्ग मिलाए॥ आंवला - रस में फेर घुलाए। याका सुन्दरा तिलक लगाए। देख जगत मोहित हो जाए॥

(२) सहदेवी का स्वारस में, तुलसी - बीज मिलाय। पीस तिलक रवि को करे, सब मोहित हो जाय ॥

(३) मैनसिल और कपूर मँगाइए। केले के रस में मिलाइए ॥ तिलक दीजिए भली प्रकार। शिव कहे मोहित संसार ॥

(४) हरताल और असगन्ध का चूर्ण लेउ बनाय। गोरोचन सङ्ग पीसिए केला-रस के साथ। तिलक दे, तो जग वश हो, इसमें संशय नाय।

(५) केसर, मैनसिल, गोरोचन और पत्रज को जल में पीस कर तिलक लगाए। फिर जिससे बात करे, वह वशी-भूत होकर प्यार से बोले।

६. तिलक से पूर्व मोहन मन्त्र

ॐ उड्डामरेश्वराय सर्व-जगन का ही नाम। हूँ फट् स्वाहा।

विधि : एक लाख बार जप कर सिद्ध कर ले। तब सात बार अभि-मन्त्रित कर तिलक धारण करे।

७. चले और थके नहीं

शनिवार को घुग्गू की चोंच और पैर लाकर दोनों को जलाकर भस्म बनाए। उसमें बेल का चूर्ण मिलाए। तब उसे पैरों के तलवे में लेप करे और १०८ बार निम्न मन्त्र जप करे।

अहो महा-वीर ! अमुक कुम्भकरण महा-राक्षस विजय कुरु कुरु स्वाहा।

८. शत्रु के घर में झगड़ा

कौवे के पङ्ख लेकर रविवार को शत्रु के घर की सीमा में गाड़ दे। १०८ बार निम्न मन्त्र पढ़कर वहाँ फूँक दे—

ॐ नमो महा-अमृत-पङ्खी ! कुरु कुरु स्वाहा।

९. वशीकरण

(१) तुलसी मीठे वचन सों, सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरण एक मन्त्र है, तज दे वचन कठोर ।।

(२) झाऊ नदी-मध्य से लाए। जब कहीं पुष्य नक्षत्र सुहाए ।। बाको तिलक करे सिर जोई। जहाँ जाय, स्त्री वश होई ।।

(३) बेल-पत्र, बिजौरा, नमक—इन तीनों को बकरी के दूध में पीस कर मस्तक पर तिलक करे। तिलक देखनेवाला वश में होगा।

(४) घी-ग्वार की जड़ में भाँग के बीज मिलाकर पीसे। उससे तिलक करे, तो वशीकरण होगा।

(४) बट-वृक्ष की छाल को पानी में घिस कर उसमें भस्म मिलाकर उसका तिलक लगाए।

(६) ब्रह्म-दण्डी, बच और कूट का चूर्ण बनाकर, उसे पान में रख कर, रविवार के दिन जिसे खिलाएँगे, वह वश में होगा।

(७) शनिवार के दिन एक पुतली बना कर उसके पेट पर 'साध्य' का नाम लिखे। १०८ बार निम्न मन्त्र उस पुतली पर पढ़े। हर मन्त्र-जप पर एक फूंक पुतली पर मारे। पुतली को 'साध्य' को दिखाए। पुतली को अपनी छाती से लगाए रखे। 'साध्य' का वशीकरण होगा—

१०. पुतली का मन्त्र : जङ्गल की योगिनी, पाताल के नाग ! उठ गए मेरे वीर ('साध्य' का नाम) को लाओ मेरे पास। जहाँ-जहाँ जाए मेरे सहाई, तहाँ-तहाँ आव। कज-भरी नज-भरी, अन्तासी अगरीतक। नफे एक फूँक। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाच। मेरे गुरु का वचन साँची, जो न जाय वीर। गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

११. भूतादिक-दोष मिटाने का उतारा

सन्ध्या - समय शनिवार को छुम्मारे के घर जाय। कूड़ा ऊपर चौस-चौस दीया उल्टे चाक उतराय। दीपक-

दीपक बाती धरिके सबके तेल पुराय । दूध-भात का कूड़ा भरिके तामें शक्कर मिलाय । सन्ध्या-समय जो करे उतार, रोग-दोष मिट जाय । भूत-प्रेत-डाकिनी स्यारें वायु - अङ्ग मिट जाय ॥

१२. कड़ा-भूत-प्रेत का दोष मिटाने हेतु

थोड़ा सुमका नाक मिलाके, ताका कड़ा बनाय ।
धूप-दीप दे पहर करके, रोग-दोष मिट जाय ॥

१३. मूठी-निवारण-मन्त्र

ॐ ही आई को, लँगाई को, जट-जट खट-खट उलट । लूका को, मूका को, नार - नार सिद्ध यती की दोहराई । मन्त्र साँचा, फुरो वाचः ॥

१४. नजर दूर करने का मन्त्र

ॐ नमो सत्य-नाम आदेश । गुरु का ओम नमो नजर, जहाँ पर-पीर न जानी । बोले छल सो अमृत - बानी । कहे नजर कहाँ से आई ? यहाँ की ठोर ताहि कौन बताई ? कौन जाति तेरी ? कहाँ ठाम ? किसकी बेटी ? कहा तेरा नाम ? कहां से उड़ी, कहां को जाई ? अब ही बस कर ले, तेरी माया तेरी जाए । सुना चित लाय, जैसी होय सुनाऊँ आय । तेलिन-तमोलिन, चूड़ी - चमारी, कायस्थनी, खत-रानी, कुम्हारी, महतरानी, राजा की रानी । जाको दोष, ताहो के सिर पड़े । जाहर पीर नजर की रक्षा करे ! मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ॥

विधि : मन्त्र पढ़ते हुए मोर-पङ्ख से बालक को सिर से पैर तक झाड़ दे ।

शाबर-मन्त्र-सर्वस्व

प्रस्तुत-कर्त्ता : आचार्य अरुणकुमार मिश्र
(संस्कृत प्रवक्ता, श्री शि. पू. इ. का. मलसा, गाजीपुर (उ. प्र.)

१. पीड़ित व्यक्ति की बाधा को जानने का मन्त्र

कण्ठे बसे कण्ठेश्वर, बागे बसे बागेश्वर। बागे बाग बुला दे, अङ्गो अङ्ग चिन्हा दे। जवन चोर चोरी करता, ओही के खोजत बानी। तमशगीर के खोजन इखे, गाँव के गौरा। गाँव के डीह जस के बीरा उठा ले। जस तोरा के होई, इ जस हमरा के ना होई। गुनी गुन साधता, साधि ले। ओझा बना दे, भेंड़ा डाइन बना दे। बिलार तब जानँ, पर टूट पहार चले। समे रथ बालो, तोर रथ ※ टूट के चकना-चूर होइ जाइ। यहाँ क विद्या, ना कवरू कमइछा क विद्या। नयना योगिनी क सीख, सत्य गुरु।

विधि : पहले पीड़ित व्यक्ति अपने अभीष्ट देवता के नाम से कुछ अक्षत (चावल) प्रयोग-कर्त्ता के हाथ पर दे। इसके बाद प्रयोग-कर्त्ता अपने पूज्य देवी - देवताओं की दुहाई देते हुए, उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए पीड़ित व्यक्ति के हाथ के अक्षत (चावल) को अपने दाहिने हाथ से लेकर बाँएँ हाथ पर रखे। फिर उस अक्षत के ऊपर अपना दाहिना हाथ फेरे। उक्त मन्त्र में जहाँ ※ ऐसा चिह्न है, वहाँ बाधा के नाम पर यदि ब्रह्म-दोष हो, तो 'एक तोर रथ टूट के चकना-चूर हो जाई' कहे। यदि पितृ (खानदानी) दोष हो, तो 'दो रथ टूट के चकना-चूर हो जाई', दैवी दोष हो, तो 'तीन रथ०' कहे, यदि गृह-दोष हो, तो 'चार रथ०' कहे। यदि भूत-प्रेत-पिशाच दोष हो, तो 'पाँच रथ०', मरी - दोष में 'छः रथ०', मसान में 'सात रथ०', चुरइल-डाकिनी-शाकिनी में 'आठ रथ०' 'देवी-दुर्गा-दोष' में 'नौ रथ चूर हो जाई'

कहे। ऐसा कम-से-कम २१ बार कहे। तत्पश्चात् जो दोष होगा, उतने चावल टूट जाएँगे। उसी के अनुसार बाधा को दूर करे। इसी प्रकार दोष घर का है या बाहर का अथवा नैहर, सासुर, टोला, पड़ोस दुश्मन, मित्र के घर के दोष का ज्ञान होता है।

विशेष : पीड़ित व्यक्ति टूटे हुए चावलों को घर न लाए प्रयोग-कर्त्ता मन्त्र की सिद्धि शाबर-मन्त्रों की सिद्धि-विधि के अनुसार करे। बाधाओं को जानने के पश्चात् बाधाओं को दूर करने का उपाय करे। जिस प्रकार का दोष हो, उसी प्रकार के दोषों के निवारण के मन्त्रों का प्रयोग करे। प्रयोग - कर्त्ता को अपने शरीर की रक्षा का प्रयोग करना चाहिए। संस्कृत के ज्ञाता 'दुर्गा-कवच' या 'हनुमत्-कवचादि' से शरीर का बन्धन करें। हनुमत् - कवचों में रुद्रयामलोक्त 'एकादश-मुखी हनुमत्-कवच' आत्म-रक्षार्थ अमोघ है। अपनी रक्षा करने के बाद अपने घर का बन्धन करना चाहिए। यदि घर पहले से कीलित है, तो अत्युत्तम क्योंकि कभी-कभी प्रेतात्माएँ क्रोधित होकर प्रयोग-कर्त्ता अथवा उसके परिवार के सदस्यों पर आक्रमण करती हैं। 'गृह-बन्धन' हेतु 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' में अनेक यन्त्र हैं। यहाँ गृह-बन्धन का एक प्रयोग आगे दिया जा रहा है।

२. गृह-बन्धन-मन्त्र

काली जपि, निसि-रात काली। काली की माता। अढ़ाई आखर के भोर। मैं हारो, परची के घावो, अण्डा खसै। सवा भरि विय्या सोट। सम्हारि-सम्हारि क धाव। उनठ बान्ह, बनठ बान्ह। देवता-देवी लुकेसरी, काँसा के पेरी। तम्बोक बेड़ी, बेड़ी-पर-बेड़ी। बारह बरस, ३६ युग के भाषा देत छियो। गुरु खोलो, तब न खुले। हम ही खोली, तबहीं खुले। दोहाइ ईश्वर महा-देव, गौरा-पारवती के सत वचन के प्रमाण के।

विधि : यह 'अढ़ैया शाबर' मन्त्र है। इस मन्त्र को पढ़ते हुए घर के चारों ओर रेखा खींचे अथवा सात बार घर के चारों ओर घूम कर धूर फेंक दे।

(३) गुणी व्यक्ति जब भूत-प्रेत झारने के लिए किसी के घर जाता है, तो भूत-प्रेतादि उस पीड़ित व्यक्ति के शरीर एवं घर को छोड़ कर भाग जाते हैं, जिससे उस पीड़ित व्यक्ति को स्थायी लाभ नहीं हो पाता। इसीलिए घर से चलने के पूर्व गुणी व्यक्ति को निम्न मन्त्र का २१ बार जप करना चाहिए—

दर से दुआर बांधो। तिन कोन मेदिनी बांधो। चार कोन जालपा बांधो। आकास - कामिनी बांधो, पाताल वासुकीनाग बांधो। इन्नर के इन्नरासन बान्हो, दोहाई जालबालगीर के। पांच परी, छत्तीसो मसान। दोहाई गङ्गा बहेलिया के। चोर-मोर सभ बांधि लाव।

(४) प्रेत-योनि में ब्रह्म-राक्षस बहुत ही उग्र होते हैं। यदि आभास हो, तो सर्व-प्रथम ब्रह्म-राक्षसों में शिरोमणि 'हरसू ब्रह्म', 'हरीराम ब्रह्म' और कामरूप कामाक्षा के द्वार-पाल 'शिवदत्त ब्रह्म' एवं असम-प्रदेश-निवासी 'नंगटू ब्रह्म' का ध्यान कर निवेदन करे कि—

"पीड़क ब्रह्म प्रसन्न हों और मेरा तथा रोगी का कल्याण करें।"

यदि इनका कुछ 'हक-पद' हो, तो विनम्रता - पूर्वक दिलवाए। यदि ब्रह्म निर्दोष व्यक्ति को परेशान कर रहे हों, तो निम्न 'ब्रह्म-राक्षस दूरीकरण' मन्त्र का प्रयोग करे—

ॐ क्रां कनक की कपाल में बसे वीर कङ्काल। दूर धरन्ता आगी को, पानी को। झोरी में रहै। वीर योगी बैताल पकड़ लाता। भूत को, प्रेत को, डाकिन्नी को, ब्रह्म-राक्षस को। बन्ध-बन्ध, मन्त्र सांचा, फुरो वाचा॥

विधि : मङ्गलवार को अर्द्ध-रात्रि में लाल लँगोट पहन कर पीपल के नीचे १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे। जप के अन्त में चाकू से दाहिना हाथ चीर कर रक्त की बलि दे। फिर उक्त मन्त्र को

सात बार पढ़कर 'सात लौंग' रोगी को खिला दे, तो भूत - प्रेत, डाकिनी-शाकिनी एवं ब्रह्म-राक्षस दूर हो जाएँगे।

५. सकल रोग-दोष एवं 'बाण-मन्त्र' के दुष्प्रभाव को दूर करने का मन्त्र

ॐ काली-काली महा-काली ! गुन उड़ गया, पीपर की डारी। गुनी के गुन, गुनी के पास। मेरा गुन, मेरा गुन पास। फेर दोहाई, कवरू कमइक्षा, नयना योगिनी की।

विधि : उक्त मन्त्र को २१ बार पढ़कर कुशा से झारे, तो सभी रोग - दोष दूर होंगे। यदि किसी ने किसी के ऊपर 'वाण - मन्त्र' का प्रयोग कर दिया हो, तो २१ बार पढ़ते हुए रोगी की पीठ पर हाथ फेरे।

६. दोष पहिचानने का मन्त्र

यदि कभी दोष पहचानने के मन्त्रों से अथवा भूत-प्रेतादि बकुराने के मन्त्रों से भी बाधा का ज्ञान न हो, तो घबराए नहीं। प्रातः-काल या सायं-काल शुद्ध होकर, सामने अगियारी रखकर मन एकाग्र कर २१ बार निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए 'लोहबान' की २१ आहुतियाँ डाले। यह क्रिया ४० दिनों तक करे। इसी बीच पीड़ा पहुँचानेवाली आत्मा या देवता मन्त्रज्ञ से साक्षात् या स्वप्न में सारी बात बताता है एवं मन्त्रज्ञ को उचित निर्देश देता है।

पहिले गुरु के दया, पाछे चेला। मन्त्र ठीक दिया, गुरु पहिचान। जइसे चेला कर लिया, तइसे गुरु के किरिपा से। चेला कोई दुःखी आली हो गइल, उसका मुदई जौने रहे, गुरु की किरिपा से आगे पहिचान ली। आज इसे कोई सुरत से बरियरा हो, तइसे चेला के मालूम हो। जे बड़िअरा हाइ त उपर न परे, जौल बलीन दुःखीया हो जाई, त गुरु क दआ से लखाइले। कौनों सुरत ले चेला, पर जोखिम न आवे। ब्रह्म हो, भूत हो, जीन

हो—सब चिन्हाइ दे। दोहाई नैना योगिन के, दोहाई कौरी कन्ता के।

७. भूत-प्रेतादि झारने के लिए काँस बाँधने का मन्त्र

एक सौ सरसों, सवा सौ राई। कास बान्हो, कवरुआ माई! ईश्वर - महा - देव. गौरा-पार्वती क दोहाई। नैना योगिनी की दोहाई। नटीनिया माई की दोहाई। अस्का-मिनी माई की दोहाई।

विधि : एक साफ की हुई शुद्ध 'काँसे' की थाली लेकर रोगी की पीठ पर रखे। उक्त मन्त्र पढ़ते हुए मूस (चूहे) के बिल की मिट्टी एवं पीली सरसों थाली पर फेंके। थाली पीठ से सट जाएगी। यह क्रिया भूत-प्रेतादि झारने के लिए देहातों में ओझा करते हैं।

८· भूत-प्रेतादि को बांधकर थाली में रखने का मन्त्र

गुन काटे गुन मिलावे, सावा अक्षर भीतर काटे। कांचे खा, पाके खा! माछी-रूप से उड़ जा। पाजर बैठ काट करेजा। खा मस्तक। जा तालु फुर, गुदी खा। खुने नहा, खुन खा। खुन खा के, नयना योगिनी नाक नीचे से फिर गुरु के स्थाने जा। दोहाई कवरू कमइछा क।

विधि : काँसे की थाली में, हाथ में 'लवङ्ग' या 'उर्द' के दाने लेकर उक्त मन्त्र को पढ़ते हुए रोगी के सिर से सात बार उतार कर थाली में रखे, तो रोगी के ऊपर स्थित समस्त भूत बँध जाएँगे।

९. भूत-प्रेत से ग्रस्त व्यक्ति से मन-चाहा कहलाने का मन्त्र

सहजा, सहजा। कहा जाले, का करेले। मोरे गुन लावे ले, पराया गुन छोड़ावे ले। पर-गुनिया गुन क बांध, मोरा गुन आगे करेले सी। गउरा-पार्वती क दोहाई॥

विधि : जिस व्यक्ति के ऊपर भूत - प्रेतादि आकर बोलते हों, उस पर, उक्त मन्त्र को २१ बार पढ़कर फूँक मारे, तो भूत - प्रेतादि

अपने अनुकूल हो जाते हैं और जो कुछ पूछेंगे, उसका ठीक उत्तर मिलेगा।

१०. बीमार स्त्री को भूत-प्रेतादि या परी से छुड़ाने का मन्त्र

वीर-वीर! उठि, जाग। सत-गुरु चरनी लाग। राजा सिगरे राज को पावे। योगी सिगरे योग को पावे। फुर मन्त्र, ईश्वर महा - देव! तेरा वाचा फुरे। कार्य सो जो कार्य, सच्चा साहिब आय करे।

विधि : उक्त मन्त्र से रुग्णा स्त्री को झाड़े, तो ऊपरी बाधा दूर होगी।

११. बँधे हुए भूत को छुड़ाने का मन्त्र

जल काटो, जल-धर काटो। काटो जल की काई। तीस कोस भूत बान्हा। भूत काटो, जानें जल की माई। ओहङ्कार की दुहाई। गुरु क लाखों बार वचन न जाय खाली, भूत कट जाय।

विधि : यदि कोई गुणी मन्त्र-बल से भूत को बाँध दे, तो उक्त मन्त्र पढ़ते हुए गुणी के सामने धूर फेंक दे। बँधे हुए भूत छूट जाएँगे।

१२. भूत बांधने का मन्त्र

ऐठक बान्हो। बैठक बान्हो। बान्हो आपन काया। सवा हाथ धरती बान्हो। नरसिंह को दाया, गोरखनाथ डाइन क पूत। मार-काट अप धूर-भूत सरेपे, डाइन परेते, चारो क मुख बान्हा। झारखण्ड क जाया। कामाक्षा क दोहाइ। जा रे, लग जाय। भूत बन्द हो जाय।

विधि : उक्त मन्त्र को लौंग आदि पर २१ बार पढ़ते हुए रोगी के सिर पर सात बार घुमाए। बाद में अपने विवेकानुसार उस भूत को पिशाच-मोचनादि में बैठाए।

१३. श्मशान-साधना

जिस प्रकार व्यक्ति अन्धकार में बिना प्रकाश के सुविधा - पूर्वक नहीं चल सकता, उसी प्रकार 'मन्त्रज्ञ' साधक इष्ट-देवता के मन्त्रों के बिना साधना में अपूर्ण रहता है। उसके लिए इष्ट-देवता प्रकाश का कार्य करता है। यद्यपि 'शाबर' - मन्त्र स्वयं प्रकाशमान हैं, तथापि साधकों की प्रकृति के अनुसार कुछ साधनाएँ यहाँ दी जा रही हैं। इसी क्रम में 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६ में पृष्ठ १५४, मन्त्र-संख्या ६ में 'श्रीकाली-साधना' प्रस्तुत है। 'प्रेत-बाधा' को श्मशानादि - साधना से सामान्य साधक भी सरलता से दूर कर सकता है। लोकोक्ति है— 'कण्टकं कण्टकेनैव' अर्थात् काँटे से काँटा निकलता है। अतः 'श्मशान-सिद्धि' का विधान यहाँ प्रस्तुत है—

दीपावली के दिन, गूलर के वृक्ष के नीचे जाकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए, निर्भय होकर, हवन करे। तब श्मशान-स्थित आत्मा का आगमन होगा और वह कहेगी कि 'वर माँगो।' तब साधक कहे कि 'जब मैं तुझे बुलाऊँ, तुम आना एवं मैं जो कहूँगा, उसे करना।'' इसके बाद जब वह 'एवमस्तु' कहे, तब घर आए। जब कोई काम पड़े, तब एकान्त में उसका ध्यान करते हुए निम्न मन्त्र को २१ बार पढ़े। साधक जो कहेगा, उसे श्मशान - स्थित आत्मा करेगी। उससे लोकोपकार का काम ले। यह साधना रात्रि १२ बजे से प्रातः ३ बजे तक करे।

सुनु सुनु रे तेलिया मसान ! तोके पूजे नयना योगिनी, सेवै लोना चमारी। आव रे, आव रे ! मसान तोके भय रोक। दोहाई, चलु वेगु, चलु वेगु चलु।

१४. वर्तमान-भूत-भविष्य का कथन

आप लोगों ने सुना होगा कि अमुक साधक कान में हड्डी सटाता है और मनुष्यों के वर्तमान, भूत एवं भविष्य को बतलाता है। इस 'सिद्धि' की विधि मन्त्र-सहित यहाँ प्रस्तुत है—

बामत देविया, बड़ उदवेगिया। ग्रसे पुरुष के माला वामत चलुए, टोना सिख। मङ्गर बुध के रात, इ टोना

मोर अवना भवना। कुकुरे क चान, बिलारे क छौना। कुकुरे क चान पे दिअना जरउबे। पुट मार खउबे, भतार मार खउबे। तब लरिकवा खेलउ रे ! मरखा मसान जगावे। तब टोनमत कहावे। सैयद का नली चलावे। तब टोनयत कहावे। दोहाई ईश्वर-महा-देव, गौरा-पार्वती क दोहाई।

विधि : कुआँ या तालाब के किनारे, रात्रि में २१ दिनों तक, प्रति-दिन ११०० बार उक्त मन्त्र को जपे। सामने अगियारी में 'धूप' दे। २१ दिनों के भीतर वामत आएगी और एक हड्डी देगी। उस हड्डी को कान में सटाते हुए मन्त्र को पढ़े, तो वर्तमान, भूत, भविष्य की बात कान में सुनाई देगी। घर से साधना-स्थल के बीच धोबी के कपड़ा धोने का कोई घाट नहीं पड़ना चाहिए।

१५. कान, सिर एवं अध-कपारी झाड़ने का मन्त्र

एक ब्राह्मण का सात बेटा। सातों ब्रह्मचारी कान झारे, कपार झारे, झारे अध-कपारी। दोहाई ईश्वर-महा-देव, गौरी - पार्वती क। दोहाई कवरू कमइक्षा, नयना योगिनी क।

विधि : उक्त मन्त्र को २१ बार पढ़ते हुए रोगी का सिर पकड़कर झाड़े, तो सिर, कान और आधा-शीशी की पीड़ा दूर होगी

१६. अग्नि से जलने पर झारने का मन्त्र

आई बान्हो, ताई बान्हो। बान्हो मैगर हाथी, अग्नि देव ! मैं तुमको बान्हो, सूर्य-देव साथी।

विधि : उक्त मन्त्र को २१ बार पढ़कर जले हुए स्थान पर फूंके, तो अग्नि से जले की पीड़ा दूर होगी।

१७. जाँघ से पैर तक की पीड़ा दूर करने का मन्त्र

निम्न मन्त्र अनेक बार परीक्षित है। आज के इस वैज्ञानिक युग में मन्त्रज्ञ पाठक इसका प्रयोग कर देखें। जब किसी के जाँघ से लेकर

पैर तक पीड़ा हो, दवा से आराम न हो, तो लोग इसे 'लाँघन पड़ना' कहते हैं। इसे झाड़ने का मन्त्र प्रस्तुत है—

जबाब क सबाब सट जा। दोहाई ईश्वर-महा-देव, गौरा-पार्वती क। दोहाई नोना चमाइन, नैना योगिनी क।

विधि : बाँस की एक कैन (छड़ी), जो ६ हाथ लम्बी हो, उसे बीच से फाड़कर रोगी और एक दूसरा आदमी अपने दोनों हाथों से बाँस के छोरों को पकड़कर अपनी - अपनी कमर में सटाएँ। मन्त्रज्ञ साधक लाल 'अपामार्ग' (चीचड़ी) की ६ पत्तियाँ लेकर एक पत्ती रोगी के मस्तक पर सटा दे और १-१ पत्ती दोनों हाथों में दे दे। इसी प्रकार दूसरी तीन पत्तियों को दूसरे व्यक्ति के मस्तक एवं दोनों हाथों में दे दे। फिर पीली सरसों और मूसे (चूहे) के बिल की मिट्टी लेकर उक्त मन्त्र पढ़ते हुए बाँस की उन छड़ियों पर छोड़े। कुछ देर बाद दोनों छड़ियाँ आपस में सट जाएँगी। यह क्रिया तीन रविवार या तीन मङ्गलवार को करे। रोगी पूर्णतया अच्छा हो जाएगा।

दुर्लभ प्रयोग-संग्रह

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० राजेन्द्रकुमार अवस्थी
उदयपुर (राजस्थान)

[ज्योतिष एवं शाबर-मन्त्रों के ज्ञाता स्वर्गीय श्री रामचरन जी पाठक के हस्त-लिखित दुर्लभ संग्रह से साभार सङ्कलित। इन प्रयोगात्मक मन्त्र-आदि का अनुभव प्रेषक को नहीं है। प्रयोग - कर्त्ता स्व-विवेक से करे और सम्भव हो, तो प्रेषक को परिणाम से अवगत कराएँ।—प्रस्तुत-कर्त्ता]

१. दुर्जन मनुष्य को वश में करना

भोज-पत्र पर लाल चन्दन से 'साध्य' का नाम लिख कर शहद में डाले।

(२) गोरोचन, केसर, महावर से भोज - पत्र पर नाम लिख कर रखे।

(३) तगर, कूट, हरताल, केसर और अनामिका उँगली का रक्त मिला कर तिलक करे।

२. कार्य में सफलता हेतु

सफेद चिरपटी (गुञ्जा) की जड़ पुष्य नक्षत्र में बाएँ हाथ में बाँधे।

३. धन-प्राप्ति का मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं त्रिभुवन - स्वामिनि, महा - देवी, महा-लक्ष्मी ! लल लल हं हः महा-प्रभुत्वर्थं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

विधि : चन्द्र-बल, शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ कर प्रति-दिन अर्द्ध-रात्रि में १०८ बार जप करने से तीन मास में प्रत्यक्ष फल मिलेगा।

४. ऋण-मुक्ति हेतु मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चिट चिट, गणपति - वर ! वर देयं, मम वाञ्छितार्थं कुरु कुरु स्वाहः।

विधि : मङ्गलवार चतुर्थी के दिन गणपति का पूजन कर १०,००० जप करे और १०१ रक्त-करवीर पुष्प, १०१ लड्डू (चूरमा) एकत्र कर १०८ आहुतियाँ दे। सुपारी से पूर्णाहुति करे। गन्ध - पुष्प आदि से पूजन कर २१ लड्डुओं का नैवेद्य लगाए। बाद में दक्षिणा, आरती, पुष्पादि द्वारा पुष्पाञ्जलि देकर प्रणाम करे। लड्डुओं का भोजन कर, शुद्ध जल से आचमन कर पुनः १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करे। प्रारम्भ से अन्त तक एक ही आसन पर बैठे। हवन में 'पलाश' की समिधा का प्रयोग करे। इस प्रकार तीन पुरश्चरण करने से लक्ष्मी-प्राप्ति होगी।

५. वशीकरण हेतु प्रयोग

पुष्य नक्षत्र में धोबी के पैर के नीचे की मिट्टी लाकर रख ले। उसे जिसके सिर पर डालेंगे और पुरुष के पैरों के नीचे डालेंगे, तो वह वश में होगा।

६. शत्रु भगाने हेतु प्रयोग

हस्त नक्षत्र में गणेश जी की सेंधा नमक से मूर्ति बना कर उसके नीचे भोज-पत्र पर शत्रु का नाम लिख कर रख दे। स्नानादि के बाद धूप-दीपादि से उक्त मूर्ति का पूजन कर उस मूर्ति पर जल के छींटे मारे। ज्यों-ज्यों मूर्ति गलेगी, त्यों-त्यों शत्रु भागेगा।

७. शत्रु को भ्रम में भ्रमण कराने का प्रयोग

पीपल की लकड़ी की १० अंगुल की कील शत्रु के घर में डाले। इससे वह शत्रु भ्रम में पड़कर भ्रमण करेगा और दुःखी होगा।

८. कवित्व-शक्ति प्राप्त करने का मन्त्र

'बच' का चूर्ण दूध के साथ पिए और निम्न मन्त्र का जप करे—

ॐ महेश्वराय नमः।

९. रक्षा-मन्त्र

ॐ क्ष्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं क्ष्त्रीं क्ष्त्रीं फट्।

विधि : नित्य उक्त मन्त्र का ५०० जप करे, तो रक्षा होती है।

१०. मोहन-मन्त्र

ओं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं फट् ।

विधि : उक्त मन्त्र से २१ बार अभि-मन्त्रित पान खिलाने से मोहन होता है ।

११. वशीकरण मन्त्र

ॐ नमः कपाल-रुद्राय, सर्व-लोक-वशङ्कराय, अनाथा-याप्रतिहत-बल-वीर्य-पराक्रम-प्रभवाय हा हा, हे हे, पच पच, मारय मारय, कपट कपट, काट, सर्व - कर्म कीर, अमुकं मे वशमानय स्वाहा ।

विधि : एक लाख जप करने से उक्त मन्त्र सिद्ध होता है ।

१२. बवासीर मन्त्र

उमती उमती, चल चल, स्वाहा ।

विधि : लाल सूत की तीन गाँठें देकर २१ बार उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित कर पाँव के अँगूठे से बाँधे, तो बवासीर अच्छी होती है ।

१३. आकर्षण मन्त्र

ॐ ह्रीं चामुण्डे ! ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल, स्वाहा ।

विधि : उक्त मन्त्र का एक लाख जप कर सिद्ध करे । प्रयोग से पूर्व एक माला जप करे, तो 'साध्य' का आकर्षण होगा ।

१४. नेत्र-दर्द दूर करने का मन्त्र

नमो राम जी धनी, लछमन के बाण । आंख दरद करैं, तो लछमन कँवर जी की आन । मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति । फुरो मन्त्र, ईश्वरोवाच । सत्य नाम, आदेश गुरु का ।

विधि : २१ दिनों तक नित्य उक्त मन्त्र का १०८ बार जप, धूप-दीप-नैवेद्य से लक्ष्मण जी का पूजन करने से मन्त्र सिद्ध होगा ।

फिर पीड़ित व्यक्ति को उक्त मन्त्र से झाड़े, तो नेत्र की पीड़ा शान्त होगी।

१५. वशीकरण मन्त्र

(१) हरे पान, हरयाले पान। चिकनी सुपारी, स्वेत खेर। दाहिने कर चूना, मोहि लेह पान। हाथ दे हाथ, रस लेय। पेट दे पेट, रस लेह। श्री नारसिंह वीर! थारी शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वर महा - देवी की वाचा।

विधि : २१ बार उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित पान 'साध्य' को खिलाने से वह वश में होगा।

(२) ओं वश्यं-मुखि, राज-मुखि ! स्वाहा।

विधि : सात बार उक्त मन्त्र पढ़कर, मुँह धोकर, जिसे देखेगा, वह वश में होगा।

(३) ओं राज-मुखि, वश्य-मुखि ! स्वाहा।

विधि : बाँएँ हाथ में तेल लेकर उक्त मन्त्र से तीन बार फूंकें दे और प्रातःकाल शय्या पर बैठकर तीन बार मूल - मन्त्र का पाठ कर फिर मुख-केश पर लगाकर जिसे देखेगा, वह आकर्षित होगा।

(४) ॐ चामुण्डे ! जय जय, स्तम्भय स्तम्भय, मोहय मोहय, सर्वस्त्वायै स्वाहा।

विधि : २१ बार उक्त मन्त्र से अभि - मन्त्रित पुष्प देने पर 'साध्य' वश में होगा।

१६. सफलता, लाभ, धन, पुत्र, अन्न-प्राप्ति

(१) ॐ जय कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : आक की जड़ पर बैठकर उक्त मन्त्र एक लाख जप करने से सभी कामों में सफलता मिलती है।

(२) ओं क्लीं क्लीं नमः।

विधि : तुलसी की जड़ पर बैठकर उक्त मन्त्र का एक लाख जप करने से अचानक राज्य या उच्च राज-पद का लाभ होगा।

(३) ओं ह्लौं नमः ।

विधि : अकोल की जड़ पर बैठकर उक्त मन्त्र का एक लाख जप करने से राज्य या उच्च राज-पद का लाभ होगा ।

(४) ॐ वाङ्ग-मायायै नमः ।

विधि : कुशा की जड़ पर बैठकर उक्त मन्त्र का एक लाख जप करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं ।

(५) ओं ह्रीं क्लीं महा-लक्ष्मयै नमः ।

विधि : वट - वृक्ष पर चढ़कर उक्त मन्त्र का एक करोड़ जप करने से अचल लक्ष्मी प्राप्त होती है ।

(६) ओं ऐं क्लीं श्रीं धनं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि : पीपल के वृक्ष पर बैठकर उक्त मन्त्र का दस हजार जप करने से धन प्राप्त होता है ।

(७) ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि : आम के वृक्ष पर बैठकर उक्त मन्त्र का एक करोड़ जप करने से पुत्र पैदा होता है ।

(८) ॐ महा-यक्ष-सेनाधिपतये मानि - भद्राय (मणि-भद्राय) अप्रार्थितमन्नं देहि मे देहि स्वाहा ।

विधि : बड़ के पेड़ पर उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर उसकी लकड़ी ले आए । उस पर इक्कीस बार उक्त मन्त्र पढ़कर दाहिने कान पर लगा ले, तो बिना मांगे अन्न मिलता है ।

१७. सुख-सुविधा-प्राप्ति का मन्त्र

ॐ घण्ट-कर्णाय नमः ।

विधि : एक लाख जप कर उक्त मन्त्र को पहले सिद्ध कर ले । फिर किसी ग्राम या नगर में प्रवेश करने से पूर्व इस मन्त्र को सात बार किसी पत्थर पर पढ़कर उस ग्राम या नगर में फेंक दे अथवा वहाँ प्रवेश करते समय किसी वृक्ष पर मारे, तो वहाँ अनेक प्रकार के सुख मिलेंगे ।

१८. भोजन मँगवाने का मन्त्र

ॐ उच्छिष्टा चाण्डालिनि वाग्वादिनि राज - मोहनि प्रजा-मोहन स्त्री-मोहन ! आन आन, वे वे, वायु उच्छिष्ट-चाण्डालि, सत्य - वादिनी की शक्ति ! फुरौ मन्त्र, ईश्वरो-वाचः ।

विधि : भोजन के बाद जूठे मुख से उक्त मन्त्र का एक लाख जप करे। फिर जहाँ कहीं एकान्त स्थान में बैठकर मन्त्र का स्मरण करे, तो अनेक प्रकार के भोजन प्राप्त हों।

१६. मृत-वत्सा के पुत्र जीवित रहने का मन्त्र

ॐ परम ब्रह्म-परमात्मने अमुको गर्भे दीर्घ-जीवी सुतं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि : माघ अथवा ज्येष्ठ की पूर्णिमा को घर लिपवा कर तोरण, वन्दन-वार आदि मङ्गल-कार्यों को करे। देवी का पूजन करे और उक्त मन्त्र का १००८ जप कर ब्राह्मण को भोजन, दक्षिणा आदि दे। पुत्र जीवित रहेगा।

२०. सर्व ऐश्वर्य हेतु

ओं ह्रीं क्लीं काल-कर्णिके ठः ठः स्वाहा ।

विधि : उक्त मन्त्र का एक लाख जप कर ढाक की लकड़ी, घी और शहद से हवन करे, तो सब प्रकार का ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

२१. सुख प्रसव हेतु

ऐं ह्रीं भगवती भग-मालिनि चल चल, भ्रामय, पुष्पं विकाशय विकाशय स्वाहा ।

विधि : उक्त मन्त्र से सात बार अभि-मन्त्रित दूध प्रसूता को पिलाए, तो सुख-पूर्वक प्रसव होता है।

२२. अधिक रज-स्राव को रोकना

(१) सर पङ्खा जड़ पीसियै, तन्दुल वारि (चावल का माड़) मिलाय। कर्ष मात्र के पीवत ही, बहत रुधिर शम-नाय (बन्द हो जाय)।

(२) लाल चन्दन, दूध, घृत, मिश्री और शहद मिलाकर पीने से अधिक रजो-धर्म का रुधिर रुक जाता है।

२३. हिचकी बन्द करना

चार छटाँक पानी में चार माशे राई डालकर, गर्म करके, छान कर गुनगुना पीने से हिचकी बन्द हो जाती है।

२४. स्वप्न में उत्तर पाने हेतु

वन में जिस 'काही' वृक्ष पर 'रुपारेल' हो, उसकी लकड़ी सात परिक्रमा लगा कर लाए। उस लकड़ी को जला कर कोयला बना ले। उस कोयले को सिरहाने रखकर सोने से स्वप्न में अपने प्रश्न का उत्तर मिलता है।

२५. श्वास-रोग का निवारण

स्याही-सोख कागज (सोख्ता) को शोरे के पानी में मिलाकर सुखा ले। रात को रोगी के कमरे में जलाए, तो श्वास-रोग दूर होता है।

२६. देह-रक्षा का मन्त्र

ॐ नमो लोह का लोढा, जहां डाकी कूँडी। हमारा पिण्ड पैठा। ईश्वर कुञ्जी, ब्रह्म ताला। हमार पिण्ड काचा, श्री हनुमत वीर रखवाला।

उक्त मन्त्र का पाठ कर कहीं भी रहे या जाए—शरीर की रक्षा होती है।

२७. शत्रु-स्तम्भन हेतु

मरघट की मिट्टी लाकर मिट्टी के पात्र में रखे और शत्रु का नाम उस पर लिखकर नीले कपड़े से बाँध कर गड्ढा खोद कर उसे गाड़ दे। ऊपर से पत्थर रख दे। ऐसा करने से शत्रु का स्तम्भन होगा।

२८. रक्त-गुञ्जा (चिरमीटी) कल्प

पुष्य होय आदित्य कूं (रवि-पुष्य योग) जब लीजे यह मूल (जड़)।
शुक्रवार रोहिणी ग्रहण मोय अनुकूल ॥१
कृष्ण पक्ष की अष्टमी, हस्त नक्षत्र जु होय।
चौदस स्वाती शतभिषा, पून्यो कूं ले भोय ॥२

अर्ध निशा कारज करै, मन की संज्ञा खोय।
धूप-दीप कर लाइए, धरै दूध से धोय ॥३
जो काहू नारी - नर कूँ, विष कोई को होय।
विष उतरे सब तुरत ही, जड़ी पियावे धोय ॥४
जो घिस लगावै भाल में, सभा - मध्य जाय।
मान मिले अस्तुति करे, सब ही पूजे पाँय ॥५
हाजी - हाजी सब करें, जो वह कहै सु-साँच।
एक जड़ी जुगत सूँ, सबै नचावै नाच ॥६
ताँबे मूल मढ़ाय कै, बाँधे कटि सूँ सोय।
नवें मास वा नर के, निहचै बेटा होय ॥७
ऋतुवन्ती सो रक्त सों, अञ्जन आँजे कोय।
देखत भाजे सैन्य सब, महा-भयानक होय ॥८
काजर हूँ घिस के आँजिए, मोहे सब संसार।
गाली देते ताड़िए, तऊ लगा रहे लार ॥९
मधु सूँ अञ्जन भाँजिए, देखै वीर वेताल।
जोर मँगावे वस्तु, ले आवै हाल ॥१०
जो घिस कर लेपन करे, दूध सङ्ग सब अङ्ग।
भूत - प्रेत यक्ष - गण, लगे फिरत सब सङ्ग ॥११
घिस के रुई लगाइए, बाती धरे बनाय।
फिर भिजोवे तेल में, दीपक देय जलाय ॥१२
करे अचम्भ सब मन में, घर समान दरसाय।
सात महल के बीच सूँ, लग्वे पलंग उठाय ॥१३
जो घिस कर करै लेप, मूत्र नर ताय।
भोग - शक्ति बाढ़ै अमित, मन बहु मोद बढ़ाय ॥१४
अजा (बकरी)-मूत्र में, रिगड़ के बेंदी दे जो हात।
करे दूर की बात, रहे यक्षिणी सात ।!१५
गोरोचन के सङ्ग घिस, लिए जाको नाम।
मृत्यु होय वाकी तुरन्त, नहीं वैर को काम ॥१६
लिङ्ग (शिव-लिङ्गी)-पत्र अर्क सूँ घिसिए केवल नाम।
भूत - प्रेत ओर डाकिनी, देखत नसै तमाम ॥१७

स्याउ सङ्ग रिगड़ कै, तलुआ तले लगाय।
आँख मीच के पलक में, सहस्र कोस उड़ जाय ।।१८
जो घिस आँजै पीस के, बन्दी छोड़ कहाय।
बन्दि पड़े छूटे सभी, बिन ही किए उपाय ।।१६
जो गुलाब सङ्ग विस, नाडी लेप कराय।
घड़ी चार कूँ जी परै, मुर्दा सहज उपाय ।।२०
फिर अकोल के तेल में, घिस के आँजे कोय।
धन दीखे पाताल का, दिव्य दृष्टि जो होय ।।२१
जो बाघिन के दूध में, घिस चुपड़े सब अङ्ग।
सर्व - शस्त्र लागे नहीं, बढ़कर जीते जङ्ग ।।२२
घिस कर तिल के तेल में, मर्दन करे शरीर।
दीखे सब संसार कूँ, महा - वीर रण - धीर ।।२३
जो अलसी के तेल में, घिसिए शहद मिलाय।
कोढ़ी के लेपन करे, कञ्चन तन हो जाय ।।२४
जो कोई संसार में, अन्धा आँजे कोय।
सात दिवस भर आँजिए, दृष्टि चौगुनी होय ।।२५
स्याम नगद सङ्ग रिगड़ कै, बीसो नख लिपटाय।
जो नर होय कुमारगी, देखत बस हो जाय ।।२६
कस्तूरी सूँ आँजिए, प्रात - काल लौ लाय।
मौत जु लिखिए सबन की, काल-पुरुष दरसाय ।।२७
गङ्गा - जल सूँ आँजिए, दोनों नेत्र जु माहिं।
बरसा बरसे शूल की, यामें संशय नाहिं ।।२८
जो आँजे निज रक्त सूँ, भरके दोऊ कोय।
देखे तीनों लोक कूँ, अपनी आँखन सोय ।।२६
जो आँजे निज मूत्र सूँ, खुले रागिनी - राग।
जो घिस पीवे दूध सूँ, होए सिद्ध सो भाग ।।३०
गुञ्जा की जड़ बाँधे कान में, जो दर्दी भाय।
डाढ़-दाँत के कीड़े एक-एक कर, निश्चय ही झड़ जाय ।।३१

२६. चौकी मुहम्मद वीर की

बिसमिल रहमाने रहीम, पांय घूघुरा कोट जञ्जीर।
जञ्जीर पर रवैल, मुहम्मद वीर सवा मन की तीर।

जिस पर खेता आवै, मुहम्मद वीर मारा - मारा करता। आवं बाँधा-बाँधा करता, आवै डाकिनो को बाँध। पलीत को बाँध, नौ नरसिंह को बाँध; बावन भैरों को बाँध, जात का मसान बाँध, करि चाहा प्रदान। साज गूँगिया, पीतिया, धोलिया, कालिया, मसान बाँध। बाँध बावरी लाओ, सोती को लाओ, पीसती को लाओ। हजरत इमाम हुसेन की जाँघ से निकाल कर लाओ। बीबी फातिमा के दामन खोलि के लाओ। नहीं लाओ, तो माता का चक्खा दूध हराम कहलाओ। शब्द साँचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

विधि : उक्त मन्त्र को नौचन्दी जुम्मेरात सन्ध्या-समय प्रारम्भ करे। लोबान की धूनी देता जाए। प्रति - दिन दस बार जप—२१ दिनों तक ऐसा करने से सिद्ध होता है। फिर रोगी पर पढ़कर फूंक देने से अच्छा होता है।

३०. वशीकरण मन्त्र

बिस्मिल्लाह रहमाने रहीम। इला इला एनेस इल-लिल्लाह। आन मिलै सया मुहम्मद रसूलिल्लाह। इला-लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह।

विधि : २४ दिनों तक प्रति-दिन २१ बार जप। धूप लोबान, चिरागी फूल, खशबाई इत्यादि। भोग धरे (मिठाई)।

३१. रक्षा-मन्त्र

ओ अजरासन बज्र द्वार। द्वारा दीया वज्र का वाट। वज्र को घाव चलावै, उलट वीर वाही को खावे। मेरे हिवय हरव से जारै देह अनन्त। श्रीराम जी रक्षा करैं। चौकी फिर हनूफान्त। वीर छोटा रण में जावै। भूत-प्रेत पास नहीं आवै। पिण्ड काँचा, शब्द साँचा। फुरै मन्त्र,

हनुमन्त वाचा। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरै मन्त्र, ईश्वर वाच।

विधि : उक्त मन्त्र के जप से यश, कीर्ति, आरोग्य-प्राप्ति एवं भूत-प्रेत-पिशाच आदि से रक्षा होती है।

३२. मन्त्र जँजीरा

ॐ नमो बिस्मिल्लाहि, रहिमान रहीम। गजनी सो चलो, मुहम्मदा पीर चला। सवा सेर का तोसा खाय। असी कोस का धावा जाय। श्वेत घोड़ा, श्वेत पलान जायै। चढ़ै मुहमदा ज्वान। नौ सै कुत्तक आगे चलें, नौ सै कुत्तक पाछे चलें। काँधा पाछे भात डाला। ध्याया चलैं चाल। चालि रे मुहमदा पीर! तेरे सम नहीं कोई बीर। हमारे चोर को ल्याव। सात समुन्दर की खाईं सो ल्याव। ब्रह्मा के वेद सौं ल्याव। काजी की कुरान सौं ल्याव। अठारह पुरान सौं ल्याव। जाव-जाव, जहाँ होय, तहाँ से ल्याव। गढ़ सों, पर्वत सों, कोट सों, किला सों ल्याव। मुहल्ला गली सों ल्याव। सेत खाना सों ल्याव। मोरी-पाताल सों ल्याव। बाग-बगीचा सों ल्याव। कुआ-बावड़ी सों ल्याव। बारह आभूषण, सोलह सिङ्गार सों ल्याव। काजल-कजरौटी सों ल्याव। मण्टी की मोठ सों, रोली मोली सों, हाट-बाजार सों ल्याव। खाट सों, पाया सों। नौ नाडी, बहत्तर कोठा का घूमती बलाय कों ल्याव। हाजिर कर। हाड-हाड, चाम-चाम, नख-सिख, रोम-रोम सों ल्याव रे! ताइया सिलार जिन्द पीर! मारतौं-पीटतौं-पछाडतौं। हाथ में हथकड़ी, पाँव में बेड़ी। गला में तौक,

उलटा कबजा चढाय। मुख बुलाय, सोस विलाय। कैसे हूँ लाव। लिए बिना मत आव। ओं नमो आदेश गुरू को।

विधि : गोबर का चौका लगाकर, रात्रि के समय, धूप-दीप-चन्दन-माला-मिठाई का नैवेद्य चढ़ाए। सवा सेर मोहन-भोग का भोग लगाए। उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे, तो सिद्ध होगा। जब किसी काम को करना हो, तब मन्त्र पढ़कर माथे पर उड़द रखिए। कार्य सिद्ध होगा।

३३. वशीकरण पुत्तलिका-मन्त्र

ओं नमो भगवति ! सूचि चाण्डालिनी नमः स्वाहा।

विधि : उक्त मन्त्र को जपते हुए मोम की एक पुतली बनाए, जिसकी अञ्जलि बँध रही हो। दोनों हाथ हों। अङ्ग-प्रत्यङ्ग अलग-अलग चमकते हों। जिसे वश में करना हो, उसकी प्राण-प्रतिष्ठा इस पुतली में करके उक्त मन्त्र को जपता हुआ अङ्गारों पर पुतली को तपाए। ऐसा करने से वह वश में हो जाएगा। निम्न मन्त्र से प्राण-प्रतिष्ठा करे—

ओं ह्लीं क्रीं कालाग्नि-रुद्रस्य प्राणा इह प्राणाः।

३४. मोहनी मन्त्र

तेल सों में तेल, राजा-परजा पावें मेल। अछक पानी, मसक ल्याव। छः सै वीर, मेरे मास लगाय। हाथ खड्ग, फूलों की माला। जान-विजानै, गोरख जानै। मेरी गति को कहै न कोय। हाथ पछानो, मुख धोऊँ। सुमिरों निरञ्जन देव, हनुमन्त यती। हमारी पति राखौ। महनी - दोहनी दोनौं बहन आव। मोहनी रावल चलै। मुख बोलै, तो जिव्हा मोहूँ। आस मोहूँ, पास मोहूँ। सब संसार में निकलूँ, टीका देय ललाट। आवै तो आवै, नाहि पकड़ बांध ले आवे। दुहाई अञ्जनी के पूत की। दुहाई लक्ष्मण

(शेष पृष्ठ १४८ पर)

असाध्य रोग-निवारक प्रयोग

❀ 'कुल-वाणी-रत्न' श्री अनिल गोविन्द बोकील, पुणे

इस उपासना को 'गुरु'-आज्ञा से करना चाहिए। इससे असाध्य रोग भी अच्छा हो सकता है। विशेष कर, यदि किसी को अर्धाङ्ग वायु (लकवा या पैरालिसिस) होने की सम्भावना हो, तो इस उपासना से यह सम्भावना नहीं रहती।

पहले 'आंवला' या 'शमी - वृक्ष' की समिधाओं की राख (भस्म) बनाकर रखे। साथ ही, 'शेवगा' वृक्ष की छाल का चूर्ण भी बना ले। फिर निम्न प्रकार से ६ दिनों का विधान पूर्ण करे। यथा—

रात्रि में, एक मिट्टी के बर्तन में एक मुट्ठी चावल का भात बनाए। बर्तन-सहित चावल को अपने बिस्तर के बगल में रखे। प्रातः उठते ही मुख-मार्जन कर उसे खा ले। किसी से बात-चीत न करे। 'शेवगा'

(पृष्ठ १४७ का शेष)

जती। दुहाई गुरू गोरखनाथ को। दुहाई निरञ्जन भगवान की। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाच।

विधि : दीवाली की रात में एक थाली में ११ दीपक जलाए। भोज-पत्र पर, सिन्दूर से उक्त मन्त्र को लिखकर पूजन करे। १०८ बार मन्त्र का जप करे। जिसको मोहना हो, उसकी ओर, तीन बार मन्त्र पढ़कर जाए।

३५. वशीकरण

ओं मूलि-मूलि महा-मूलि ! रक्ष रक्ष, सर्वासां क्षेलये परेभ्या स्वाहा।

विधि : नाग-केसर, चिरौंजी, तगर, कमल-केसर, बच, जटा-मासी—इन सबका चूर्ण कर उक्त मन्त्र से अपने अङ्ग को धूनी दे। फिर जिसके पास जाए, वही वश में होगा।

वृक्ष की छाल का चूर्ण १०-१५ ग्राम लेकर, १ कप दूध के साथ प्राशन करे। पूर्वाभिमुख बैठकर निम्न मन्त्र से भस्म लगाए—

शिव-शक्ति मन्त्र

"ॐ श्री ग्रा त्रा ना प्रा मृतं सोऽहम् ।"

(१) शाबर-शक्ति-मन्त्र

"भुः स्वः ने कृत्वास्त्वे मिग्रस्ते मिरं मिरं ताम्ब्रात्वःस्त्वे भुवः भुवः टिवनमस्तुः ।"

(२) कुरु-मन्त्र

"गृहं गृहं गुरं गुरं मृस्ते पर्णास्ते जुर्वा जुर्वा ह्री टीर्मार्यं स्तुम नमो ।"

उक्त दोनों मन्त्रों की 'सोऽहं' के साथ एकता करे। इसकी विधि 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ८, पृष्ठ ३३-३४ पर प्रकाशित है। यथा—

"सोऽहं भुः गृ, सोऽहं स्वः हं, सोऽहं ने गृ······"

उक्त प्रकार से दोनों मन्त्रों का प्रत्येक अक्षर 'सोऽहं' के साथ जोड़ ले। इसी विधि से ५ बार मन्त्र - जप करे। बाद में पुनः 'शिव-शक्ति-मन्त्र' का उच्चारण करे। यह साधना ६ दिनों तक करे।

६ वें दिन की साधना पूर्ण होने पर ६ प्रकार का धान्य एक - एक मुट्ठी लेकर गङ्गार्पण (नदी में अर्पण) करे। प्रत्येक मुट्ठी अर्पण करते समय भगवती दुर्गा का एक-एक नाम उच्चारण करे। यथा—

त्रिपुरा, त्रिपुरेशी, त्रिपुर - सुन्दरी, त्रिपुर - वासिनी, त्रिपुरा-श्री, त्रिपुरा-मालिनी, त्रिपुरा - सिद्धा, त्रिपुराम्बा, महा-त्रिपुर-सुन्दरी ।

अब पुनः 'शिव - शक्ति - मन्त्र' का एक बार उच्चारण करे। अन्त में हाथ जोड़े और 'गायत्री-मन्त्र' द्वारा भगवान् सूर्य को अर्घ्य-दान करे।

इस प्रकार उपासना कर पाठक बन्धु अवश्य लाभ उठाएँ और अपने अनुभव 'चण्डी' को लिख कर भेजें।

परीक्षित शाबर-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री लाल सिंह
ग्राम–केदारपुर, पो.–गोपीगञ्ज (बैरी बीसा), जिला–भदोही (उ. प्र.)

१. शाबर-मेरु-मन्त्र

गुरु शठ, गुरु शठ, गुरु है वीर। गुरु साहब! सुमरों बड़ी भाँत। सिङ्गी टोरों बन कहौं, मन नाऊँ करतार। सकल गुरु की हर भजे, घट्टा पकर उठ जाग। चेत सम्भार श्री परम-हंस, मेरे गुरु की कृपा अपार।

२. तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र जागृत करने का मन्त्र

बाबा आदम सिर जन्त्र ले माई, नारसिंग की करूँ बड़ाई। सिङ्ग तड़ावो एकै डारि, बड़ी दयाली भय उजियारी जागे। होम जागे अग्यारी जागे, खेड़ा-पति रखवाली। जाग कारुआ, जाग वारुआ। जागे वीर मशान, जागे बाबा अघोरी, जिन विद्या फटकारी। जागे मन्त्र-तन्त्र और सब यन्त्र, अली - अली मौला - मुर्तजा अली-मुसकुर खुशाली। अनी अन-भली आवे न पास, आवे सो चली जाय मौजे। मुज्जफर की गली या खुली अल्लाह-फकीरों की गली॥

विधि : उक्त दोनों मन्त्रों की विधि एक है। गुरु-पुष्य, रवि-पुष्य, होली, दिवाली, ग्रहण, अक्षय-तृतीया, महा-शिव-रात्रि, मकर-संक्रान्ति (खिचड़ी)--इनमें से किसी एक दिन स्नान कर सफेद वस्त्र पहनकर पूर्व की ओर मुख कर ऊनी आसन पर बैठे। दो 'वेदी' बनाए। 'वेदी' पर आम की लकड़ी रखे। घी का दीपक, अगर-बत्ती जलाकर क्रमाङ्क एक का मन्त्र रुद्राक्ष की माला से १०८ बार जपे। फिर पूरा मन्त्र पढ़कर 'स्वाहा' बोलकर घी-गुगल से २१ बार 'हवन'

करे। नैवेद्य में 'पञ्च - मेवा' या जल-भरा 'नारियल' चढ़ाए। इसी प्रकार मन्त्र क्रमाङ्क २ का जप 'हकीक' की माला से १०८ बार करे और २१ बार 'हवन' कर नैवेद्य चढ़ाए। नैवेद्य में लड्डू, बताशे, इत्र दे। इस प्रकार दोनों मन्त्र सिद्ध हो जाएँगे।

विशेष : 'ग्रहण'-काल में नैवेद्य न चढ़ाए। 'ग्रहण' बीतने के एक घण्टे बाद नैवेद्य देना चाहिए।

३. शरीर-बन्धन-मन्त्र

अकवन बीरा, चकवन पात। गात बाँधो, छ दिन नौ रात। लोहे कोठरी बजर केवाड़, उसमें राखो आपन पाँचो पिण्ड और प्रान। कोई खोले ना खुले। कोई खोले, छाती फाट मरे। जान जी से जाय। ततवा खार नहाय, आ गए परदेश, जीया जान से। दुहाई बजरङ्ग बली की।

विधि : स्नान कर लाल वस्त्र पहनकर, ऊनी आसन पर पूर्व-मुख होकर बैठे। आम की लकड़ी की दो 'वेदियाँ' बनाए। घी का दीपक, अगर-बत्ती जलाए। 'लड्डू' या जल - भरा 'नारियल' का नैवेद्य चढ़ाए। क्रमाङ्क (१) का मन्त्र पढ़कर 'स्वाहा' बोलकर २१ बार गुगल-घी से 'हवन' करे। उसी वेदी पर क्रमाङ्क (२) का मन्त्र भी पढ़कर स्वाहा बोलकर २१ बार हवन करे। इसके बाद 'शरीर-बन्धन-मन्त्र' का रुद्राक्ष की माला से १०८ जप करे। फिर २१ बार पूरा मन्त्र पढ़कर 'स्वाहा' बोलकर दूसरी 'वेदी' पर 'हवन' करे। 'हवन' के बाद नैवेद्य चढ़ाए। इसके मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। बाद में प्रयोग करे। प्रयोग हेतु ७ बार मन्त्र पढ़कर बदन पर फूंके या ७ बार मन्त्र पढ़कर 'शिखा' में गाँठ लगाए।

४. प्रेत भगाने का मन्त्र

लाल सरसों, हरियर तेल। उदत्त काली, दुइ दत्त केश। तातल खप्पड़ हाथ में ले। दाहिने चलाउ डाकिनी, बाँएँ चलाउ मशान। दुहाई दक्षिण-देव की।

विधि : पहले क्रमाङ्क (३) की भाँति ११०० बार जप कर १०८ बार 'हवन' करे। 'नैवेद्य' में 'नींबू', 'मद्य' और 'लड्डू' चढ़ाए। बाद में प्रयोग करे। प्रयोग हेतु सरसों के तेल में ७ बार मन्त्र पढ़कर फूंके। मरीज के एक कान में तेल डालकर कान बन्द करे। फिर दूसरे कान में तेल डालकर, उसे भी बन्द करे। एक मिनट में बोलना होगा, तो बोलेगा, नहीं तो छोड़कर भाग जाएगा।

५. प्रेत उतारने का मन्त्र

नयन नागरी पाय घाघरी, नदी च काना पहुँच रे, नागरे मशाना जात नहीं, जतन नहीं। दैत्य मशान, इसी वक्त उतरुन जाय। ईश्वर - महादेव, गौरा - पार्वती की दुहाई।

विधि : पहले काला वस्त्र पहनकर क्रमाङ्क ३ की तरह सिद्ध करे। नैवेद्य में 'नींबू' और 'मद्य' चढ़ाए। एक चुटकी उपले की राख पर ७ बार मन्त्र षढ़कर फूंके। फूंकने से प्रेत-बाधा शान्त होगी और लाभ होगा।

६. गृह-बन्धन-मन्त्र

या हिसार या हिसार या हिसार। परी जवर कुफ्फार एक खाई, दूसरी अग्नि पसार गिर्द व गिर्द मलायक असवार। दायाँ दस्त रखे जिब्राइल, बाँयाँ दस्त रखे मीकाइल। पीठ रखे इश्राफील, पेट रखे इज्राइल। दस्त चय हसन दस्त रास्त हुसेन पेशवा मुहम्मद गिर्द व गिर्द अली लायलाह का कोट। इल्लिल्लाह की खाई, हजरत अली की चौकी बैठी। मुहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।

विधि : सर्व-प्रथम शुक्ल-पक्ष में शुक्रवार को स्नान कर सफेद वस्त्र पहनकर पश्चिम-मुख होकर ऊनी आसन पर बैठे। क्रमाङ्क एक के मेरु-मन्त्र तथा क्रमाङ्क २ के मन्त्र से २१-२१ बार 'हवन' करे। इसके बाद बताशा, इत्र का नैवेद्य रखकर घी का दीपक, अगर-बत्ती

जलाए और उक्त मन्त्र का ४० बार जप करे। लोहबान से ११ बार 'हवन' करे। इस तरह चालीस दिन करने से मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। बाद में प्रयोग करे। प्रयोग के समय सात बार मन्त्र पढ़कर रेखा खींचकर बैठे। रेखा के अन्दर कोई बाधा नहीं आएगी। यदि 'गृह-बन्धन' करना हो, तो लोहे की ६ कील लेकर चालीस बार उक्त मन्त्र पढ़े। जल पर २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर अभि-मन्त्रित करे और घर के अन्दर सब कमरों में जल छिड़के। इसके बाद ४ कील चारों कोनों में बाहरी तरफ गाढ़े। २ कील सदर दरवाजे के दोनों तरफ गाड़े। बताशा, इत्र, जल भरे नारियल का नैवेद्य फातिहा को चढ़ाए।

७. बान वापस करने का मन्त्र

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। बजरी बजरी किवाड़, बजरी बजरी बाँधँ दशो द्वार। बजरी आए, बजरी जाए। बजरी सब जग समाय। टोना-जादू सब रद्द हो जाय। जो टोना-जादू लौट के आए, उलट - पलट वहाँ का वहाँ पर जाए। जो-जो करे, सो-सो मरे। वहक्क लायलाह इल्लि-ल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह।

विधि : क्रमाङ्क छः की विधि की भांति नित्य १०८ जप ४० दिनों तक करे। किसी को बान लगे, तो अपना शरीर बांधकर पीली सरसों पर उक्त मन्त्र २१ बार पढ़कर फूंके। मुहम्मद रसूलिल्लाह को जल भरा नारियल, इत्र चढ़ाए। सरसों चारों दिशाओं में, ऊपर-नीचे फेंके। मरीज को भी दिखाए। मरीज के सिर पर घुमाकर फेंके, तो बान वापस चला जाएगा। उक्त दोनों मन्त्रों को ग्रहण, दिवाली को जगाता रहे। ये दोनों मन्त्र परीक्षित हैं। जप के लिए 'हकीक' की या तस्मई-माला का प्रयोग करे।

८. प्रेत पलटने का काली कामाक्षा मन्त्र

काल काली महा-काली ! मीन - मांस करे अहारे। इन्द्रासन मोरन् कामाख्याते छाड़िबो काली। (अमुक) के पास अइबो काली। लागल लगावल काली। पेशल-पेशा-

वल काली। भेजल-भेजावल काली। नैहर सासुर काली। ओझा - गुनी काली। गुन-मन्तर काली। भूत-प्रेत काली। चाहे जो हो, काली। सबको दूर भगाव काली। नहीं तो धोबी के कुण्ड में पड़, गधी का दूध पी। कामरू की विद्या है, नयना योगिनि की सिद्धि है। दुहाई श्मशान - वामती की। दुहाई महा-काल भैरव की। दुहाई गुरुदेव! खबर-दार, सर्व-रक्षा करो तुम॥

विधि : किसी शुक्ल पक्ष मङ्गलवार को स्नान कर घी का दीपक, अगर-बत्ती जलाकर, रुद्राक्ष की माला से १०८ बार जप करे। पूरा मन्त्र पढ़कर 'स्वाहा' बोलकर २१ बार गूगल घी का हवन करे। बताशा, नींबू, नारियल, लड्डू का भोग दे। इस प्रकार केवल सात मङ्गलवारों को करे। मन्त्र सिद्ध हो जायगा। क्रमाङ्क १ और २ के मन्त्रों से पहले बताए अनुसार हवन कर ले। तब इसका जप और हवन करे।

प्रयोग : 'अमुक' के स्थान में रोगी का नाम पढ़े। एक नींबू पर सात बार मन्त्र पढ़कर फूंके। नींबू रोगी के सिर पर सात बार घुमाए और काट कर निचोड़े। लड्डू, बताशा, मद्य भोग दे। प्रेत वापस चला जायगा, चाहे कहीं से भी आया हो। मन्त्र भी लगा होगा, तो वापस जायगा और रोगी ठीक हो जायगा।

६. रक्षा-रेखा मन्त्र

मामभिरक्षय रघु-कुल-नायक!
धृत-वर-चाप रुचिर कर-सायक॥

विधि : 'रवि - पुष्य' या 'गुरु - पुष्य' को स्नान कर श्वेत या पीला वस्त्र पहन कर, पहले क्रमाङ्क १ और २ के मन्त्रों से हवन २१ + २१ बार करे। इसके बाद तुलसी या स्फटिक की माला से ११ सौ जप करे, १०८ हवन करे, तो मन्त्र सिद्ध हो जायगा। जल - भरा नारियल भोग में दे।

प्रयोग : सात बार मन्त्र पढ़कर अपने चारों ओर रेखा खींचे, तो हर आफत-बला से सुरक्षित रहेंगे। चाहे जप करते समय खींचे या कहीं बाहर रहना हो, उस समय खींचे।

उक्त दोनों मन्त्र मेरे द्वारा परीक्षित हैं।

हवन सामग्री : सफेद चन्दन का बुरादा, तिल काला, देशी घी, शक्कर, अगर, तगर, नागर - मोथा, केशर, पञ्च - मेवा, जौ, चावल, कपूर।

१०. वशीकरण मन्त्र

एक निमक रमता माता, दूसर निमक विरह से माता, तीसर निमक औरी बौरी, चौथा निमक रहे करजोरी। यह निमक (अमुक) खाय, हमको छोड़ दूसर नहिं जाय। दुहाई पीर औलिया की। जो कहे सो सुने, जो माँगे सो दे। दुहाई कामरू कामाच्छा नैना योगिनि की। दुहाई गुरु गोरखनाथ की।

विधि : स्नान कर लाल वस्त्र पहने। उत्तर की ओर मुँह कर घी का दीपक, अगर - बत्ती जलाए। बताशा, नींबू, इत्र का नैवेद्य रखे। उक्त मन्त्र का १०८ बार जप कर २१ बार गुग्गुल से 'हवन' करे। इस तरह ४० दिन करे, इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। बाद में प्रयोग करे। प्रयोग हेतु नमक का चार ढोंका राई बराबर लेकर २१ बार उक्त मन्त्र पढ़े। इस अभि - मन्त्रित नमक को सब्जी वा दाल में डालकर साध्य को खिलाए।

विशेष : उक्त वशीकरण-मन्त्र पति-पत्नी के बीच काम करता है। गलत कार्यों में प्रयोग न करे। अन्यथा मन्त्र की शक्ति समाप्त हो जाएगी।

११. विद्वेषण मन्त्र

ॐ भैरवाय श्मशान 'अमुको' अरुक 'फलाँ' में विद्वेष कुरु फट्।

विधि : उक्त मन्त्र को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। घी का दीपक और अगर-बत्ती जलाकर, ऊनी आसन पर नैऋत्य कोण की ओर मुँह करके बैठे। रक्त वस्त्र पहने। हाथी-दाँत या रुद्राक्ष की माला से जप करे। ताँबे का कलश रखे। दोपहर में ५०० बार जप करे। लड्डू, मद्य का भोग दे। सरसों और सरसों के तेल से २१ बार 'हवन' करे। 'अमुको' की जगह औरत का नाम, 'फलाँ' की जगह उसके पति का नाम ले, जिससे लड़ाई कराना हो। इस तरह २१ दिनों तक करे।

१२. रक्त-बन्धन-मन्त्र

आर बान्ध, धार बान्ध, रक्त की बूँद बान्ध। मेरी आन, मेरे गुरु की आन। ईश्वर-महादेव गौरा-पार्वती की दुहाई।

विधि : 'ग्रहण' या 'दिवाली' को घी का दीपक, अगर-बत्ती जलाकर उक्त मन्त्र का ११०० बार जप करे। १०८ बार गुग्गुल से 'हवन' करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। 'ग्रहण' में भोग बाद में दे, दिवाली को भोग उसी समय दे। बाद में प्रयोग करे। प्रयोग हेतु किसी भी दवा को उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित करके पिलाए या जल को अभि-मन्त्रित कर दवा के साथ जल को पिलाए। दिन में तीन बार पिलाने से स्त्रियों का बहता खून ३ दिन में बन्द हो जाता है। यदि धारदार हथियार या चाकू से कटने पर अँगुली घुमाकर मन्त्र पढ़कर फूंके, तो खून बहना बन्द हो जाता है।

१३. दिशा-बन्धन मन्त्र

उत्तर बाँधो, पूरब बाँधो, दक्षिण बाँधो, पश्चिम बाँधो बाँधो चारों दिशा। सब डाइन की नजर बाँधो, छड़ पर हाथ, बत्तीसा दुहाई नारसिंह की।

विधि : 'गुरु - पुष्य', 'रवि - पुष्य', होली, दिवाली, ग्रहण, अक्षय-तृतीया, मकर-संक्रान्ति (खिचड़ी)—इनमें से किसी दिन उक्त मन्त्र का १०८ जप करे। ११ बार गूगल-घी से हवन करे, लड्डू भोग में दे। मन्त्र सिद्ध हो जायगा।

(शेष पृष्ठ १५७ पर)

भूत-बाधा-नाशक मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री सन्तोषकुमार घुटके
महात्मा-नगर, नासिक (महा-राष्ट्र)–४२८००७

(१) सतनाम आदेश गुरू का। पवन-पानी का नाद अनाहद दुन्दुभी बाजै, जहाँ बैठी जोग-माया साजे। चौसठ जोगनी, बावन वीर, बालक की हरै सब पीर। आगे जात शीतला जानिए बन्ध बन्ध, बारे जात मसान भूत बन्ध, प्रेत बन्ध, छल बन्ध, छिद्र बन्ध, सबको मार कर भसमन्त। सत-नाम आदेश गुरू का। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा ॥ छू ॥

(२) ओम पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण चारिका सर्ग—पाताल, आँगन-द्वार मंझार खाट बिचौना ग़उई सावनार सागलन। ओ जेव-नार बिरा सोधावे फूनेल लकवेग सोपारी जे मुँह तेल अवटन सवटन।

(पृष्ठ १५६ का शेष)

प्रयोग : शुद्ध मिट्टी पर सात बार मन्त्र पढ़कर दान करे। मिट्टी चारों दिशाओं में फूंके, तो चारों दिशाएँ बँध जाती हैं।

१४. बिच्छू का मन्त्र

तीन पानी, तीन पानी। मच्छर-दानी, गौरा पानी। गाई के गोबरे, बिच्छी ब्यानी। बिच्छी उतरे, पोर-पोर। दुहाई ईश्वर महा-देव की। दुहाई-गौरा-पार्वती की।

विधि : ग्रहण या दिवाली को घी का दीपक, अगर-बत्ती जला कर १२१ बार जप करे। २१ बार गूगल से हवन करे। लड्डू का भोग दे। मन्त्र सिद्ध हो जायगा।

प्रयोग : मन्त्र पढ़ते हुए नीम की टेरी से २१ बार झारे, तो बिच्छी उतर जायगी।

ओ अवनहान पहिरण लहगा सारी जान डोरा चोलिया चादरि झान-मोट रुई ओढ़न झीन शङ्कर गौरा छेत्रपाला पहिले झारो बारम्बार। काजर तिलक लिलार आँखि, नाक, कान, कपार, मुँह, चोटा, कण्ठ, अबर्कष, काँध, बाँह, हाथ, गोड़, अँगुरी, नख, धुकधुकी, अस्थल, नाभि, पेटी, नीचे, जोनि, चरणि कत भेटी, पोठि करि दाव, जाँघ, पेउरी, घूँटा, पावतर, ऊपर अँगुरा चाम रक्त, मांस, डाँड, गुदा, थातुओ, जो नहीं, छाड़ू अन्तरी कोठरी करेज, पित ही पित, जिय प्राण सब बित बात, अङ्क मने। जागु बडे नरसिंह कि आनु। कबहु न लागु फाँस पितर राँग, काँच, लोह रूप सोन साथ पार मठ वशन रोग जोग कारण दशन डोठि, मूठ टोना। थापक नव-नाथ चौरासी सिद्ध के सराप डाइनि योगिनी, चूरइलि, भूत, व्याधि, परि अर, जेजत, भनै गोरख बैन साच, प्रगट रे बिलडकाली ओं। भैरव की हाँक फुरो, ईश्वरी वाचा ॥ छू ॥

(३) ओम ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा। परबत हंस, परबत स्वामी। आत्म-रक्षा सदा भबेत। नव-नाथ, चौरासी सिद्धया की दुहाई। हाथ में भूत, पाँव में भूत। भभूत मेरा धारण माथे राखो। अनाउ की जोत, सबका करो सिङ्गार। गुरू की शक्ती, मेरी भक्ती। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। दुहाई भैरव की ॥

विधि : रोगी को उक्त मन्त्र पढ़कर मोर-पङ्ख से झारे और भस्म को अभि-मन्त्रित कर ताबीज बनाकर गले में धारण करे। भूत-बाधा नष्ट होगी।

(४) ओम नमो आदेश। गुरू का धरती में बैठाया, लोहे का पिण्ड राख लगाया। गुरू गोरखनाथ आवन्ता, जावन्ता, धावन्ता। हाँक देता धार-धार, मार-मार। शब्द साँचा, फुरो वाचा ॥

विधि : मृग-चर्म पर बैठकर उक्त मन्त्र से खीर की १०८ आहुतियाँ ३ दिन देने से घर के सभी ग्रह-भूत-उपद्रवों की शान्ति होती है।

विशेष : श्वेत अपराजिता के मूल का चूर्ण करके नीम के पत्ते के रस में मिलाकर उसका नस्य दे, अथवा श्वेत अपराजिता-मूल के चूर्ण में निम्ब-पत्र की भावना देकर उसको सुखाकर नस्य करे। इससे डाकिनी, पितृ, ब्रह्म-राक्षस, ग्रहों से मुक्ति मिलती है।

५. स्वामी-मन्त्र-प्रयोग (कर्नाटकी मन्त्र)

ओम नमो भगवते। नरक पलानु नरक डरि भक्षणिस्दे पारुणि। सोल्लापुरद महा - लक्ष्मि कञ्चि कामाक्षि विष्णु - रूपिणी। महेश्वरी तान्त्रि, खड्गकोकि कोपादेवि कालुर्गन कट्टुवे जट्टिगन कट्टुवे। डाकिनियरं कट्टुवे। शाकिनियरं कट्टुवे। मोहिनि कट्टुवे। अहः सरं कट्टुवे अखत्तारू कोटि। ब्रह्म - राक्षसं कट्टुवे। हवितन्तु कोटि नव-नाथ सिद्धरं कट्टुवे। इप्तेलु कोटि मरूल तण्डनं कट्टुवे। इप्तेटु कोटि। बलिसमहा-कालियरनं कट्टुवे परमेश्वरनु त्रिपुरान्तक के होगुवा कामं सुट्टु भस्ममं माडिदल्लि। ई मन्त्रभं ग्रह राक्षस स्वामि गलु। एनगे कोट्हरू। ई मन्त्रमं करूणिसि। करूणिसि। ग्रह-वश। अनन्त कोटि भूत-प्रेत-पिशाची, ग्रह-राक्षस स्वामि गलु। एनमे कोट्टरे ई मन्त्र एलु एलु। बैरे मन्त्रि-सिद्धरे। जन-वश राज - वश, सर्व - वश। ब्रह्म-राक्षसस बिहु। अडिदरे श्री नम्म रेवण सिद्धेश्वरन श्रीपाद-दाणि ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा॥

विधि : दक्षिण भारत में भूत - चिकित्सक 'रेवण सिद्धेश्वर प्रयोग' के नाम से उक्त मन्त्र की साधना करते हैं। साधकों की जानकारी के लिए यहाँ इस रहस्य-मय मन्त्र को दिया है। इस मन्त्र को सूर्य, चन्द्र-ग्रहण-काल में स्नानादि से शुद्ध होकर नदी में नाभि-पर्यन्त जल में स्थिर रहकर जाती - पुष्प से १०८ बार जप करना चाहिए। इससे मन्त्र-सिद्धि होगी। तब प्रयोग करे।

प्रयोग-विधि : सभी प्रकार की ग्रह-शान्ति के लिए उक्त मन्त्र का २१ बार पाठ करना चाहिए। दिग्-बन्धन के लिए तथा सर्व-वशी-करण के लिए ७ बार जाती-पुष्प को अभि - मन्त्रित कर अपने पास रखना चाहिए। यह मन्त्र सर्व-श्रेष्ठ और उत्तम है।

कल्याणकारी शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' श्री गोपाललाल बिस्सा
एस. बी. बी. जे. बैङ्क, देशनोक, बीकानेर (राजस्थान)

१. इच्छित कार्य में सफलता-दायक शाबर-मन्त्र

ॐ कामरू देश, कामाक्षा देवी, जहाँ बसे लक्ष्मी महारानी। आवे, घर में जमकर बैठे। सिद्ध होय, मेरा काज सुधारे। जो चाहूँ, सो होय। ॐ ह्लीं ह्लीं ह्लीं फट्।

विधि : उक्त मन्त्र का जप रात्रि-काल में करे। ग्यारह दिनों के जप के पश्चात् ११ नारियलों का हवन करे। इच्छित कार्य में सफलता निश्चित मिलती है।

२. अर्थ-लाभादि हेतु शाबर-मन्त्र

ॐ ह्लीं खौं छौं ठौं श्रीं फ्रौं ह्लीं।

विधि : शुक्लाष्टमी के दिन उक्त मन्त्र का १०८ बार कनेर पुष्प-माला पर जप करे। फिर उस माला को श्रीजगदम्बा को अर्पित करे। इससे आजन्म शुभता, प्रति-दिन अर्थ-लाभ एवं सर्व-अरिष्टों का नाश होता है।

उपयोगी प्रकाशन

हिन्दुओं की पोथी	२५.००
वर्ण-बीजाक्षर-साधना	४०.००
भैरवोपदेश	१००.००
अनुभूत साधना	२५.००
बीजात्मक सप्तशती	२५.००
श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र	२५.००
दीक्षा-प्रकाश	३५.००
साधना-रहस्य	६०.००
स्वर-विज्ञान	७५.००
मन्त्र-कोष	३००.००
सचित्र मुद्राएँ एवं उपचार	३०.००
श्रीबगला-साधना, पुष्प १	६०.००
नव-ग्रह-साधना	१००.००
महा-पर्व नवरात्र-विशेषांक	१००.००
महा-पर्व दीपावली-विशेषांक	४५.००
सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०.००
श्री श्रीविद्या-साधना, पुष्प १ से ५	२००.००
श्रीयन्त्र-रहस्य	२०.००
विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती)	४५.००
सप्तशती के विविध प्रकार	२५.००
श्रीबाला-कल्पतरु	३५.००
श्रीसूक्त-विधान	३५.००
श्रीरमा-पारायण	३५.००
श्रीकमला-कल्पतरु, पुष्प १ से ३	१२०.००
श्रीदुर्गा-साधना, पुष्प १ व २	५५.००
मन्त्र-कल्पतरु, पुष्प १ व २	७०.००

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज - २११००६